401

"जम्मू-कश्मीर स्टेट के राजौरी नगर का खूनी इतिहास"

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी ...)
क्रमांक ... 401

शहीदों की धरती रामपुर राजौरी नगर का खूनी इतिहास

1947-1965

लेखक : श्री पिशोरी लाल गुप्ता
("जन्जोटीया")
राजौरी-जम्मू

28

॥ जय श्री राम ॥

रामपुर राजौरी जिसको ज्यादातर अब राजौरीं ही कहा जाने और लिखा जाने लगा है। इतिहास पुंछ, राजौरी में जो के अब मिल रहा है। रिकार्ड मेहकमा माल में रामपुर या रामपुर राजौरी नाम ही चला आता है। यह बहुत पुराना (तारीखी) कस्बा है। मुगलों के समय के खण्डर कस्बे में अब तक मिलते हैं और कस्बे के नजदीक या दूर मुगलों की बनाई हुई सराओं के कुछ भाग पूरी दिशा में और कुछ खण्डर के रुप में दिखाई देते है। पुंछ के इतिहास से पता चलता है कि राजौरी की भूमि ने बहुत सी कठिनाइयों का सामना किया।

प्राचीन काल से ही नगर में हिन्दुओं की आबादी दूसरे लोगों से अधिक रही है। बंदा वीर वारागी की जन्म भूमि होने का गर्व राजौरी को प्राप्त है। यहां की भूमि बहुत उपजाऊ है। चावल और मक्की सबसे ज्यादा यहां पर होती है। प्राचीन काल से ही जिस किसी शक्तिशाली राजा की नजर इस भूमि पर पड़ी। उसका का मन हसको अपने राज्य में शामिल करने के लिए प्ररेणा देता था और इस को प्राप्त करने की कोशिश करता रहा। उस समय यहां छोटे-२ राज्य मुस्लिम जराल जाति के होते थे। शहर में दोनों ओर दरिया बहते हैं, जो वर्षा के मौसम में अपनी सीमा को पार कर के आगे निकल जाते है।

कभी-२ साथ लगने वाली धरती की उपजाऊ मिट्टी को बहा ले जाते है। बाकी समय में नदियों के पानी का बहाव कम होता है। नगर की पूर्व उत्तर दिशा से जो नाले आते है। उनमें से एक थन्ना मंडी से और दूसरा दरहाल मलकां से आता है और दरहाली तवी के नाम से जाना जाता है। नगर की दूसरी ओर जो दरिया बहते है उसे तवी के नाम से जाना जाता है जो कि त्रिजी की ओर से आते है।

इन दोनों नदियों से छोटी-2 नहरे निकाल कर चावल पैदा किये जाते है। इन दोनों नदियों के बीच में नगर को पूर्व दिशा में एक बहुत प्राचीन मंदिर है जिसका निर्माण डोगरा राजा, राजा हाडू ने किया था।

इस मंदिर के साथ राजा ने बहुत सी उपजाऊ भूमि मन्दिर के नाम कर दी थी। इस भूमि की आय से मन्दिर की देखभाल की जाती है। दरिया तवी के किनारे एक प्राचीन शिवजी का मन्दिर है और वहां पर बहुत सी इमारतें बनी हुई है। नगर के बीच में दो नए मन्दिर जिनको नगर के स्व: लाला मोहन लाल जी सराफ ने अपने पूरखों की याद में बनाया है और इसकी देखभाल के लिये लाखो रूपयों की भूमि लगाए हुई है। इसके इलावा उन्होंने एक धर्मशाला भी बनवाई हुई है। इस सारी सम्पति की देशभाल का काम उसी परिवार के योग्य श्री अमर नाथ जी सराफ कर रहे है।

सराफ साहन भी धार्मिक त्याहारों मे दिलचस्पी रखते है। राम नवमी और जन्म-अष्टमी के पावन त्यहारों में शामिल होने के लिये वह कितनी दूरी पर भी हो राजौरी पहुंचते है। उनके बुजुर्ग लाला मोहन लाल जी सराफ के बारे में कहा जाता है कि एक दिन वह कही शहर से बाहर गये हुये थे। जब वह वापस आये तो पूरा बाजार बन्द था। तो किसी से उन्होंने पुछा कि बाजार क्यों बन्द है। तो उनको बताया गया कि शहर में चोरी हुई थी और सब बाजारवालों को पुलिस ने थाने ने ले जाकर बिठाया तो वह सीधे थाने में चले गये और पुलिसवालों से पूछा कि आपका कौन मर गया जो यह सब लोग अफसोस के लिये यहां बैठे है। साथ में यह भी कहा कि आपको इतना पता नही कि यह शहर के लोग चोरियां नहीं करते। इतना कहते ही सब को छोड़ दिया।

इसका लिखने का भाव यह है कि उस समय में अपने नगर में उनकी कितनी मान्यता थी। राजौरी नगर में और भी धार्मिक स्थान है। नगर के उत्तरी भाग में थन्ना मंडी और दरार मलिका के प्रसिद्ध मुसलमानों की घनी आबादी वाले गांव है। नुरी छुम्ब और शाहदरा के खानीका देखने योग्य स्थान है। थन्ना मंडी में कंगिया, चम्चे और खडाऊ चिखड़ी की लकड़ी से बनती है। वहां पर ज्यादा आबादी मुसलमान गुज्जर और कश्मीरी बसते हैं। वहां से अलियाब द से होते हुये पंदल रास्ता बर्फानी और जंगलात से भरे पहाड़ों से शुपैइया (कश्मीर) जा मिलता है। जिसको मुगल रोड़ के नाम से जाना जाता है। गांव दराहाल मुसलमान मलको की ज्यादा आबादी है।

थोड़े से मुसलमान गुज्जर और कश्मीरी भी है। थन्ना मंडी में एक प्रसिद्ध शिवजी का मन्दिर है जो इस समय तक भी मौजूद है। १९४7 से पूर्व थन्ना मण्डी में हिन्दुओं की ज्यादा आबादी थी।

वहां एक आर० एस० एस० की अच्छी सख्या वाली शाखा थी। उस शाखा में श्री प्रेम चन्द जी मल्होत्रा काम-काज देखते थे। बाद में वहां कोई भी हिन्दू आबाद नही हो सका। इसलिये १९६५ में मन्दिर में जो मुर्तियां स्थापित थी। उनको शरारती मुसलमानों ने तोड़ डाला। अब सिर्फ वहां मंदिर का ढांचा ही है। इसी तरह दरहाल गांव के उत्तरी भाग में नाला से एक छोटी नहर उजयान से निकालकर किनाडनीतार के दामन से बिजली पैदा की गई है। इसके बाकी पानी से बहुत सी जमीन मक्की पैदा करने के लिये तैयार की गई है किलेडनीदार राजौरी नगर से पूर्व की तरफ पहाडी पर डोगरा महाराजगान ने अपने समय में बनवाया था जो अब मिलट्री के हवाले हैं। इसी तरह राजौरी नगर के पूर्व की ओर बुधल और कंडी के गांव स्थित हैं। अब जहां मोटर रोड और बांध बन चुके है। जम्मू और राजौरी के पुल से कई बसें आती जाती है। अब बुधल से आगे सुगंडी से होते हुये महोरा तक चलती है। अब माहोर से आगे रामबान तक बनाई जा रही है। १९४7 से पूर्व बुधल में हिन्दुओं और सिखों की पुरी आबादी थी और वह लोग मेहमानदारी में प्रसिद्ध थे। उस समय वहां से हिन्दू लोग जो आगे पीछे निकल गये वह सब बच गये। जो लोग वहां टिके रहे वहां एक बहुत बड़ा गुरूदारा था। उसमें इकट्ठे हो गये। जब मुसलमानों का जत्था आया तो उस गुरूदारे की इमारत को आग लगा दी और सब को वहां जला दिया। उनमें सिर्फ एक केशधारी बच्चा बचा था उनकी यह कुर्बानी रहती दुनिया तक अपने दिलों में याद रखेगी। अब उस कस्बे का नाम बुधल की जगह राजनगर रखा गया अब उसको तहसील का दर्जा दिया गया। वहां ज्यादातर सावाधी और अखरोट मिलते हैं सारी तहसील में हिन्दू राजपूत भी बसते हैं और उनका पेशा जमींदारी और कुश्ती लड़ना है। अब रजौरी नगर के पश्चिम की तरफ के इलाके को रामगड का नाम दिया है यहां से भी एक नाला निकलता है जो रजौरी नगर के पास आकर दरहाली तवी में मिल जाता है। इसको भी तवी के नाम से जाता है। इस पूरी पटी में हिन्दू की बहुत थोडी आबादी है और यह कायां के ग्राम से लेकर बी जी तक पाकिस्तान के बार्डर के निकट है। और रजौरो से बालाकोट तवी नाला के साथ-साथ गुजरती हुई मैंडर पुछ और बुढा अमरनाथ और उससे आगे लोरन और सबजीयां तक जाती है

बीजी की ऊचांई सात हज़ार फुट है और सर्दीयों में बर्फ मे ढकी रहनी है। यहां से (तहसील) मेंडर की वेली नज़र आती है जिसका जलवायु और फल कश्मीर से मिलती है। वहां की भूमि बहुत उपजाऊ है। मेंडर, मडी और हरनी में हिन्दू की आबादी ज्यादा है। बाकी गांवों और बाडर के भागों में मुसलमों की घनी आबादी है। हरनी का गांव जिसके लिए अपने इसिहास से पता चलता है कि लक्षमण दास डोगरा जिसका जन्म रजौरी में हुआ था। वह एक दिन उसी हरनी के उस जगल में शिकार खेलने के लिए गया था। हिरनी का शिकार किया तो उसके पेट से दो बच्चे निकले जिन्हें तड़पता देखकर उनका मन बहुत दुःखी हुआ। उन्होंने घर बार त्याग दिया और अपना जीवन एक वैरांग की तरह गुज़ारना शुरू किया। कुछ समय रियासी के निकट गुजारा जहां अब भी उनकी याद में मेला लगता है। रजौरी में भी उनकी याद में श्री मोहनलाल मोतीलाल रजौरी निवासी ने ठाकुर द्वारा बनवोया है। इसके बाद वह नदेड़ साहब के जंगल में भक्ति करने लगे। उस समय अपने देश में मुगलों का राज्य था। गुरुगोविन्द सिंह जी मुगलों के अत्याचारों को देखकर लड़ रहे थे। उनके दो बड़े बेटे अजीतसिंह और जोरावरसिंह जो चुभकोर साहब की लड़ाई मे शहीद हो गये थे। उनके दोनों छोटे बच्चे फतेसिंह और जोरावर सिंह सिरहिन्द मे मुगलों के द्वारा जिन्दा दीवारों में चुनवाये गये थे।

अब लक्ष्मण दास डोगरा जो अपना नाम बदलकर माधव दास के नाम से पुकारा जाता था अब नदेड़ साहब में भक्ति कर रहा था। गुरु गोविन्द साहब जी अब उनसे मिले और उनको पंजाब की पूरी स्थिति की जानकारी दी और साथ ही उनको यह आज्ञा दी कि इस समय पजाब में हिन्दू की बहुत बुरी स्थिति है। आप यहां भक्ती मे लगे हैं। उनको अपनी तलवार और एक करपान दी उनका नाम बदलकर माधवदास से बन्दा बहादुर रखा उनको पंजाब में जाकर हिन्दू धर्म की रक्षा करने की आज्ञा दी।

रियासी के निकट इनके नाम से जहां मेला लगता है उस गुरुद्वारे का नाम भी बन्दाबहादुर है इसके बाद बन्दाबहादुर अपनी भक्ती को त्याग कर पजाब में जाकर एक बहुत बड़ी हिन्दू और सिक्खों की बड़ी शक्ति शाली फौज तैयार की। उसी फौज के द्वारा गुरुपुत्रो के बंद का बदला सिरहंद में वहां के नवाब से लिया। पंजाब का बहुत सा हिस्सा अपने अधीन

किया जिधर भी उनकी फौज जाती थी तो मुसलमान लोग यह कहते हुए कांपते थे। कि इनकी फौज में भूतों जैसी शक्ति है इस लिए वह मुकावला करना भूल कर एक ओर भाग जाते थे, अत मे उनकी फौज से कुछ लोग साथ छोड गए वाकी की सेना मुगलों से लड़ते हुए हार गयी। वन्दावहादुर को पिंजरे में वन्द करके और उनकी सेना को रस्सियों से वांध कर दिल्ली ले जाया गया।

उस समय की हकूमत तो मुगलों की थी। पहले उन सबकों मुसलमान वनने के लिए कहा गया। इससे सैनिको ने इंकार किया। इसके वाद चार छ; सैनिको को एक दिन मे घोड़ों और हाथियों के पावों के साथ वन्धवां कर मार दिया करते थे। अन्त में एक दिन जव वन्दा वीर वहादुर अकेले रह गए तो उनके वच्चे को मार कर उसका कलेजा उनके मुहं पर मारा। इस तरह उनका दिल दुखी करके उनकी जिन्दगी समाप्त कर दी गई। सिक्खो के छठे गुरु महाराज कशमीर से दिल्ली जाते हुए थन्ना मण्डी के रास्ते रजौरी में आकर रहे उनकी याद में वहां नगर में एक वहुत वड़ा गुरुद्वारा वना हुआ है जिसको छठी वादशाही गुरुद्वारा कहा जाता है।

रजौरी नगर वहुत समय पहले से ही हिन्दू की आवादी थी। जिन की संख्या लगभग पांच, छ; हजार के वीच थी। यहां के लोग वड़े शरीफ और धार्मिक विचारों वाले थे। उनका जीवन निर्वाह, जमीन की आमदन, साहूकारी और और मामूली व्यापार से होता था। जैसे२ हालात वदलते गए वाहर के हिन्दू भी नगर में आकर रहने लगे। नगर का व्यापार पहले से कुछ वेहतर होने लगा और वाहर वालो के हाथ में था।

नगर वासियों में से कुछ आदरनीय परिवारों में से कुछ नाम आज के नवयुवको की जानकारी के लिए लिखे जा रहें हैं।

1 श्री विहारी लाल जी मोदी (पंच)
2 श्री जगत राम जी मोदी
3 श्री मुकन्द लाल जी मोदी
4 श्री दीना नाथ जी मोदी
5 श्री हाकम चन्द जी मोदी (सपुत्र श्री मनी राम जी मोदी)

6 बोद्धराज जी मोदी
7 श्री धनी राम जी मोदी
8 श्री भक्त राम जी मोदी
9 श्री मंगा राम जी सोदी
10 श्री मक्खन लाल जी मोदी
11 श्री मोहन लाल जी मोदी
12 श्री कान चन्द जी मोदी
13 श्री हाकम चन्द जी मोदी
14 महाशय दीना नाथ जी मोदी
15 श्री ओम प्रकाश जी मोदी
16 श्री प्रेम प्रकाश जी मोदी

1 श्री मनी राम जी सराफ
2 श्री भगत राम जी सराफ
3 श्री सन्त राम जी सराफ
4 श्री बिहारी लाल जी सराफ
श्री मनोहर लाल जी सराफ
6 श्री जिया लाल जी सराफ
7 श्री बोध राज जी सराफ
8 श्री ओम प्रकाश जी सराफ (सपुत्र श्री सन्त राम जी सराफ)

1 श्री किशन दास जी शाह
2 श्री मोती राम जी शाह
3 लाला अमी चंद जी शाह
4 श्री जिया लाल जी शाह
5 श्री धुनी चन्द जी शाह
6 श्री दुर्गा दास जी शाह
7 श्री सतपाल जी शाह
8 डाक्टर नानक चन्द
9 श्री देसराज जी शाह
10 डाक्टर श्री जिंद सरन जी
11 श्री अमर चन्द जी शाह

12 श्री मास्टर विहारी लाल जी शाह
13 श्री बोध राज जी शाह [रिटार्ड चीफ कंसरवेटर)
1 श्री दुर्गदास जी चोगा
2 श्री कुलदीप राज जी चोमा
3 श्री ओमकार नाथ जी चोगा
4 श्री रविन्द्र नाथ जी चोगा
5 लाला नन्दलाल जी चोगा
6 लाला मनी लाल जी चोगा
7 लाला मोहन लाल जी चोगा
8 श्री मुल्क राज जी चोगा
9 श्री जिया लाल जी चोगा
10 श्री ओम प्रकाश जी चोगा
11 लाला भाला राम जी चोगा
12 श्री मुकन्द लाल जी चोगा
13 श्री मोहन लाल जी चोगा
14 श्री भगत राम जी चोगा
15 श्री बोद्ध राज जी चोगा
16 श्री मदन लाल जी चोगा
17 श्री बिहारी लाल जी चोगा

1 श्री राम चन्द जी कगाल
2 मास्टर हाकम चन्द जी कंगाल
3 श्री दीना नाथ जी कंगाल
4 श्री भगवान दास जी कंगाल
5 मास्टर जिया लाल जी कंगाल
6 श्री बम्सी लाल जी कंगाल
7 श्री मोहन लॉल जी कंगाल
8 श्री अमृत लाल जी कंगाल
9 श्री बिहारी लाल जी कंगाल
10 श्री बिशम्बर जी कंगाल और कर्ण कुमार जी कंगाल
11 श्री भगत राम जी कंगाल

12 श्री दुर्गा दास जी कंगाल
13 श्री बोढ राज जी कंगाल
14 श्री मंगा राम जी कंगाल
15 श्री सुरेन्द्र पाल जी कंगाल
16 श्री लक्ष्मण दास जी कंगाल
17 श्री वेद प्रकाश जी कंगाल
18 श्री निर्मल कुमार जी कंगाल

1 श्री ठाकुर दास कृपा राम निर्मल कुमार जी चुगा
2 महाशय फकीर चन्द जी मोदी
महाशय सन्त राम जी मोदी
3 प्रोफेसर शान्ति प्रकाश
4 प्रोफेसर विजय प्रकाश

1 श्री लाला बेली राम जी कंगाल
2 श्री बिशन दास जी कंगाल
3 श्री रूप लाल जी कंगाल
4 श्री जगत राम जी कंगाल
5 श्री सीता राम जी कंगाल
6 श्री जिया लाल जी कंगाल

श्री सन्त राम सीता राम (जन्जोटीया)
श्री मंगा राम चुनी लाल (जन्जोटीया)
डाक्टर रविन्द्र नाथ (B.M.O.)
मेहता जगत सिंह जागीरदार
श्री हरबंस लाल जी मेहता
श्री देवराज जी मेहता
श्री राज प्रकाश जी मेहता
श्री ओम प्रकाश जी मेहता
श्री दुर्ग दास जी रोहतडा
श्री नेत्र प्रकाश जी रोहतडा
श्री दीना नाथ जी रोहतडा
श्री कुलदीप राज जी रोहतडा

श्री अमरनाथ जी रौताड़
श्री जिया लाल जी रौतड़ा
श्री बोद्ध राज जी रोतड़ा
श्री राम चन्द जी चिटयारवाले
श्री दुर्गा दास जी
श्री बिहारी लाल जी
श्री बोध राज जी
श्री सुरेन्द्रपाल जी चिंटयारवाले

श्री दीनानाथ, लक्षमण दास दरार वाले श्री लक्षमण दास सावनमल बोधराज दरारवाले, श्री रामलाल गौरीशंकर सेठी दरारवाले, मास्टर विशनदास जी अरजी-नबिस श्री धनी राम (Pelitioner) महाशय ईरदास ओम प्रकाश कोटीली वाला। श्री गंगाराम' जगन नाथ जी कंगाल (नौशहर) वाले श्री अमर नाथ, श्री मुकन्द राज ,मुलक राज जी और श्री जिया लाल और कुलदीप राज श्री सतपाल श्री जगदीश राज (अनरूठ वाले)

श्री गोविन्द साहब जी चोगा, श्री अमरनाथ, श्री चुनी लाल जी चोगा श्री बोध राज और जिया लाल जी चोगा (फतेपोर वाले) श्री लक्षमण दास जिंया लाल अमर नाथ, बोध राज जी लंगर (नेलीवाले) श्री भगत राम जी केहला, श्री दीनानाथ केहला' श्री सोहन लाल जी केहला, श्री अन्त राम जी केहला, श्री जियालाल जी केहला, श्री बन्सी लाल जी केहला, श्री ब्रज मोहन जी केहला, श्री नर सिंह दास जी डा० वीरेन्द्र केहला (बकील) श्री किंकरसिंह और पंजाब सिंह और साई दास (मेहता)।

सरदार ठाकुर सिंह, सरदार काहन सिंह, जागीर सिंह, ज्ञानी साहब सिंह, श्री तारा चन्द जी (थनावाले) श्री राम दास जी, श्री जगदीश राय जी (थना वाले श्री मोहन लाल लक्षमी चन्द, मुलक राज, श्री अमृन लाल जी (रौतड़ा) श्री प्रेम चन्द जी मलहौने श्री प्रेम नाथ जी बजाज, श्री लक्षमी चन्द जी भल्ला, श्री कुलदीप राज जी बुकिंग कलरक, श्री चुनी लाल अन्नत राम जी थना निवासी, श्री दीना नाथ, बन्सी लाल, वीरबल जी हलवाई श्री रुप लाल, लाल चन्द बारबर, श्री तेज राम, बन्सी लाल होटलवाले, श्री मनी राम, कृष्ण लाल (रहकी बांद) मंगल लखन राय, ओम प्रकाश भक्त वाले जी चोगा, लाला मोहन लाल, दुर्गा दास, ईश्र दास, कृष्ण लाल (बरोड़ अडत) श्री

श्री कृष्ण चन्द्र, चन्द्र प्रकाश जी सपुत्र श्री हाकम चन्द जी मोदी, श्री रखेल सिंह, बन्सी लाल, शन्ति प्रकाश, नाथ राम, श्री जगत सिंह, मोहन लाल, ठाकुर दास, हाकम सिंह बिहारी लाल (नडियाला वाले)।

श्री राम चन्द, जगदीश राय, मंगत राम (नडिया वाले) श्री जगत राम, मकन्द लाल बिहारी लाल, जगदीश राय जी मोदी श्री साई दास, मोहन लाल, इश्वर दास जी (साऊनी वाले) श्री भगत राम, सन्त राम इदर जीत जी (धरमा बाले) श्रीगुडू-मल कृष्ण लाल, श्री इन्द्र जीत, ज्योति प्रकाश (गरिनाल) महाशय साईं दास जी, चोगा श्री हर्ि सरन शाह जी, पंडित सुन्दरदास जी, मास्टर द्वारिका नाथ जी, मास्टर प० सीता राम रघुनाथ दास जी, मास्टर दौलत राम जी, मास्टर मोती राम जी, मास्टह सायन दास जी शर्मा, श्री पिशौरी लाल जी माथुर, सरदार रलील सिंह जी (शहदरा-वाले) पडित शक्रिका प्रसाद, पंडित गौरी शंकर, पडित द्वारिका नाथ, पंडित वैजनाथ जी, श्री बालाराम, मुकन्द लाल, जगदीश राज, चरण जीत लाल' सतपाल जी (चिगस वाले) श्री सावन मल, मोती लाल जी (गुलहोती वाले) श्री कस्तूरी लाल, परस राम जी (गुलहोती वाले) श्री चुनी लाल, पिशौरी लाल, जगदीश राज जी (संगयोट बाले) श्री आनन्द स्वरुप जी बकील आतम स्वरूप जी खन्ना (लाहौर कराची वाले हकीम रूप चन्द, पृथ्वी राज जी, श्री परस राम, त्रिलोक नाथ (नौशहरा वाले) श्री लाल चन्द, कृष्ण लाल रजौरी वाले लाल चन्द चुनी लाल बद्री नाथ नौशहरा वाले श्री चुनी लाल जो नसवारवाले) श्री लाल चन्द जी कंगाल (समकर वाले) श्री बाबा ओम जी, गोस्वामी गोपाल कृष्ण जी, श्री कृपा राम, दीवान चन्द जी सर्वणकार, श्री दुर्गा दास कर्मचन्द जी चोगा।

श्री मनी राम, कृष्ण लाल, जिया लाल जी (देहरियां वाले) बाहरी कृष्ण लाल जी (सुहावना वाले) श्री जिया लाल, हंस राज जी (चिटयाड वाले) श्री अमर नाथ, द्वारिका नाथ, कृष्ण लाल, रघुवीर चन्द जी सपुत्र जगत राम जी मोदी, श्री अमर नाथ ज्योति प्रकाश जी चोगा (गोवरदन बाले) श्री देवन्द्र कष्णा जी शास्त्री संग प्रचारक।

रजौरी का पूर्व इतिहास जो मिलता है। उससे यह पाया जाता हैं कि हर पन्द्रह बर्ष के बाद ग्रामों के मुसलमान शहर मे आते थे, लूटमार कर चले जाते थे।

1988 विक्रमी में हिन्दू मुस्लिम फसाद हुये थे उस समय मै आठ साल का था। अपने गांवों जंजोट केदो से उजड़ कर अपने परिवार के साथ पैदल चल कर तीसरे दिन रजौरी अपना फुफी जी के घर पहुचे थे दरहाल मालिका से उजड़ कर रजौरी आये हुये थे। इस तरह पूरी जम्मू कश्मीर State मे जहां हिन्दू की आबादी कम थी, वहाँ फसाद हुये. उसमे लूटमार और मकानों को जलाया गया। तो फिर 18 दिन के बाद हमारा परिवार रजौरी से निशहारा आये और तीन साल वहीं पर रहे इसी बीच मे महाराजा हरि सिंह की फौजे लूटमार वाले गांवों मे पहुची और उस फौज के द्वारा जले हुये मकानों की मरम्मत और लूट का कुछ माल दिलवाया गया! फिर 1997 विक्रमी तक वहां पर ही रहे, फिर उसके बाद रजौरी आ गये। वहां पर ही बसे और इसी के बाद सन् 1947 ई० में मेरे माता-पिता मारे गये। पिता जी को एक मुसलमान लडके ने छद्दहारा के वन में मारा और माता जी ने फोलयाना के मुसलमानों के मकानों से छलांग लगा कर जान दे दी। इसी तरह मेरे बड़े भाई और परिवार के सब सदस्य मारे गये। 1988 विक्रमी में रजौरी के हिन्दू मुस्लिम फसाद में क्या हुआ। रजौरी तहसील के मुसलमानों ने मिल कर रजौरी को लूटमार करने के लिए साथ वाली लड़ी के मैदान में जहां अब DIV सैना का हेडक्वाटर है इकट्ठे हुये, पर ईश्वर की कृपा से उसकी कुछ और इच्छा थी तो महाराजा हरिसिंह की सेना से रसीले के कुछ गुडसवार उसी मैदान में आ पहुचे उनके द्वारा जो हमलावार लोग थे भागने के लिए मजबूर हो गये' उनमे से कुछ लोग मारे गये इसके बाद का पन्द्रह सोलह साल का समय अच्छी प्रकार व्यतीत हुआ।

15 अगस्त 1947 का मनहूस दिन आ पहुंचा। जहां भी हिन्दू की आबादी कम थी उनके खिलाफ मनसूबे बनने आरम्भ हुये। । ग्राम ग्राम से हिन्दू लोगों का भाग कर नगर में आना शुरु हुआ। नगर का मुसलमान भाग कर साथ वाले जंगलों में और गांवों में चला गया। इसी बीच में बाहर के हिन्दू को लूट लिया और मार दिया, नगर में मुसलमान और हिन्दू जिनको पंच कहा जाता था, मिल कर एक अमन कमेटी बनाई गई। जिसमें यह तय पाया कि अगर बाहिर से हिन्दू या मुसलमानों की तरफ से हमला हुआ तो दोनों फिर से मिल कर उसका मुकाबला करें। लेकिन अंत में मुसलमानों में उसके विरोध किय पूरी रजौरी तहसील में नगर की रक्षा के लिए एक मुकामी पुलिस स्टेशन और 19 मिलिट्री के Untrained सैनिक अपने एक नाईक के साथ थे। जिनकी Duty खजाने पर थी। थाकने में पाच पेटी अमीनेशन था जिसके लिए नगर के R.S.S. के worker ने वह अमीनेशन देने के

लिए मांग की। जिससे S.H.O. ने इंकार कर दिया। फिर यू और हालात विगड़े तो महाराजा हरिसिह ने एक छोटी गाड़ी में चालीस Retied सैनिक रजौरी वेजे इसी बीच में कोई हिन्दू नगर के वाहर मुसलमानों को मिल जाना। तो वह उसे कत्ल कर देते और भी कई किस्म की धमकियां मिलने लगी।

जम्मू में हिन्दू और मुसलमानों में टकराव शुरु हुआ, तो अखनूर से एक मुसलमान भाग कर रजौरी पहुंचा। वहां शुक्रवार को निमाज के समय मुसलमानों को हिन्दू के खिलाफ प्रचार शुरू किया, इससे पहले भी रजौरी में वहां के मुसलमानों के लिए यह खवर छोडी गई थी कि वहुत से मुसलमानों को हिन्दू ने कत्ल कर दिया और इससे माहौल खराव हो गया। इसको देखते हुए वहां के मुसलमानों ने जैसे भी हथियार वनवा सकते थे वनवा लिये। और नगर में जो छोटी मोटी तैयारी हिन्दू कर सकते थे कर लिये। इसी बीच में R S S. के Worker बहां के महौल को देखते हुए आते जाते रहे। जिन में श्री ऋषी कुमार जी कौशल और माखन लाल जी अमा और मुलराज जी मदहोक और दविन्द्र कृष्ण जी शास्त्री शामिल थे। यह सब R.S.S. के प्रचारक थे। इसी वीच में मेरे तायाजात भाई श्री मंगा राम चुनी चाल जी ने नौशहरा से एक मुसलमान के हाथ पत्र भेजा। यहां आकर हमारे परिवार को नवांशहर से रजोरी ले चले और मैं कुछ समान वाले घोड़े और खुद एक खच्चर पर सवार होकर नौशहरा पहुंचा। वहां से अनेक परिवार और कुछ समान लाद कर रजौरी की तरफ चल पड़े। नौशहरा से दो किलो मीटर वाहर आये थे। इतने में ही रजौरी से आई तार लेकर एक व्यक्ति भागते हुए मेरे पास पहुचे। जिस में लिखा था कि जम्मू से आने वाले Ration की गाडियों पर अमीनेशन संभाले और साथ ही यह भी लिखा था कि रजौरी से आपकी सहायता के लिए श्री जिया लाल जी रोहतडा और मास्टर तिलक राज जी कोटली वाले भेज रहे है। उनमें से जिया लाल जी अपनी मृत्यु से ईश्वर को प्यारे हो चुके थे। और मास्टर तिलक राज जी अव भी हमारे सहयोगी है।

शाम को जव Ration वाली गाड़ी पहुंची तो उनके पीछे भागते हुये हम तीनों नौशहरा छावनी में पहुंचे और मेरे साथ जो भाई साहव का परिवार था वह रजौरी पहुंचे। जव गाड़ी वाले से अमीनेशन के वारे में पूछा तो उन्होंने कहा की वहां वात तो चली थी लेकिन अमीनेशन किसी ने नहीं दिया। उससे हम तीनों का दिल टूट गया और हमारे लिये रजौरी पहुंचना मुश्किल था। इतने में सरदार लाल सिंह

फौजी अपनी Unit से छुट्टी लेकर अपने घर रजौरी जाने के लिये आ पहुंचा और उस से हमारा कुछ होसला बडा और शाम के वक्त चारों इकट्ठे रजौरी के लिए चल पड़े और हमारे साथ एक सवारी वाला खच्चर भी थी। जो थक जाता था वह उस पर सवारी कर लेता था। बाकी तीनों पैदल चलते थे, नौशहरा से रजौरी तक का रास्ता सुनसान था अगर कोई मुसलमान रास्ते में मिल जाता तो हम चारो हिन्दू को देखकर दूर से गुजर जाता। जब हम नोशहरा से चले थे तो वहाँ के लोग आपस में यह बातें करते थे, कि यह चारों जो जा रहें हैं। इनको कोई थोड़ी दूरी पर ही कत्ल करके खच्चर उनसे छीन लेगी। पर ईश्वर की और इच्छा थी।

रजौरी में भी सब घबराये हुये थे कि हमारा नौशहरा से रजौरी जिन्दा पहुचना मुशकिल है। क्योंकि श्री विहारी लाल जी जो नोडयाला से चल कर अकेले रजौरी आ रहे थे कि रास्ते में वहां के मुसलमानों ने रोक कर और मार पिटाई करके अपनी तरफ से उनको समाप्त करके चले गये थे। पर प्रभु कृपा से श्री विहारी लाल जी जो बहुत ही जख्मी थे। उन्होंने कपड़े से अपने शरीर को बांधा हुआ था और बहुत खून बह रहा था। किसी तरह रजौरी जा जिन्दा पहुंचे। इसी कारण हमारे लिये नगर में चर्चा थी कि अब वह सब जिन्दा नही पहुच सकेगे। रजौरी पहुंचने पर हम सब नगर के R. S. S. Workers श्री दीना नाथ जी केला नगर संगचालक के घर पर सभी बैठे और भयानक समय के विषय में सोच विचार कि अब हमें क्या करना है। इसी बीच में यह विचार हुआ कि श्री हरजी लाल तहसीलदार रजौरी से भी मिले तो फिर हम उनके पास जा बैठे। इसी बिषय पर बातचीत हुई। उन्होंने यह कहा कि मुझ से आपकी जितनी सहायता होंगी करूगां। मेरे खून का आखिरी कतरा भी हाजिर है। अब इसी रोज ही हमारे शहर के कुछ हिन्दु परिवार जिन में मेरे नजदीकी रिशतेदार भी थे। जम्मू जाने के लिए नगर से बाहिर मैदान मे निकल आये।

हम सब ने मिलकर उन्हें रोका और जाने नही दिया। सिर्फ एक व्यक्ति अकेला राजौरी से नौशहरा पहुंचा। बाकी हम वापस ले गये। उनको यह कहा कि आप के चले जाने से हमारी शक्ति कम हो जायेगी। अगर चलेंगे तो सभी इकटठे चलेगे और रहेंगे तो सभी सही रहेंगे और जो हमारी बैठक संघचालक जी के घर पर थी। उसमें गुप्त रूप ने यह तय हो गया कि निश्चित दिन रात के दो बजे हम यहां से चल पड़ेगे। नगर से दस किलोमीटर का रास्ता मुसलमानों के गांवों को पडता था। जो इस डर के मारे जंगलों में भागे थे।

राजौरी में 2000 संघ के workers हथियार बन्द मौजूद है। आगे हिन्दू गांव थे। वहां हिन्दु के जत्थे भी निकल हुए थे। हमारी योजना यह थी कि यानि अपने काफिले के बीच मे महिलाए और बच्चे रखेगे। उनके आगे पीछे फौजी जवान, और हथिहार बन्द गांवों से आये हुये नौजवान शहर के कार्यकर्ता रहेगे। हमारे पास ऐसे यन्त्र तैयार थे जिनके फैंकने से अग्नि प्रकट हो जाती थी। फौजी जवानों ने राजौरी नगर से श्री बिहारी लाल शर्मा और ज्योति प्रकाश गुप्ता और सरदार लाल सिंह गुरदन वाले जो घर छुट्टी पर आए हुए थे। अगर हमारा यह काफिला चलता तो सही सलामत जम्मू पहुंच सकता पर देश वीरों, महिलाओं और बच्चों की कुर्बानी मांग रहा था। वह बलिदान पुरा हुआ।

अपने ही नगर के श्री नरसिंह दास जी केहला (वकील) जो हमारे संघचालक जी के नजदीक ही थे और हम परेशान थे। इस विषय में बातचीत की तो श्री नरसिंह दास जी ने यह कहा कि हमारी नौजवान पत्नीयां और बेटीयां काफिले के साथ इतना लम्बा कठिन सफर पैदल कैसे चल सकेगे। हमारी जो यह काफिले की योजना थी वह टुट गई। इसकी घोषणा कर दी गई। शहर के सभी हिन्दु काफिले की शक्ल में चलने के लिये तैयार थे। मैंने भी एक घोडा खरीद कर उस पर रास्ते के लिये जरुरी समान लाद कर ले जाने की विवशता कर ली थी। लेकिन ना जाने के फैसले ने सब कुछ बदल दिया। यह कैसा गल्त फैसला था। जिस को रहती दुनिया तक हम सब भूल नही पायेगे। अन्त में 24 कीर्तिक २ 4 का सुर्य उदय हुआ यहां बाकी संसार के लिये वह जीवन की किरण ले के आया। वहाँ राजौरी वासियों के लिये मौत का सन्देश लाया। सवेरे १० बजे के करीब श्री तेजसम नामी एक सरकारी कर्मचारी जो नगर की तरफ गांवों से आ रहा था। राजौरी आधा मील पर मैन सड़क पर अबदुल गनी खोजा ने दिन दहाड़े कुलहाड़ी से कत्ल कर दिया और यह खबर नगर मे जंगल की आग की तरह फैल गई। सारे नगर के लोग काम-काज छोड़कर दुकाने बन्द करक घरों में चले गए। और दो बजे के बाद फिर खबर आई कि मेण्डर की तरफ से आता हुआ हिन्दुओं का एक काफिला रजौरी की तरफ आ रहा था। तो रास्ते में मुसलमानों ने रोक लिया है।

यह खबर उस काफिले में से एक हिन्दू भाग कर आया। जिसको साथ लेकर शहर के हिन्दू मेमबरान कमेटी मुसलमान अमन कमेटी के पास चले गए। उनके साथ इस विषय में जब बातचीत हुई तो उन्होंने कहा कि हम सब बेबस हैं हमारी

बात कोई भी मुसलमान नहीं मानता। और अब हम भी नगर छोड़कर गांवों में जा रहें हैं और वह चले गए। रात ही गई और 24 कार्तिक को सूरज निकला और उस दिन दिवाली थी। और लोगों ने व्रत रखे थे।

नगर में डरखोफ फैल गया। पहली गलती थी कि काफिले के सुरत में न निकलने की थी। दूसरी यह गलती सैनिक शक्ति को बाहर वाले मार्चे पर बिठाया जो अपनी शक्ति थी उसको नगर की गलियों के चोंकों में बिठाया। अपने नगर मे इतने जो योग्य हिन्दू हुये हैं जो अपना यह इतिहास बताता है। नगर में जब मुसलमानों का राज था, तो उस मुसलमान राजा ने एक हिन्दू पंडित को बुला कर पूछा कि ईद का चाँद कब नजर आयेगा तो उसने कहा कल नजर आयेगा। लेकिन कल नजर नहीं आया तो राजा ने उसको भुला कर पुछा कि आपने मुझ से धोखा किया इसलिए आप सजा भुगतने के लिए तैयार हो तो उस योग्य पंडित ने कहा कि बादशाह सलामत ऐसा नही है तो उस पंडित ने एक केहन की थाली को दो टुकड़े करके एक टुकड़ा आसमान की तरफ फैंका। जो ऊपर जाकर चांद नजर आने लगा। बादशाह चाँद को देखकर शर्मिन्दा हो गया।

इसी नगर में महता जगत सिंह व नबजी हकीम हुये है। उनके परिवार से २००४ विक्रमी में उनके परिवार से महता बल्वन्तसिह मौजूद थे तो इनके पास जो लोग दवाई के लिये आया करते थे। तो वह उस बिमार की नबज देखकर अपने पीछे वाली दिवार से जो वहा नीचे ही दिवार के साथ बैठा करते थे। हाथ पीछे करके दिवार से सफेद मिट्टी उतार कर उसी मिट्टी को हाथ से बारीक करके कागज में पुडिया बना कर देते थे। लोग उनसे रोग रहित हो जाते थे। तो उसी समय एक मुसलमान राजा ने हकीम जी को भुलाकर यह कहां कि हमारी बेगम बीमार हैं। लेकिन हम उसकी बाजू का नबज नही देखने देगे लेकिन आपको दवाई देनी होगी। तो हकीम जी ने कहा कि एक गोली का धागा बेगम जी के नबज के साथ बांध दें और मैं बाहर बैठकर उस धागे को पकड़ कर बिमारी समझ कर दवाई दूगां।

परन्तु उस चलाक राजा ने वह धागा बिल्ली की टांग के साथ बांध लिया तो तो मेहता जी ने कहा कि इसको मास और छिचडे खिलाओं वह ठीक हो जाएगी।

दूसरी अजमाईश में उसी राजा ने एक भैंस का पेशाब बर्तन में डालकर दिखाया तो वह मरीज का पेशाब देखकर दवाई दिया करते थे । और लोग ठीक हो जाते थे । यह पेशाब देखकर उन्होंने कहा कि इस मरीज को सरसों की खल और बिनौले खिला दें । यह ठीक हो जाएगा । जिस नगर में इतने योग्य इन्सान हुए । वहां हम सब भी पैदा हुए थे । और वायुजल से पले और फले फूले परन्तु यह दो बड़ी गलतियां करके इतनी हानि उठाई जिनको कभी भी पुरा न कर सकेंगे ।

सैनिक शक्ति का एक मोर्चे मेरे घर में जो नगर के दक्षिणी कोने में आखिरी मुकाम था । पांच गोरखे आये और उनको मोर्चा बना देकर मैं दुसरे अन्दर वाले मोर्चे पर चला गया और फिर वापस घर नही पहुंचा । दुसरे मोर्चे सरदार ठाकुर सिंह के मकानों में नगर की पूर्वी उत्तरी कोने में थे बनाये गये और जो दूसरे डोगरी सैनिक थे वह वहां चले गये । वक्त शाम चार पांच बजे का हो गया और उस समय जय घोश जो मुसलमान की ओर से लगाये जा रहे थे सुनाई देने लगे ।

नगर मे हाहाकार मच गया । नगर में ऐसी घोषणा कर रखी थी कि जब यह यकीन हो जायेगा कि बाहिर से हमला हो गया तो हम एक बिगुल बजायेंगे । समझ लिया जाये कि हमला हो गया और बिगुल बजा दी गई । जिस को पुरे नगर ने सुना । जो डोगरा सैनिक थे । उन्होंने जयगोश सुन कर रोशनी फैलाने वाले एक फायर किया ती उस से उनको यह जानकारी हुई कि यह बहुत बड़ा हमला है । और हम अपनी ताकत से रोक नहीं सकेंगे तो मोर्चे छोड़ कर खजाने की तरफ तहसीलदार हरजी लाल के पास पहुंचे । तहसीलदार ने खजाने का दरवाजा खोल दिया । जिस कदर वहां कैश था, उस में से जिस कदर सैनिक शक्ति और तहसीलदार उठा सकते थे उठा कर रियासी की ओर नगर निवासियों को छोड़ कर भाग गये ।

नगर में जितना हिन्दू था वह सब भाग कर तहसील Office में जो बहुत बड़ी सराय के मुफाविक था, इकट्ठे हो गये । उनमें लाला हाकुम चन्द, बोध राज मोदी के परिवार के साथ एक मुसलमान गुजर पीरा नामी (नौकर) तहसील में आ गया तो इन्होंने उसको बचाने के लिए अपने परिवार की किसी महिला का दुप्पटा उस के सिर पर रखा और तहसील के दरवाजे से बाहर निकाला और वह बच कर अपने ग्राम तराला गुजरा में पहुंच गया । और तहसील में इतना रश था कि वहां खड़ा होने के लिए भी जगह नहीं थी । और पानी की बूद के लिए बच्चे और महिलायें तरस

रहीं थी।

उस समय अपने नगर के कुछ स्वयं सेवक साथ वाले मकानों से पानी के भरे हुए घड़े लाकर पानी पिलाने की कोशिश की लेकिन पानी के लिए लोग इतने मजबूर थे। घड़े के मुह में हाथ डाल कर वह पानी वाला हाथ अपने होठों पर लगाते थे। जिस की वजह से किसी को पानी नहीं मिलता था। इतने में आसमान पर हवाई जहाज की आवाज सुनाई दी। ता वह आवाज सुन कर महिलाओं ने उस किस्म का सतसंग शुरु कर दिया जैसा माता द्रोपदी ने जब वह कौरवों के दरवाजे में जबरदस्ती पकड़ कर लाई गई थी। तो उन्होंने अपनी लाज बचाने के लिए प्रार्थना की थी और भगवान कृष्ण ने उनकी लाजचीर बड़ा कर बचाई थी। लेकिन हमारी किस्मत में ऐसा भी न हुआ वह जहाज को देखकर सतसंग इसलिए शुरु किया कि इस जहाज द्वारा महाराजा हरि सिंह ने हमारे लिये कोई सहायता भेजी होगी। लेकिन वह जहाज चक्कर लगा कर वापिस होने लगा। अपनी तरफ से जहाज वालो की जानकारी के लिये उस समय के मुताबिक बहुत इशारे दिये फिर भी वापस चला गया और हमारी कोई सहायता नहीं हुई। सारी जनता का मन इससे बेवस हो गया और ना उमीद हो कर बैठ गये।

अपने में से संघ सेवक अभी बड़े उत्साह भरे मन से शहर में गलियों की गश्त कर रहें थे। उनके पास एक आद कस्तूरी राईफल और बाकियों के पास द्वारों वाले राईफलें और लाठियां थी जो संघ सेवक गश्त कर रहे थे। उनमें श्री यवटर-ओम प्रकाश जी, श्री चरण जीत लाल गुप्ता, श्री जगदीश राज संग प्रचारक जगदीश राज जी अलदरुठ वाले कृष्ण चन्द्र, प्रकाश जी मोदी श्री सोहन लाल जी केहला, श्री जिया लाल जी रोहतड़ा' श्री जिया लाल जी फते पोरी, श्री जिया लाल जी नैली वाले हर खतरे को मोल लेकर गलीर मे घूम रहे थे। ज्यादा अन्धेरा फैलता जाता था। खतरा बड़ रहा था।

पहले यहां नगर निवासियों ने सैनिक और संग सेवकों मिले जुले व्यक्ति को मोर्चो में इकट्ठे न किया। उसी कारण से बारी मोर्चो पर बैठ सैनिक मोर्चे छोड़ कर जा सके और वह बारी मोर्चे हमलावारों के कब्जे म चले गये। आखिर रात को जब बारी मोर्चों से दुश्मन की गोलियां तहसील की ओर आने लगीं और साथ वाले मकानों में आग लगनी शुरू कर दी। तो उस समय कार्तिक की भयानक काली रात में

खामोशी का राज था। तो श्री कृष्ण कुमार जी संघ नगर कार्यवाह ने शंख बजा कर खतरे की सूचना सभी को दी। जिसे सुनकर सब बैचेन हो उठे जो नगर पर हमला-वार हुये। उनमें महाराजा हरि सिंह की फौज के कुछ फौजी जिनके पास सिर्फ 120 गोलियां थी शामिल थे। उन्होंने उसी शक्ति से हमला किया। अब जो तीसरी बडी गलती की वह यह थी कि इन हालात में हम सभी का यहां रूकना मुश्किल है तो बगैर किसी सोच विचार के जो किसी के मन में आया उसी के मुताबिक उसी ने किया।

नगर के पुलिस स्टेशन के उतर दक्षिणी दरवाजे तक हमलावार पहुंच गए। उनमे से जानो पहचानी आवाज ने यह घोषणा की कि नगर के सभी हिन्दू को नगर खाली करके बहिर मैदान में निकल जाये और नगर को हमारे हवाले कर दो। हमारी लडाई डोगरा राज की फौज से है लोगों से नहीं। लेकिन इस में भी सच्चाई नहीं थी बल्कि एक धोखा था। यह पहले जानकारी मिली थी कि फला महिला की फला इन्सान ले जाएगा और ललान मकान को फलान व्यक्ति समान लेगा। और यह भी उनकी राय थी। कि जब सभी लोग बाहर निकलेगे तो सब दौलत जो उनके पास होगी। उनसे लूटी जा सकेगे दौलत तो फिर भी उनके हाथ ही लगी। परन्तु वीर महिलाओं ने बदकिस्मती से जिनके नाम उन दुष्टो की सूची में आये हुए थे। घर से बाहिर एक कदम नहीं रखा और जहर खाकर या तलवार की धार से अपनी गर्दनो को कटवा कर जाने दे दी। ताकि पाक पवित्रता को छु सके उनके नाम ध्यान में है लेकिन यहाँ लिखना में ठीक नहीं समझता। पुलिस स्टेशज रजौरी में कुछ सिपाही और ठाकुर हरिसिंह सब इन्सपेकटर duty पर थे । S P. को हमलावारों ने बड़ी बुरी तरह एक-एक अंग काट कर टुनेड़े कर लिए कुछ सिपाही मारे गए और कुछ भाग गए। वहां जो पांच पटी अमीनेशन था वह हमलावारो के हाथ लगा। उसी से उन्हों ने जोरदार हमला शुरु कर दिया। उसी अमीनेशन की भाग हमने पुलिस वालो से की थी तो वह हमें देने से इन्कार हुए थे। नगर के रहने वाले मकानों में जहां भी कभी थोड़ी रोशनी नजर आती थी। वहां फौरन गोली गुजर जाती थी। जिन में से कुछ पुरखो के नाम ध्यान में हैं लाला मेली राम जी जनजहोट वाले सन्त राम जी मोदी जिया लाल जी बजाज चिहायाड वाले मेली अपने घर से भाग गये। उनमें दुर्गा दास जी थन्ना वाले चुनी लाल जी कंगाल नौशहरा वाले और भी बहुत से अपने घरों में मारे गए।

उस समय नगर के स्वय सेवच अमन कमेटी के मेमबरान के पास पहुंचे और उनसे कहा कि जिन मकानों से नगर में गोलियाँ वरसाई जा रही हैं। वह मुसल-मानों के खाली मकान है। उनको आग लगाई जाये तो कुछ समय के लिए दुश्मन आगे नहीं वड़ पायेगा। लेकिन वह इसके लिए भी नहीं माने कितना यह भयानक समय था। और कमेटी वालो में कितनी शराफत थी। और दूसरी तरफ वह लोग नगर के हिन्दू को वार-२ warning दे रहे थे कि नगर को जितनी जल्दी से खाली करोगे उतनी ही आपकी भलाई है वाहर से जो दुश्मन की गोलियां वार-२ आ रही थी। उनका जवाब श्री ज्योति प्रकाश जी Army Officer श्री विहारी लाल जी बरमोच वाले और कृष्ण लाल जी मोदी और चन्द दूसरे लोग जिनक पास Three Not Three की राईफलें थी, जवाब दे रही थी। वाजार वाले आर्य समाज की तीसरी मंजिल पर बैठे हुए स्वामी शंतानन्द जी महाराज अपनी राईफल से दुश्मन की गोली का जबाब दे रहे थे। लेकिन यह सब कव तक जारी रह सकता। स्वामी जी वहां गोली लगने से छत पर ही शहीद हो गए। और श्री ज्योति प्रकाश जी वहुत जख्मी हो गए। इस लिए उनको मोर्चे से वापस लाना पड़ा और आर्य समाज मन्दिर को आग लगा दी। जिसकी वजह से स्वामी जी की एक टांग ऊपर दीवार पर नजर आती है। वह मोर्चे भी उनके हाथ आ गए। इस तरह आगे वड़ कर आग लगनी और लूटमार शुरू कर दी।

अपने कुछ स्वयंम सेवको की गोलियों से और हथगोले जो अपने ही लोगों ने बनाए हुए थे। कुछ मुसलमान हमलावार मारे गये। उनसे शस्त्र और लोईयां छीन ली और वह लोग श्री राम लाल जी और गोरी शंकर जी सेठी के मकान की ऐवड़ी में जहां मास्टर बिशन दास जी सेठी रहा करते थे। जो आग लगते हुए मारे गए थे। उस रोज 25 कीर्तिक मंगल वार 200० विक्रमी दीवाली का दिन था और रजौरी नगर वासियों के लिए बहुत ही दुखद दिन था। वहां तहसील के अन्दर वीस हजार से भी ज्यादा लोग आ चुके थे। जो पानी की बूद के लिए तड़पते थे। अपने जो स्वयं सेवक गलियों चोकसी के लिए फिर रहे थे। उनमें से वीड़ होने के कारण अपने परि-वारों में भी न पहुच पाये। यू ही शाम का वक्त आया और सूर्य भगवान भी अपनी अपनी नजरे पश्चिम की ओर मोड़ ली। तो लोगों मे और घवराहट वड़ी माताओं और वहनों ने सोचा कि अब हमारी प्रतीक्षा की घड़ी आई है। वह यह जानते थे कि प्राचीन काल में भी जव हिन्दू देवी पर ऐसा समय आया तो उन्होंने अपना आराम और

दुनिया के सुखों को अपना सत्तव और धर्म को बचाने के लिए बलिदान दिया।

जिस तरह दिवाली की मिठाई के लिए बहन भाई आपस में झगड़ते है। उसी तरह हमारी उन वीर माताओं और बहनों ने वह जहर स्वयं सेवको से छीन कर अपने पास रखा और प्रभु का नाम लेते हुए वह जहर अपने मुह में रखा और मुह में रखते ही उनकी मौत हो जाती थी। अन्त में उनके मुह से ओइम की धुनी निकलती थी बच्चों ने भी उस जहर को मां का दूध समझकर उसको पिया और अपनी माता की छाती पर सोते गये आखिर वह जहर भी खत्म हो गया। बाकि माताओं और बहनों को जहर ना मिलने पर दुख: हुआ और उन्होंने यह फैसला लिया कि जिस तरह भी हो सके हमारी जान शरीर से निकलनी चाहिये।

ताकि उनको जिन्दा होते हुये कोई दुश्मन हाथ लगा ना सके। जिनके पास राईफल थी उसने गोली से, जिनके पास तलवार या कुलहाड़ी थी। उस से माताओं और बहनों की जीवन लीला को खत्म कर दिया। परन्तु उस में एक दुखदायी कारण यह थे कि वह कुलहाड़ी या तलवारे तेज नही थी और उन हाथों में थी। जिन्होंने कभी हाथ में लाठी भी नही उठाई थी। कई-२ वार करने पर जान नही निकलती थी और यह आवाज सुनाई देती थी कि मेरे बेटे या मेरी वीर मे अभी नही मरी। अमृतलाल जी रोहतडा की माता जी कि अवाजें अभी तक मेरे कानों में सुनाई देती है। उनको बड़े सुपुत्र श्री मुलकराज जी रोडतरा तलवार से गर्दन काट रहे थे। वह बार-2 कहे रही थी कि बेटा मेरी गर्दन अभी नही कटी मे जिन्दा हुं एक ओर जो का वार करो ताकि में शरीर को त्याग दू। इसी तरह मेरे बड़े भाई सीता राम जी ने अपनी पत्नी श्रीमती वेदमती और छोटी लड़की को मौत की नीद सुला दिया। इस तरह हजारों देवियां मिनटो के अन्दर मौत की नींद सो गई। श्री दुर्गा दास जी परीड वाले जिनके हाथ में कारतूसी राईफल थी और कारतूसों की पेटी उनके कही और सीने के साथ लिपटी हुई थी। उनको सब नगर वाले लोग शक्तिशाली पुरुष मानते थे।

वह तीन किलो भैस का गर्म-२ दूध उसके स्थनों से निकलता हुआ पी लेते थे। उनके मुह से यह शब्द मैने सुने है। जब उन के एक हाथ में लकड़ी का छोटा सा डण्डा और दुसरे हाथ में चांदी के रुपयों से भरी थैली जो वह बाजार से ग्राही करके लाते थे। वह यह कहते थे कि कोई माई का लाल यह थैला मेरे हाथ से

छीन कर ले जाये मैं दुसरा हाथ नही लगाऊगा और कभी भी किसी ने थैली छीनने की हिम्मत नही की।

अब पढ़ने वाले स्वयं विचार कर ले कि वह कितने शक्तिशाली थे। उन्ही दिनों में मास्टर मोती राम जी के घर रात्री को अपने साथियों के साथ मोर्चे पर पहरा दे रहा था। उनका मकान आखिरी गली में था। रात को श्री दुर्गा दास जी अपने साथियों के साथ हाथ में दुनाली राईफल लिये मोर्चो की checking के लिये आये तो उनसे नमस्ते हुई और बातचीत की तो वह कहने लगे कि राईफल तो मेरे हाथ में जरुर है पर मन जो हैं मेरे पास नही है। वह तहसील के अन्दर अपने परिवार सहित मौजूद थे। उन्होंने भी अपनी पत्नी और बच्चों को जहर देकर और खुद भी जहर खाकर टरेजरी दफ्तर के सामने इक्टठे सभी मरे पड़े थे। उनमें से एक उनका छोटा लड़का जोगिन्द्र बच्चा था बड़ा होकर किसी इसाई लड़की मे शादी करके जम्मू कश्मीर से बाहिर जा चुका जिस पर अब प्रयत्न किया जाये तो वह हिन्दु धर्म में वापस आ सकता।

तहसील हाता में खुन की नदियाँ बह रही थी। जिन परिवारों की महिलायें मारी जा चुकी थी तो उनके सम्बन्धी नोटों के बण्डल और चांदी के रुपये और सोने के जेवरात उनके सिरों पर से न्योछावर कर के ढेर लगा रहे थे। उन देवियों की बलि पर उनके समबन्धी इस सम्पति से लक्ष्मी पूजन की अहुतियां डाल रहे थे। कुछ लोग वहां से उस सम्पति को उठाते हुये भी देखे गए।

उस समय दुश्मन की गोलियां बारिश की तरह बरस रही थी। तहसील के नजदीक वाले मकानों मे आग लगा दी गई थी। उस हालत में वहां ठहरना भी मुश्किल था। तहसील का आधा दरवाजा खोल दिया गया, जो लोग बाहर जाना चाहते थें बगैर किसी प्रोग्राम व सोचे समझे के परेशानी की हालत में चल पड़ें। किसी ने एक दूसरे को नहीं देखा और यह भी ध्यान मे नहीं आया कि जब महिलाए और बच्चे मारे जा चुके है तो स्वयं कुछ करके बीरों की मौत मरे। जिधर भी कोई आसानी से निकल सका चल पड़ा। अब किसके साथ क्या बीती उसके विषय मे जो कुछ मुझे वहां रहते हुए देखा या पता चला लिखूंगा। मैं दिवाली से लेकर बैसांखी तक वहीं रहा हू। अन्त मे तहसील के अन्दर जो लोगों का समान बिखरा पड़ा था। लाशों के ऊपर इकट्ठा करके आग लगाई। लेकिन उससे पूरे शरीर जल न पाये। तहसील के

साथ ही आगे थोड़ी दूरी पर महता जगत सिंह जी जगीरदार की हवेली थी। जिससे मुहल्ला अन्दर कोट के नाम से पुकारा जाता है। वह किलानमा वाली हवेली थी। उस में महता जी के परिवार के इलावा उनके बहुत से समबन्धी भी रह रहे थे।

जब लोगों ने तहसील से भागते हुये देखा तो वहां भी महिलाओं ने जहर खा कर और गोलियों से छलनी होकर अपने को देश की बलि दे दी। प्राण न्योछावर किया और जब सगी महता जगत सिंह जी ने यह देखा जो उस परिवार में सब से बड़े और नेक बजुर्ग थे, यह बर्दाश्त न कर सके और जहर चाट कर शरीर त्याग दिया अपने घर से पांव बाहर न रखा और पबित्र भूमि पर ही अपनी बलि चड़ा कर देश भक्ति को जाग्रित किया। उनकी हवेली के साथ से ही एक रास्ता निकल कर दरिया की ओर जाता है। दरिया के किनारे पर ही केले के वृक्षों का एक घना भाग था। जिस मे दुश्मन की नजर नहीं पड़ सकती थी। तहसील से कुछ लोग निकल कर उस भाग में छुप कर जा बैठे।

जिन में श्री दीना नाथ जी केला वकील (नगर संघ चालक) श्री धनी राम जी मोदी अरजी नवीस और श्री अमर नाथ जी गुप्ता मीरपुरी श्री दीना नाथ जी महाजन चीफ इंजीनियर जम्मू कश्मीर के भाई थे। उनकों रजौरी अपने मामा स्वर्गीय मोहन लाल जी सराफ की बहुत बड़ी जायदाद भूमि आदि बरासत मे मिली हुई थी। उसकी देखभाल के लिये वहां रहते थे। श्री जिया लाल जी शाह लाला पगत राम जी कंगाल, लाला दुर्ग दास जी रोहतडा लाला बिहारी लाल जी मोदी. (पंच) लाल जगदीश राय जी मोदी, लाला बिहारी लाल जी मोदी (मनियारी वाले) श्री दुर्गा दास जी कंगाल, श्री अमर नाथ जी लंगर (नेहली वाले) और श्री बाला राम जी चोगा। इनके पास भी वही जहर मौजूद था। जिसे बांट कर सभी ने चाट लिया। उनमें से श्री दीना नाथ, जी केहला, श्री अमर नाथ जी मीर पुरी, श्री अमर नाथ जी लगर और और श्री दुर्गा दास जी कगाल इनकी मोत हो गई। और जिया लाल जी शाह भी उन के साथ बेहोश पड़े थे। परन्तु उन पर जहर का असर कम था।

रात को जब ठण्ड पड़ी तो उनको थोड़ी होश आ गई। परन्तु जालिम जहर के असर से हालत बहुत खराब थी। जो लोग इस पार्टी से जिन्दा बचे। उन में से धनी राम जी मोदी भगत राम जी कगल विहारी लाल जी मोदी और जगदीश राय जी

मोदी भाला राम जी चोगा बिहारी लाल साथ वाले छिछारी जगल की चले तो उन मै से श्री जगदीश राय जी मोदी को नजदीक मोटर रोड पर गोली लगी और वीर गति को प्राप्त हुये। उनके भाई बिहारी लाल जी मोदी नौशहरा रोड़ पर राजिल से आई गोली से मारे गये।

वाला राम जी चुगा जंगल से गुजर कर निकट के गावों दसलसीरा में जब पहुंचे वहां के मुकामी गुज्जर ने मार डाला। तीसरे दिन में भी जल उसी गांवों में गया तो वहां के एक गुज्जर ने मुझे उनकी लाश दिखाई और कहाँ कि यह बाला शाह की लाश है श्री धनी राम जी मोदी को दुश्मनों ने इस कदर जखमी कर दिया कि वह मरे हुये दिखाई पड़ते, बाद में वह ठीक गये। छः माह वैसाखी दिन बाद में पठानों की गोली से सदयाल के गांवों में वीर गति प्राप्त की और श्री बिहारी लाल जी (पंच) सारी रात जंगल में फिरते रहे लेकिन उनको बाहर आने का रास्ता नही मिला। सुबह सवेरे रोशनी होने से उनको रास्ता मिला और पालयाना गावों में पहुंचे। इस लिये उनको कत्ल कर दिया। उन में से श्री दुर्गा दास जी रोहतडा जो वहां केले वृक्षों में रात को छुपे रहे उनको अमनी ही राईफल की गोली लगी और सख्त जख्मी हो गये और एक माह उसी हालत में गूजरने के बाद मृत्यू हो हुई। श्री जिया लाल जी शाह जो नौशहरा की ओर जा रहे थे, थक गये। और रास्ते मे बैठ गये। और नींद आ गई। जहर का असर अभी खत्म नही हुआ था। इसलिए वह बेहाश हो गये। मक्खियां और चुट्टियों ने उनके मुह से जाग आने के कारण डांप लिया अभी रखै जिसको संया मार न सके कोई। कई दुश्मन गरु उनके नजदीक से गुजरे उनको मरा हुआ समझ कर उधर नही देखा। इतने में श्री भगत राम जी कंगल आ पहुंचे उन्होंने उनको देखा और बहुत घबराये मन में ख्याल आया कि उन्होंने जहर खाया था और उसी से बेहोश नही उन्होंने मक्खियाँ और मुह से साफ किया और जंगल से दुड़ने तोड़ कर उनसे रस निकाल कर उनके मुह पर टपकाना शुरु किया जैसे ही खटाई का असर हुआ। उनको होश आनी शुरु हुई।

वह दोनों नौशहरा की ओर बडें यह दोनों ठीक-ठाक मुशलकिलात से गुजरते हुये जम्मू जा पहुंचे। इनसे पुर्व जब तहसील हाता में कत्ले-आम हो रहा था तो मास्टर तिलक राज जी जो कोटली शाखा के स्वयंसेवक थे और राजौरी में स्कूल टीचर थे। श्री मुकन्द लाल जी मोदी के घर मे रहते थे। पची कीर्तिक की रात होते ही नौशहरा की ओर मोटर रोड़ से ही चल पड़े। सवेरे ही बैगर किसी

रुकावट के नौशहरा पहुचे अगर उसी समय बाकी बचे हिन्दु भी सीधे रास्ते से चलते हो सकता था कि बाकियों में से भी बहुत बच सकते। जिस समय सब लोग तहसील में बाहिर निकल रहे थे उस में भी अन्धेर ही था और यह सब कुछ देख रहा था मेरे पास उस समय एक दोनाली राईफल और नंगी तलवार थी। राईफल को फैंक दिया और तलवार हाथ में थी। दो बार तलवार उठा कर अपनी पत्नी को मारने की कोशिश की। लेकिन उनकी जिन्दगी थी इसलिये में ऐसा न कर पाया। मेरे पिता जी भी वहां थे। उनको मैंने कहां कि आप ग्राम दीन गुजर दहसीरा वाले के घर चले जाये वह आपकी देखबाल जरूरी करेगा। वह जगल क्रास करके उस गुजर के नजदीक पहुंचे चुके थे। एक मुसलमान लड़के ने उनको कत्ल कर दिया जो उनको जानता भी था। मेरी माता जी और सबसे छोटी बहन और मेरी पत्नी और एक साला छोटी बच्ची साथ लेकर तहसील से बाहर निकला महता जगत सिंह की हवेली के पास से गुजरते हुये नीचे दरिया के किनारे पहुंचे उससे पहले मेरी माताजी ने छोटी बच्ची को हाथ में पकडे हुये चल रहे थे। हाथ छुट जाने के कारण पीछे रह गये और फिर मुझे नही मिल पाये। इस के बाद वह मेरी फुफी जायदात लक्ष्मण दास के साथ जा मिले और उनके साथ फलियाना तक पहुंचे और उनका साथ भी छुट गया। वह मुसलमानों का गॉवों था तो उन्होंने सब हिन्दु महिलाओं को इक्टठा करके एक मकान को छत पर बिठा दिया जो पुरुष साथ थे। उनको मार दिया। समय रात का था मेरी माताजी ने जब यह देखा कि मेरे साथ अपने परिवार से या कोई नजदीकी रिश्तेदार नही है तो मेरे जीने का क्या लाभ हैं। उन्होंने मेरी छोटी बहन जी उसके साथ थी। श्रीमति कृपाराम चोपड़ा ठेकेदार की पत्नी के हवाले कर दी बाद में जब वह मुझे मिली तो उन्होंने मेरी छोटी बहन को मेरे हवाले कर दिया। माता जी ने उसी मकान की छत से नीचे पत्थरों पर छलांग लगाकर कुछ समय के लिये सिसकते रहने के बाद उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई। २4 कार्तिक की रात्री को में मोर्चे पर निकला था। मेरे घर पर भाई मंगतराम जी का परिवार और उनके चार बच्चे उनकी पत्नी भाई चुनी लाल जी उनकी पत्नी और तीन बच्चे और मेरे भांजे हरबन्स लाल जगदीश राज इन सब को में अपने साथ नौशहरा से राजौरी ले आया था और मेरे घर पर ही थे।

लेकिन तहसील से निकलने के वक्त इन में से कोई भी मेरे साथ निकल नही पाया। इसके इलावा हरबन्स लाल के माता पिता भी नोशहरा से आये थे।

जब में नीचे दरिया के किनारे पहुचा तो उस समय गोलियां हमारे सिरों से जा रही थी। दरिया को पार करते हुये दरिया का पानी पी कर प्यास बुझाई। उसके आगे दरिया के किनारे ही गन्ने के खेत थे। उसमें मैं और मेरी पत्नी और छोटी बच्ची छुपकर बैठ गये और छोटी बच्ची कहीं रो न पडे थोड़ा आफीम दिया वह सो जाये। आधी रात तक गोलियों की आवाज सुनाई देती रही और हम बैठे मेरे बड़े भाई राम जी जिनके साथ उनका एक बच्चा जिसको हमने कन्धे पर रखा हुआ था। नगर की पूर्व की तरफ जो मक्की के खाली खेत थे। उनकी ओर चलकर जा पहुचे मेरी एक बड़ी बहन जिसने हाता तहसील में ही जहर चाट कर जान दे दी थी। चार बहने और बहनोई अकेले 2 तहसील से जिन्दा निकले और दो बहने नगर के शुमशान-घाट के पास मारी गई। उनमें दो जो मुझ से छोटी अथी जिन्दा है। और मेरे एक बहनोई और दो उनके भाई बथुनी नाला के पास मारे गये। और बड़े बहनोई राजपुर कमीला पहुंच कर जहां उनकी जमीन भी थी। उनकी एक फुफीं ज़ादा बहन जिस ने मुसलमान से शादी की थी के घर पहुंचे। उनको यह उमीद थी कि वह मेरी बहन होने के नाते में पक्ष करेगी। लेकिन ऐसा न हुआ और उनको कत्ल कर दिया गया। उनका नाम श्री मुकन्द लाल था।

मेरे दूसरे बहनोई बोध राज जी गुप्ता फतेफोर वाले जिन्दा जम्मू पहुंच गये और फिर वहां से वह पठानकोट और कानपुर में रहे। उनको वहां अधरंग की बीमारी हुई। उस बिमारी में जिया लाल जी शाह डाक्टर नानक चन्द्र जी कुछ दिगर नगरवासियों ने उस समय में भी सहायता की जिससे वह बिमारी के दिन काट पाये। जब में भी रजौरी से जम्मू पहुंचा वह भी मेरे पास आ गये और 25 साल तक मेरे साथ ही जम्मू रजौरी में रहे। अन्त में अपने बड़े भाई श्री चुनी लाल के घर चले गये और थोड़े समय के बाद उनकी मृत्यु हो गई। कस्बों के पूर्व में दरिया के किनारे शाली को जो खाली खते थे जिनकी और मेरे भाई सीता राम जी अपने छोटे लड़के को कधों पर उठाए ले गये थे। उन खेतों के साथ ही किलादनीदार का ग्राम है। जिस में मुसलमानों की आबादी थी। वह सब लोग लूटमार की नियत से उन खेतों में आ चुके थे। और उन खेतों में ही लोगों ने जो शली काट कर इकट्टी की हुई थी। आग लगाने शुरु की ताकि उसकी रोशनी में भागते हुये हिन्दू को देख सकें। उस समय उन खेतों में माताओं बच्चों बहनों की चीख पुकार से आसमान गूज रहा था। और यहां तक कि कुछ छोटे बच्चों को ज़ालिमों ने अपने माताओं से छीन कर उस आग में जिन्दा फेंका।

मेरे भाई सीता राम जी भी उन्हीं खेतों में थे। उन्होंने एक व्यक्ति को जिस के हाथ में नंगी तलवार थी और वह मुसलमान था। अपनी तरफ आते हुए देखा और वह उनका परिचित व्यक्ति था। जिसका नाम आलम शाह था। जो मुझे भी अच्छी प्रकार जानता था। जब दोनों ने एक दूसरे को देखा तो वह कुछ कहे बगैर भाग गया। इतने में मेरी जो दो छोटी बहने अब भी जिन्दा हैं आ मिली और भाई जी ने अपने छोटे बच्चों की गोद से उतार कर अपने बहनों के हवाले कर दिया। और वह अकेले आगे गोपाल सहाई मीर पावर की तरफ चल पड़े। वहां जाकर छुप गये इतने में साई गोपाल दास जी गिररातर उधर ते गुजरे एक दूसरे को उन्होंने देख लिया और बक्शी जी ने कहा मेरे साथ चलो बिलोड़ी ग्राम में जहां गुजरों की बस्ती है। वहो चलोगे और उस ग्राम पहुंच गये। खैरदीन नामी गुजर के घर रहे जोमुझे अच्छी तरह जानता था। उन्होंने खैरदीन को यह कहा कि मैं सुहावना गांव का रहने वाला एक ब्राह्मण हू। और आपका काम काज करता रहूगा। इस तरह वहां कुछ दिन गुजारे। एक दिन वहां से मुसलमानों का जत्था निकला। तो यह मेरे भाई माल मवेशी वाले कमरे में जहां उनको चारा अलत है। उसमें जा कर लेट गये और उन को नजर न आये, तो बच गए। बक्शी साहब जो छुपे नहीं थे। जत्थे वालों के हाथों मारे गए।

थोड़े दिनों के बाद वहां के अहमद रफी नामी गुजर ने नियाज दी। और उसने खैरदीन को भी उस, नियाज में बुलाया और खैरदीन ने मेरे भाई जी को भी अहमद रफी के घर ले गए। उसने खैरदीन को पूछा कि यह दूसरा व्यक्ति कौन है ? तो उसने कहा कि यह शेख है। हमारे घर रहता है तो उहमद रफी ने कहा कि यह शेख नहीं है। यह सीता शाह जिसकी कपड़ो की दुकान थी और पिशोरी शाह का बड़ा भाई है। और इन दोनों को अच्छी तरह जानता हू। मैंने पिशौरी शाह का एक आना उधार लिया हुआ हू। और वह दोनों खाना खाने के बाद घर चले गये।

पहले जहाँ वह काम काज करके उनसे रोटी खा लिया करते थे। अब खैर-दीन ने अपनी पत्नी और लड़के सराज दीन से कहा कि यह तो हमारे पिशौरी शाह का बड़ा भाई है। इसकी जितनी भी सेवा हो सके करे और इनसे कोई काम न ले सराजदीन उनका दोस्त बन गया। दिन गुजरने लगे तो एक दिन भाई जी ने खैर-दीन से कहा कि लोगों से पता चलता है कि रजौरी नगर में जो कत्ल आम था वह बन्द हो गया है। और जो हिन्दू बच गये थे। उनको नगर में बसा दिया गया हैं।

इसलिए आप मुझे रजौरी छोड़ आओ। पर वह नहीं माना। बार २ उनके कहने पर एक दिन वह उनको साथ लेकर रात को वह बडून जमाल में जलालदीन गुजर के घर पर रहे और दूसरे निन रजौरी के लिए चल पड़े।

नगर के हिन्दू जो बच गये थे। उनको मिर्जा फकीर अहमद ने पहले मन्दु कुमार के घर में सब को बसाया। बाद में वहां से आगे पीछे के घरों मे सब बचे हुए हिन्दू बसने लगे। इसके बीच में मेरे साथ क्या बीती वह आगे लिखूगा। मेरे घर के और कुछ सम्बन्धी बच गए थे, वह सब श्री तेज राम जी और बन्सी लाल होटल वाले के घर पर रहे थे। 11-12 बजे का समय हुआ धूप में समाने के छत पर बैठे हुए थे। और सोहन लाल जी केहला ने मोहन लाल जी दरहाल वाले के डबेडी के सामने से जोर2 से मुझे आवाज लगाई और में बोला तो उन्होंने मुझे मुबारक दी कि आप के भाई सीता राम आ रहे है। फिर हम सब इकट्ठे बैठे और दोनों को खाना वगैरह खिलाया और बातचीत चलने लगी, उसमें खैर दीन ने कहा कि मैने तो इनको कहा था आप यहां ही रहे। जब हालात ठीक हो जायेगे फिर चलेगे लेकिन यह नहीं माने और आ गये। उन्होंने यह भी बताया कि इनके साथ जो गोपाल दास जी गये थे। वह जत्थे वाले के साथ जो पीरबड़ेसर वाले गुरु जी जो उस मन्दिर के पुजारी थे के हाथों मारे गये। जो उस समय जबरन गुरु जी को शेख बनाऐ हुआ था और हिन्दू को मरवाने का काम लिया करते थे। आखिर में गुरु जी को भी मुसलमानों ने अन्त में कत्ल कर दिया

छोटे-छोटे बच्चे जो बच गये थे वह रजौरी नगर में कारोबार कर रहें हैं। जब भाई सीता राम और खैर दीन जहां में रहता था। वह पहुंचें तो खाना वगैरह खिलाने के बाद जब इकट्ठे बैठें तो खैर दीन कहने लगा कि मुझे पूरी खुशी उस सूरत में होती जब हालात ठीक हो जाते। फिर मैं इसको साथ लाता पर इनके बार-2 मजबूर करने पर अब आया और उसको चलती बार मैंने 100 रूपया दिया लेने से इन्कार हुआ। लेकिन फिर भी इसको दे दिया। 1952 जब दुबारा रजौरी जाते कारोबार शुरु किया तो खैरदीन उसका पुत्र सुराज दीन जब मिलते थे तो भाई साहब की याद दिलाते थे।

1948-49 में जब रजौरी मे रहते थे। उस समय 15-20 स्वयं सेवक जो जिन्दा बच गये थे। वह सभी इकट्ठे मिलते जुलते थे। और अपना सूचना विभाग ठीक प्रकार से काम करता था। जहां कभी जरूरत होती थी हम पहुंच जाते थे। उस

समय वहां नगर में मुस्लिम लीक के लीडर ग्रामों से आया करते थे। और हमें मिलते थे और आपस में बातें करते हुए यह कहते थे कि इन संगियों को हम मार-२ कर थक गये हैं। परन्तु यह अभी भी जिन्दा हैं। और गलियों में वहीं सग के गीत गुन गुनाते फिरते हैं। जब मैं अपनी पत्नी के साथ दराहाली तवी के किनारे धन्ने के खेतों में छिपा हुआ था। और ज्यादा रात बीत चुकी थी और गोलियों की आवाजे बद हुई थी। फिर मैं खेत से बाहिर निकल कर दरिया पार करके जंगल मे ऊपर दहस्सल की ओर चल पड़ा। यही ख्याल था कि कोई और साथी मिल जाये तो उनके साथ जम्मू की ओर निकल जायेंगे। लेकिन इसके उल्ट हुआ जब जंगल की ऊची चोटी की तरफ पहुंचे तो वह वहाँ आग जलाकर बहुत से लोग आगे पीछे बैठ थे। यही सोचा कि यह हिन्दू ही होगे। लेकिन यह उसी ग्राम के मुसलमान थे। उन लोगों को जब मैंने बैठे हुये देखा तो मैंने अपनी पत्नी को वहां ही खड़ा करके उनकी ओर बड़ा उनकी ओर से आवाज आई तू कौन काफिर हो मैने उस आवाज को पहचाना और कहा है भाई फकीर महमूद मैं काफिर नहीं हू मै आप का भाई हू। तो उसने जबाब में पूछा कि आप के साथ कौन है मैंने कहा मेरी पत्नी भी साथ है। तो फकीर महमद ने कहा आप इधर आ जाओ वहां मुझे बिठाया बात चीत आपस में हुई वहाँ कुछ और भी परिचित व्यक्ति थे।

जिनमें मिस्त्री फते दीन और उसका पिता हमाम दीन भी थे। उन दोनों ने आपस में सलाह की कि इनको हम अपने घर ले चले है। और हालात ठीक होने तक यही रहेंगे। और सुबह होते ही अपने साथ घर ले गये। हमें बिस्तर पर बिठाया और और खाना वगैरह दिया। उसके मकान के साथ ही उसका बड़ा भाई नबाव दीन जो नम्बरदार था रहता था। उसको जब यह पता चला कि पिशौरी शाह यहां आया हुआ है तो उसने अपने भाई इमाम दीन को अपने घर बुलाया और यह कहा कि आपने जिस व्यक्ति को घर में बिठाया हुआ है उसको निकाल दो नही तो मैं आपको उसके परिवार सहित आप के मकान को आग लगा कर जला दूगां।

वह बहुत डरा और मेरे पास आकर बैठ गया। उसने सारी बात मुझे सुनाई तो मैंने कुछ रूपये इमाम दीन को दिये जा कर अपने भाई को दो जब उसने ऐसा किया तो नम्बरदार ने कहा कि यह रूपये क्या है अगर आप मुझे उसके वजन के मुताबिक रूपये दे तो भी मैं उसको छोड़ूगा नहीं और इमामदीन को कहा कि इससे ले जाकर सरेवी दिलेर के कैम्प में हाजिर करो। जो महाराजा हरि सिंह की फौज का मफरूर

आफिसर था। इमामदीन ने मजबूर होकर हमें उसके सामने पेश किया। उसने अपना कैम्प रजौरी नगर के नजदीक तवी के किनारे जहां आजकल Supply Point है बैदका में लगाया हुआ था। तो उसने हुकम दिया कि इसकी पत्नी को महिलाओं में बिठा दो और इसको पुरूषों में वहां मुझे बहुत से नगरवासी मिले जिन में से मुझे जिया लाल जी नेहली वाले का नाम याद है बाद मे वहां ही बैठे हुये एक मुसलमान नौजवान लडका जिसके पास राईफल थी। मैं इसको अच्छी तरह जानता था नाम याद नहीं है उसने मेरी तलाशी ली और मेरे पास जो भी कीमती चीजे ले ली। मेरा गर्म कोट भी उतार लिया। सब्बी दिलेर ने हुकम किया कि जो हिन्दू कश्मीरी है। वह कश्मीर जा सकते हैं उन्हें कोई रोक नहीं और जो सिख हैं वह नीचे वाले खेतों में अलाहिदा चले जाये। हिन्दू कश्मीरी एक ही परिवार था जिसका नाम श्री कृष्ण लाल S/o of टीका राम है। वह अपने परिवार सहित चल पड़ा और वह अब इस वक्त जम्मू सरवाल कलौनी में परिवार सहित आबाद है। और दूसरा सिक्ख परिवार सरदार जागीर सिंह S/o of काहन सिंह था जो एक स्वयं सेवक था। और हमारे घर के साथ ही रहता था। जब उसको मारने लगे तो उसने गरज कर यह कहा कि मैं अपनी करपान से सात सुअरों का शिकार कर चुका हू। अब मुझे मरने से कोई दुख नहीं। उन्हें मार दिया गया जो पुरुष और कुछ बड़ी महिलाए थी उनको तवी पार करा कर नावन चश्मा के पास ठाकुर द्वारा में पहुंचने का हुक्म दिया गया।

उनमें मैं भी शामिल था रास्ते में बकरवाल जिनके हाथों में कुलहाड़ी थी। श्री हंसराज जी बजाज से कहने लगे कि शाह आप हमें सारी उम्र लुटते रहे और आज एक दिन हमारी हुकुमत देखो। उन सब ने हमें गेर कर ठाकुर द्वारा के अन्दर रोक दिया और उनके आगे सुखी घास का डेर लगाकर आग लगा दी। उस समय उस ठाकुर द्वारे में संख्या 1500 के करीब हो गई और जो लोग खिड़की या दरवाजा खोलकर बाहिर निकलने का यत्न करते थे उनको कुलहाडी से काट दिया जाता था। जो महलाएं वहां बिठाई हुई थी करायां के ग्राम में जो एक जंगल था। उसको कैम्प का नाम दिया उनको वहां ले जाया गया अब हम वापस तहसील हाता की ओर बाकी वहां निकले हुये हिन्दु से क्या बीती वह लिखते है।

लाला मनी राम और उनके सुपुत्र सतीश चन्द्र जी, मोहन लाल जी और मुलक राज जी दरार वाले उनके सुपुत्र हरिश चन्द्र जी (दरार वाले) जगली रास्तों से निकलते हुये जम्मू पहुंच गये। इसी तरह मास्टर जियालाल जी, बनारसी जी,

मुलक राज जी, बिहारी लाल जी, और उनके सपुत्र बिशमबर जी सोकड वाले जम्मू पहुंच गये। भाई लक्षमण दास जी दरहाल वाले उनकी पत्नी और परजाई सुमावती जम्मू पहुंच गये। और महता जगतसिंह जी के परिवार से श्री देवराज जी और राज प्रकाश जो और इनके भाई श्री हरबन्स लाल जी के सपुत्र ओम प्रकाश जी और उनके भाई सुभाष जी जम्मू पहुचे। ओम प्रकाश जी के पिता श्री हरबन्स लाल जी नौशहरा और राजिल के दोमियान के सड़क में दुश्मनों की गोलियों से मारे गये। इसी तरह श्री बोध राज जी चोगा उनके भाई मदन लाल जी चोगा और उनके भतीजे ओम प्रकाश जी चोगा और बोध राज के सपुत्र निर्मल कुमार जी श्री कृपा जी चोगा वजाज उनके सपुत्र राजेन्द्र जी अपने परिवार सहित जो बचे हुए थे। चिंगस में मारे गए।

श्री हाकम चन्द, बोध राज जो मोदी अपने परिवार सहित और उनके भांजे श्री अमर नाथ वन्सी लाल सहित तराला गुजरां में पहुंचे। श्री बोधराज की छोटी बच्ची शाम कुमारी जो उनसे विछड़ गई। अपनी फुफी के पास पहुंची। और बच गई बाद में जिनकी शादी उनकी फुफी और उनके भाई ज्योति प्रकाश ने श्री कृष्ण लाल चोगा वजाज के साथ की जो अब अपने परिवार में अपना सुखी जीवन व्यतीत कर रही है जब वह मोदी परिवार अपने किसी काश्तकार के घर पहुंचे तो उसने उनको एक मकान में बन्द करके आग लगा दी। और जिन्दा जला दिया। इसका कारण मोदी परिवार की बहुत सी काश्त वाली भूमि तराला में थी।

इसी तरह भगत लखपत राय जी चोगा जो नगर के बहुत ही शरीफ व्यक्ति समझे जाते थे। उन्होंने भी रजौरी नगर के नजदीक बढहुन ग्राम मे काशत वाली भूमि खरीद की हुई थी। और वह जराल परिवार के थे। और जब उस परिवार में कोई बीमार होता था। तो यह भगत जी शरबत और दवाईयां खुद उठा कर उनको दिया करते थे। ताकि वह ठीक हो जाये तो भगत जी के परिवार में उनका लड़का श्री ओम प्रकाश अमृत लाल उनका एक छोटा लड़का एक पीता और श्री दुर्गा दास जी चोगा के बड़े सपुत्र कुलदीप जी और एक व्यक्ति राम प्रकाश जी लाहौर से उजड़ कर आया था। सनातन सभा मे चपरासी था। वह उनके साथ था। यह जिनसे जमीन ली हुई थी। उनके घर गये तो उस व्यक्ति ने जिनके घर यह जा कर शरबत पिलाया करते थे। अपने नम्बरदार से पूछा कि शाह अपने पूरे परिवार सहित हमारे घर पहुंचा अब हमें किया

करना है तो उसने कहा इस से अच्छा समय आपको कब मिलेगा सब को खत्म कर दो।

और उसने लालच में आकर ऐसा ही किया। महाशय दीना नाथ जी मोदी वकील, जिनकी सिर्फ दस्सल ग्राम में ही चौदह हज़ार कनाल जमीन थी। उस लालच में उन लोगों ने उन्हे डूढ कर सलानी ग्राम से आगे जिन्दा नहीं जाने दिया। और श्री मोहन लाल जी परोट वाले जो रजौरी नगर में शरीफ और अकलमन्द व्यक्ति माने जाते थे। जब उनको मुसलमानों ने पकड़ कर परोट के जैलदार के सामने पेश किया। जैलदार के साथ उस से अच्छे सम्बन्ध थे तो उस ने कहा कि इसको मेरे पास क्यों लाए हो कहीं आगे पीछे ले जा कर खत्म कर दो और उन्होंने ऐसा ही किया। यह कुछ परिवारों के विषय में यह जानकारी इसलिए दी कि इन परिवारों के व्यक्तियों ने उन लोगों के साथ कितनी ही नेकी की हुई थी। लेकिन उनके साथ उल्टा व्यवहार किया बोध राज जी मोदी ने एक आला के गुजर को जो तहसील हाता में उनके साथ फंस गया था उस समय भी उसको बाहर निकलवाया गया था ताकि वह जिन्दा चला जाये।

श्री मोहन लाल जी चोंगा उनके सपुत्र बोधराज और पृथ्वी राज जी जो अब रजौरी में तहनील दार हैं। तहसील हाता से निकल कर जम्मू पहुंचे। श्री बिहारी लाल जी मोदी मनियारी वाले अपने परिवार सहित जिस में उनकी पत्नी और सपुत्र रघुनन्दन लाल और रमेश चन्द्र और बालकृष्ण जी जम्मू की ओर आ रहे थे और उनके साथ उनकी लड़की उर्मल जी उनसे छोटी लड़की साथ थी। बाकी सब जम्मू ठीक पहुंच गये। परन्तु श्री बिहारी लाल जी दुश्मन की गोली से नौशहरा और राजिल की बीच वाली सड़क में मारे गये।

गुड्डूमल जी बजाज अपने सपुत्र श्री कृषण लाल जी के साथ जम्मू पहुंचे। श्री अमर नाथ जी रोहतडा उनके भाई बोध राज रोहतडा श्री चुनी लाल जी फतेपोर वाले कुछ और लोग भी जम्मू पहुंच पाये। बाकी जो व्यक्ति उस समय रजौरी में थे। उन सब को आगे पीछे से इकट्ठा करके जिनकी संख्या 18-20 हज़ार के करीब थी इस समय जो रजौरी Distt. हस्पताल है उस समय डाक बगला था उस आगे पीछे और बीच में इकट्ठा किया और दिन दहाड़े खेतों में लेटा कर चाहे कोई बच्चा, औरत, मर्द, बूढा, जवान सब को मार दिया और काफी समय तक सभी

लाशे वहां पड़ी रहीं इसके बाद जो कत्ल आम था वह बन्द हो गया। श्री डाक्टर ओम प्रकाश जी अपने स्वयंसेवक थे और उन्हों ने अपनी पत्नी को अपनी ही राई-फल की गोली से मारा था। और वह M/S बक्षमण दास गोविन्द दास फर्म कार्यालय थे हाता तहसील से जब निकले इनका जिक्र मैंने पीछे भी किया है जब तक उनके पास गोली रहीं दुश्मन को मार गिराते हुए बढ़ते रहें। जब गोली खत्म हो गई वह भी मारे गये और जो 15-20 गोरखे अपने आफिसर के साथ हाता तहसील से निकले उनसे भी राईफले छीनकर दुश्मनों ने मार दिया।

उनसे भी दो बचकर भूखे-प्यासे बड़ी बुरी हालात में बगैर राईफलों के नौशहरा पहुंचे और उनका जो आफिसर था वह सलानी में दुश्मन की गोली से जखमी होकर जिन्दा पड़ा था। उसके पास जो पिस्तोल था। वह किसी अपने आदमी ने मांगा वह मुझें दे दो तो अभी मैं जिन्दा हू। नहीं दूगां बाद में उसकी मौत होने पर वह पिस्तौल दुश्मन के हाथ आया। आगे फलीयाने वाले महिलाओं का कैम्प और ठाकुर द्वारा में जिन हिन्दू को अन्दर रोक कर आग लगा दी। उनका क्या बना उन महिलाओं में से कुछ लड़कियां दुश्मन साथ ले गये थे। उनसे थोड़ी वापिस आ गई बाकी जो उनके कब्जे में रही उनका कुछ पता नहीं चला। और बाकी महिलाए और बच्चे रजौरी को भेज दिए गये और जो हिन्दू आगे पीछे कहीं छुपा हुआ था रजौरी नगर वापस आने लगा।

अपने बारे में पहले लिखा है कि मैं भी उसी ठाकुर द्वारा में बन्द था। और मेरे साथ श्री मुकन्द लाल जी मोदी सपुत्र श्री जगत राम जी मोदी जो एक धोती और बनियान में थे। मेरे साथ ही चोकड़ी लगा कर बैठे थे। वह बडे शरीफ और ईश्वर भक्त थे। उनसे मैंने पूछा कि बाहिर से आग लगा दी गई है और धुआं हमारे कमरे में आ रहा है। और जल्द हीं आग फैल जाएगी तो अब क्या खयाग है उन्होंने कहां कि मैं यहां ही जिन्दा जल मरुगां। वहां ही मर गये। श्री हरबन्स लाल जी नौशहरा वाले जिनके माता और पिता भी मेरे साथ थे। उनके बारे में यह पता चला था कि उस आग से वह जिन्दा निकल कर साथ वाली गली से नगर की ओर जा रहे थे। पर उनका आज तक पता नहीं चल सका कि वह कहां है हरबन्स लाल जी नौशसरा वाले राजेन्द नाथ जी सपुत्र श्री मंगा राम जी जजोंट वाले और राम नाथ जी श्री शान्ति प्रकाश नडयालवी के भाई और ईन्द्रजीत सत-

पाल जी के छोटे भाई ठाकुर द्वारा में पास बैठे थे इनको मैंने कहा कि यहां आग से जिन्दा जलने से बाहिर छलांग लगाते हैं। और दुश्मनों की गोलियां बाहिर चल रही थी उनसे मरना ठीक है।

तो पहले इन्द्रजीत सतपाल के भाई ने खिड़की का दरवाजा खोल कर नीचे छलांग लगा दी और दुश्मन की कुलहाड़ी से मारे गये फिर हम चारों ने बारी-बारी छलांग मारी और नीचे वाले खुश्क कुए में जा पड़े। वहां से बाहिर निकल कर साथ वाले नाले के गहरे पानी मे जा पहुंचे और बाहर हर तरफ गोलियां चल रही थी। और साथ ही मुझे यह सुनाई दिया। कोई दुश्मन अपने साथी को कह रहा था कि हंस राज राज बजाज उपर से आने बाले नाले में छुप गया उसको पकड़ो या मारो यह सुनने पर मैंने अपने तीनों साथियों से कहा कि गोली से मरने के बजाय जान बचाने की कोशिश करते है फिर हम चारों ने उसी नाले से छोटे-छोटे पत्थर पकड़े और उसी नाले के दक्षिणी कनारे के साथ2 भागना शुरु किया तो उसी बीच में नाथ राम ने आवाज लगाई कि भाई जी मुझे गोली लग गई मैंने पूछा कहा लगी है। तो उसने कहां मेरे हाथ की उंगली को लगी। तो मैंने कहा कि उस पर कोई कपड़ा बांध लो और भागे चलो। ज्यों ही हम आगे चले तो नाले के किनारे ही श्री जगत सिंह जी नडियाले वाले की लाश पड़ी देखी और भी बहुत सी लाशे पड़ी देखी थी दौड़ते हुए उनको पहचान न सके। इस तरह नडियाले वाले परिवारों में से श्री हाकम चन्द जी की पत्नी और सपुत्र रघुवीर जी और मोहन लाल जी के परिवार मे उसकी सपुत्रियां एक बच्चा और पत्नी और जगत सिंह जी के परिवार से एक बडो लड़की और श्री ठाकुर सिंह जी के परिवार से उनकी बड़ी लड़की और शान्ति प्रकाश, उनके भाई बन्सी लाल के सपुत्र भारत भूषण जी, श्री विहारी लाल जी और उनका परिवार बच पाये।

जैसे थोड़ा आगे बढ़े तो जगदीश राय जी मोदी सपुत्र श्री जगत राम जी मोदी की लाश पडी थी। फिर चारों हम बिखर गये। और हरबन्स लाल जी राजेन्द्र नाथ जी जंगली रास्तों मे दो तीन दिन के बाद भूखे प्यासे नौशहरा पहुंच गये। मैं और नाथ राम उसी जंगल से दस्सल की ओर हाथों और पांवों के बल चलते हुये आगे बढे। नाथ राम मेरे पीछे-2 चल रहे थे। आगे हमें उसी जंगल में श्री दीना नाथ, बन्सी लाल, वीरबल, हलवाई और उनके साथ दो महिलाए भी थी मिले। उन्होंने मुझे कहा कि हमारे साथ आ जाओ। क्योंकि हमने किसी को कुछ रुपये दे

रखे हैं। और उसने हमें यहां छुपा रखा है और आपको भी साथ ले चलेंगे। लेकिन हम उधर नहीं गये दरसल की और चल पड़े नाथ राम को मैंने कहा आप मेरे पीछे 2 आते जाओ। लेकिन वह भी पीछे रह गया।

अपने घर नाडियाल जा पहुंचे। वहां उनकी बहुत जमीन थी। इसलिये उनको जमीन वाइको ने मार डाला। मैं आगे बढ़ता हुआ गुलाम दीन गुजर के घर के निकट पानी के चशमे के पास पहुंचा। वहां मैंने श्री बाला राम चोगा की लाश देखी मै घबराया कि यहां भी मार थार हुई है। मेरा यहां आना भी खतरे में है ऊपर से एक मुसलमान व्यक्ति कंधे पर खाली घड़ा और हाथ में लोहे की भल्ल दस्ते उठे के साथ लगी हाथ में पकड़ी हुई उसी चश्मे पर आ रहा था। उसे देख कर एक छोटी पहाड़ी के पीछे छुप गया। जब वह पानी भर के चला गथा तो मैं भी गुलाम दीन के घर पहुंचा। वह घर पर नहीं था, उसकी पत्नी घर पर थी उसने मुझे देखते ही कहा शाह जी आये हो और साथ ही एक फड की तरफ इशारा करते हुये जिस में उसने मक की के बीज की छलिया डाली हुई थी बिठ दिया और उसके ऊपर एक खाली फड़ उठाकर रख दी।

इसी बीच में कुछ और ध्यान में आया कई छोटे बच्चे भी किस दिलेरी से छोटी आयु में रजौरी से जम्मू पहुंचे। श्री अमर नाथ रोहतड़ा की छोटी सी लड़की कमलेश अपने मामा मोहन लाल के साथ इन दोनों की उम्र 12 वर्ष से कम थी तो यह दोनों अकेले रजौरी से निकले और जब इनको दूर से आता हुआ दुशुट दिखाई देता तो यह रजौरी जम्मू मोटर रोड में बनी छोटी पुलिया मे छुपते-छुपाते जम्मू पहुचे। इसी तरह हमारे नगर में श्री हरिसरण शाह जी बड़े अमीर और शरीश हुये है। उनके परिवार में से उन की पत्नी व तीन बचियां और श्री वीरेन्द्र जी मलहोत्रा देवन्द्र जी भी जम्मू पहुंचे। महाशय ईश्र दास जी और उनके सपुत्र श्री ओम प्रकाश जी जो कोटली के वासी थे और रजौरी में काफी समय से रह रहे थे। श्री ओम प्रकाश जी जब रजौरी में पहली सघ शाखा लगी तो उन्होंने श्री कृपण कुमार जी गुप्त। जिन्होने संघ की प्रथम वर्ष की शिक्षा प्राप्त की थी। श्री देवन्द्र शास्त्री जी संग प्रचारक की रहनुमाई में दोनों ने उस शाखा को बड़ी अच्छी कामयाबी से चलाया। जिसकी संख्या हर रोज चालीस-पचास रहती थी। 1946-47 में दूसरी शाखा शुरू की गई। जिस की जिम्मेवारी मुझे दी गई। और मेरे साथ श्री ज्योति प्रकाश जी गरनाल श्री मुलक

राज जी सोकड़ वाले सहायक थे। इस शाखा की संख्या भी 20-30 से कम नहीं रहती थी। महाशय ईशरदास और ओम प्रकाश जी भी अपने परिवार को गवा कर दोनों जम्मू पहुचे। 2004 विक्रमी वैसाखी वाले दिन एक घटना याद आई कि अपने इस नगर में संग शाखों का कीतना प्रभाव था। नगर से थोड़ी दूर बाहिर वैसाखी वाले दिन मुसलमान लोग दरख्तों के साथ लम्बी रस्सी डालकर पींग लगाया करते थे तो नगर की महिलाए नौजवान लड़कियां उस पीगों में झुलने के लिये जाया करती थी तो वह झूले को पकड़ कर झुलाते थे। और इस में कई बार छेड़-छाड़ हो जाती थी तो इस वैसाखी को संघ श खों में यह सूचना दी गई कि अपने परिवारों में से कोई भी हिन्दू महिला और लड़की झूला झुलने नहीं जायेगी। उधर वहां लोग झूला लगा कर देखते है लेकिन कोई भी हिन्दू महिला या लड़की वहा नहीं गई।

रजौरी से निकल आने के बाद श्री ओम प्रकाश जी ने जम्मू दुसरी शादी कर ली और तपेदिक की बीमारी हों जाने के कारण उनकी मौत हो गई।26 कार्तिक 2004 की रात्रि को जब मैं गुलाम दीन गुजर के घर छुपा हुआ था तो उसी रात्रि को 1० बजे के ब द वह घर आया तो उसकी पत्नी ने उस से कहा कि शाह जी आये हुये है उनको मैंने वहां छुपा रखा है तो उसने मुझे वहां से निकाल कर चुहले के पास अपने साथ विठाया और मेरे घर वालों के बारे मे पूछा तो मैंने उसको बताया कि मेरे सिवाय मेरे घर वालों में से कोई जिन्दा है। मुझे मालूम नहीं गुलाम दीन से मेरी इतनी ही जानकारी थी। कि वह पाँच रूपये के कपड़े अपने परिवार के लिये उधार ले जाया करता था। और हमारे घर में जो राशन मक्की और गुन्दम रखा जाता था तो उसका सीजन खत्म हो जाने के बाद जो बच जाता था वह नाप तोल करके दे दिया करते थे। और नया अनाज होने पर उस पुराने अनाज के बदले नया अनाज का आटा उतना पिसा कर दे दिया करता था।

तो इस में नगर के साहुकार जो गुन्दम और मक्की अपने आसामायू को जरूरत के समय में दिया करते थे तो नया अनाज वापस लेते समय एक मन का 50 या 60 सेर ये थे। तो गुलाम दीन मुझे कहने लगा जो मक्की मैंने आप से उधार ले रखी थी। उसी कीं जगह नयी मक्की का आटा पिसा कर आपको देने के लिये आ रहा था तो रास्ते में कुछ मुसलमान लीडरो ने मुझे कहां नगर में हिन्दू मुसलमानों का कत्ल कर रहे हैं आप कहां जा रहे हो वापस जाओ। मैं डर कर वापस आया। इसी तरह दूसरे तीसरे दिन जब मैं गुलाम दीन के घर निकल कर मियां गुलाम कादिर

के घर आधी रात को पहुंचा। उसने भी यही कहा कि मुझे जब यह पता चला कि रजौरी नगर पर एक बहुत बड़ा हमला होने वाला है तो आपको पता देने के लिये खयोरा तक पहुंचा। तो वहां मुझे मुसलमानों ने रोका और कहा कि रजौरी शहर में मिर्जा फकीर ममद आदि को हिन्दू ने कत्ल कर दिया आप जा रहे हो। मै भी डर कर वापस आ गया। मिर्जा फकीर मुहमद ठीक-ठाक थे। 2045 विक्रमी के बाद जेहलम (पाकिस्तान) में वहां ही जहा वह रहते थे कुदरती मृत्यु हो गई। इस तरह साधारण मुसलिमों में शरारती इन्सानों ने झुठा प्रचार करके रजौरी नगर पर हमला करवाय'।

जब दूसरे दिन रात को गुलाम दीन वापस आया तो मुझे कहने लगा कि आपको कल सवेरे यहां से निकलना पड़ेगा तो मैंने उस से कहा कि कल रात को आप जब मेरे लिए चारपाई पर बिस्तर लगाने लगे तो मैने कहां था कि मुझे भी अपने साथ नीचे ही खिस्तर लगा दो। क्योंकि और चारपाई इधर तो नहीं हैं अगर रात को कोई यहां आयेगा और कहेगा कि चारपाई पर कौन सो रहा है तो उसको क्या बताओगे। तो आपने कहा था कि यहां कोई नहीं आता। आप चिन्ता नहीं करें। आराम से सोए। अब क्या हुआ कि आप मुझे निकाल रहे हैं तो उसने कहा कि आप जानते है कि महाशय दीना नाथ जो मीदी (वकील) हमारे सात आठ ग्राम की जमीनों और साथ लगने वाले जंगल के मालिक हैं। उनको मारने के लिए घर-२ ढूड रहें है। अगर वह कहीं मेरे घर आ गये आप उनको मेरे घर से मिले तो आप को छोड़ेगे नहीं लेकिन मेरे परिवार और घर को भी जला देगे। इसलिए आपको सवेरे रोशनी होने से पूर्व मेरा घर छोड़ना होगा तो मैंने उसने कहां कि मुझे नौशहरा की सड़क में डाल दे ताकि मैं उधर चला जाऊ पर वह इन्कार हुआ और कहने लगा कि आप बुधुल को ओर चले जाये। उस रास्ते में छोड़ आऊगा और वही किया। चलने से पूर्व मैंने जो शाखा की गणवेश डाली हुई थी और मोर्चे से ही आ गया था। घर जाने का समय नहीं था। उसमें से मैंने निकर और बैलट रख ली और बाकी सब उतार कर उसके घर दे दी। और उसके लड़के की फटी हुई कमीज और ताहमत पहन लिये और उसकी पत्नी ने मुझे मक्की के कुछ दाने भून कर दिये। जब भूख लगी तो यह खाकर पानी पी लेना और साथ ही उस्त्रा लेकर मेरी मूछों की शक्ल ऐसी बना दी। जैसे मुसलमान बनाते है।

सवेरे जब गुलाम दीन मुझे जंगल में छोड़ने गया रात चांदनी थी। इस लिये समय का सही पता न लगा। और अभी हम एक किलोमीटर ही गये होंगे तो रोशनी खुल गई और गुलाम दीन ने कहां मैं वापस जाता हू। जाती बार मुझे यह समझाया गया कि मुसलमानो की आंखों मे खून छाया हुआ है वह कुत्तों को साथ लेकर जगल में हिन्दू को लूट मार के लिए दिन के समय ढूढते फिरते है। तो दिन के समय अगर आप की तरफ आ जाते है आप की नज़र पहले पड जाती है तो आप मुर्दे की तरह किसी झाड़ी में लेट जाना तो इससे आप बच जाओगे। 10-11 बजे के करीब एक बक्करवालों का ग्रुप मेरी तरफ आया। मैंने उन्हें पहले देख लिया और जैसा उसने मुझे कहा था। उसी तरह मैं झाडी के पीछे लेट गया। और वह आगे चले गए। मैं उनसे बच गया। फिर मैं दिन भर वहां ही छुपा रहा। वह बहुत ऊची जगह थी वहां से मुझे अपना पूरा नगर नजर आ रहा था। नगर मे जहां हमारे मोर्चे थे उन सब मकानों को आग लगाई गई थी। उससे काला धुआं जो निकल रहा था बहुत भयानीक था और उसने सारे आसमान को भी अपने से छुपा लिया था।

सारे नगर में मुसलमान लूटमार कर रहे थे। हजारों की तदाद मे सामान सिर पर उठाये हुये अपने घरों की ओर जा रहे थे। यह सब देखकर मेरा दिल कांपा और मैं थोड़ी दूर परे जा कर बैठा। पहली ओर तो अन्धेरा होने वाला नजर आ रहा था। लेकिन दूसरी जगह अभी धूप थी। क्योंकि वह Side नाची थी। सूर्य भगवान उस्सी Side उतरने वाला था। अब मैं दिल में यह सोचकर कि मियां गुलाम कादिर के घर जो रहताल में रहता चलता हू दिन को कुछ नहीं खाया पिया था और मेरा मुह सूख गया था। बोला भी नहीं जाता था और जंगल इतना घना था कि नीचे उतरने के लिए अन्धेरे में रास्ता नहीं मिलता था और कांटेदार झाड़ियों को पकड़ कर नीचे लुढ़खता और गिर जाता पांवों में जूता नहीं था।

लेकिन मेरे हाथों में उस समय कांटे हीं चुभते थे क्योंकि शरीर बेजान सा हो गया था। इसी हालत में उसी जंगल के मध्य में जन्गलात महकमे ने जो सड़क बनाई हुई थी उस तक पहुंचा और उसी तरह लुडता 2 कांटों भरे जंगल से मोटर रोड़ पर पहुचा और पहुंचते ही मुझे नारे लगाते हुये और हाथों में शस्त्र लिये हुये मेरी ओर नीचे से आ रहे थे। वहां छुपने की जगह नहीं थी।

मैं घबराया ईश्वर को याद किया और गुलाम दीन की बात भी याद थी। ताहमत बांधी हुई थी उतार कर सिर और बाकी शरीर को ढांप कर बैठ गया उनकी नज़रों से बच गया। वह आगे निकल गये। मैं सड़क के नीचे उतर कर तवी नाले में पहुंचा थोड़ा पानी पिया ज़बान तर करके मक्की के भुने हुए दाने मेरीं जेब में थे मैंने मुह में डाले लेकिन चबाने की ताकत नही थी।

आगे बड़ा नाले को पार करते हुये रजौरी नगर के बीच जो महाराजा हाटू का मन्दिर कहा जाता है के पास पहुंचा। वहां कुछ खाली चारपाईयां पड़ी थी मै उन्हें देख कर डर गया लेकिन वह उन्होने लूटमार कर रखी हुई थी। उनसे आगे बढा तो आगे तो वह रस्सों और लकड़ी के फट्टे डाल पुल बना हुआ था। उसके नीचे से गुजरने पर पानी में गिर गया। सर्दी का मौसम और रात की ठण्ड में भीगे हुए कपड़े इनकी परवाह न करते हुये आगे बड़ा तो और उचाई आई वहाँ आग जल रही थी तो सोचा वहां कुछ व्यक्ति आग के पास बैठे होगे। वह रास्ता छोड़कर नीचे शल्ली के खेतों से आगे बड़ा उसके साथ ही महता जगत सिंह जी की दुकान थी। वहां से कुत्ते भौंकने लगे उधर के रास्ते को छोड़कर दूसरे रास्ते को भागा और मियां गुलाम कादिर के घर को भूल कर किसी दूसरे के घर चला गया लेकिन उनके घर की मुझे निशानी याद थी। मै और मेरी पत्नी किसी ईलाज के विषय में गीया था उनके मकान की छत पर सोया था और उन्होंने दरख्त काट कर उन दरखों से ऊपर चढ़ने का रास्ता बनाया था। मैने अबदुलगनी नामी को आवाज लगाई कुत्ते भौकते हुये मेरी ओर आये। इतने में अबदुलगनी भी बाहिर आया और पूछा कौन है। मैंने उससे कहा आपने मेरी आवाज नहीं पहचानी फिर उसने मियां गुलाम कादिर को आवाज लगाई बाहिर पिशोरी शाह आया है तो उन्होंने कहा अन्दर ले आओ। मै उनके पास चला गया बातचीत शुरू हुई तो उन्होंने भी यही कहां एक दिन पहले भी आपकी दुकान पर बैठा रहा कि आप से यह कहू कि ग्रामों में हिन्दू के खिलाफ क्या सोचा जा रहा है दिन भर लोगों के आने जाने के कारण बात न कर सका।

फिर जिस दिन रजौरी पर हमला हुआ उसी दिन मैं एक घोड़े को साथ लेकर आप के परिवार और निजी समान को लाने की नियत से टयौरा पहुंचा तो वहां मुसलमानों ने रोका और कहां वहां हिन्दू मुसलमान को मार रहे हैं और आप उनको लेने के लिये आए हो वापस चले जाओ। मै डर कर वापस घर आ गया।

उन्होंने कहा कि आप का चार सौ हमें देना आप इस वक्त भी ले सकते है। यह बुरे दिन सबो के पर आ सकते हैं आज आप पर है कल हम पर भी आ सकते है। हम इतने बुरे नहीं कि हम आप पर वार करेगे। इसके बाद मेरे साथ उन्होंने बड़ी हमदर्दी की जिसका जिक्र आगे करूगां। दिन को मैं उनके अन्दर ही रहा उनके परिवार से ही एक मासत्रीमम्द शफी और अबदल गनी जो लूट-मार करने के लिये जाते थे। शाम को मैंने उनको कहा कि आप रजौरी नगर जाते है यह भी पता आप से चला है कि जो बचे कुचे हिन्दू है उनका शहर में बसाया जा रहा है तो आप उन परिवारों में जा कर मेरे परिवार का पता लगाये कि जो महिलाए और लड़कियां किराए के कैम्प में थी उनसे कोई वापस नगर में अये है और उनमें क्या पिशौरी शाह के घर का कोई व्यक्ति है जब वह दूसरे दिन वापस आये तो मैंने उनसे पूछा वह कहने लगे आज याद न रहा कल पता करेगा।

दूसरे दिन जब वह वापस आये तो उस से पहले वह मन्धू नामी मुसलमान के घर जो नगर में था और उसका मालिक वहां नहीं था। उसी मकान में ज्यादा हिन्दू बसे थे वह वहां गये और उन्होने मेरा नाम लेकर पूछा उसके परिवार का कोई व्यक्ति यहां है उस समय मेरी पत्नी और सगे सम्बन्धी उनके पास आ गये तो मेरे बारे में पूछने लगे कि वह कहां है कुछ सही तो नहीं बताया मगर वह अपने पते में है दूसरे दिन जब सुबह हुई तो मेरे छोटे बहनोई श्री मनोहर लाल सराफ जिनका वह सारा ग्राम उनके परिवार की ही मलकियत था बगैर किसी डर खोफ के उनके घर आ पहुचे और उनसे मेरे बारे में पूछा तो उन्होंने कहा वह अन्दर हीं है उसने कहा उनको बाहर बुलाओ जब मुझे बोला तो मैंने कहा उनको अन्दर लाओ। उनका भाव था मैं इतनी दूर से गया हू। कि आप बाहर आने से डरते हैं फिर मैं बाहर उनके पास आ गया उनसे गले मिला। बाकियों की खैर पूछी जो वहां पहुंचे हुंये थे। उनके बारे में पता चला और साथ ही यह भी कहा कि नबाब दीन नम्बरदार ने यह कहा था कि पिशोरी शाह एक नाले के गहरे पानी में से बाहर आ रहा था तो उसे हमने गोली मारकर हलाक कर दिया था। जिस से हम सब बडे दुखी थे। और मैंने अकेले ही उस नाले के किनारे जितनी लाशे पड़ी थी उन के मुह देखकर आप का पता नहीं चला। मैंने घर आकर सबको तसल्ली दी की आप ठीक है और जब मैंने इन लोगों से आपका नाम सुना तो मैं

समझ गया कि आप जिन्दा है। मैं अभी जा के पता करूगां तो फिर वह मुझे कहने लगे कि चलो नगर चलो वह आप की आने की आस लगाये बैठे है मेरा मन जाने के लिये तैयार नही था और जाना भी चाहता था। अन्त मे मैंने जाने का निश्चय किया और साथ ही मियां अबदुला और अनायतउला को बुला भेजा वह दोनों आ गये। उन दोनों के हाथों में हथियार भी थे गर्म कम्बल और मेरे पहनने के वस्त्र भी थे तो वह मेरे साथ नगर में चलने के लिए तैयार होते आए तो उनके साथ मैं और सराफ जी नगर की ओर चल पडे और अन्धेरा होने से पूर्व वहां पहुंच गये। जिस जगह मेरा परिवार और सम्बन्धी रह रहे थे जा पहूचे आपस में मिलने के बाद जब मियां अबदुला और ईनायतउला वापिस जाने लगे तो मैंने अपने परिवार वालों से पूछा कि किसी के पास कुछ रूपये बचे ह क्योंकि मैंने पांच बकरों की नियाज देनी हुई मानी है तो 125 रुपये देने है इनको तो कृष्ण लाल जी मोदी बोले कि मेरे पास रुपये हैं जिसके लिये आपको जरूरत है ले लो और मैंने उनसे 125 रुपये लेकर मियां अबदुला को दे दिये और उनको कहा कि इनके बकरे खरीदकर मेरी ओर से नियाज बाँटना और वह लेकर चले गए।

इस तरह अब हम सब मिल जुल कर रहने लगे। वहां जगह की तंगी थी इस लिउ और कुछ खाली मकान देखे और उनमें अलाहिदा-2 रहने लगे और हमारी देखभाल के लिये मिर्जा फकीर मम्द आते जाते थे। हमें राशन आदि भी मिलना शुरु किया। उसकी बाट के लिये श्री जगदीश राज जी अनुढठ वाले जिया लाल जी रोहतडा श्री कृष्ण कुमार जी और मेरी ड्यूटी लगी थी। इस तरह हमारे दिन रात गुजरने लगे। जब कोई नया आदमी अपने मे आता या तो मुसलमान मिलता तो उससे अपने लोगों के विषय में जानकारी मिलती कि कौन कहा गया या मारा गया या कहां रह रहां उस समय मेरे साथ श्री कृष्ण लाल जी मोदी और उनके बड़े भाई की लड़की उरमिला और भतीजा काला और मेरा भाई मंगा राम चुनी लाल का परिवार और राज भाजां जगदीश राज मनोहर लाल जी सराफ रह रहे थे उस समय पुछ से वहां के हिन्दू वासी हवाई जहाज के जारेये जम्मू और दिल्ली जा रहे थे। हम भी ऐसा मन में सोचते थे कि कभी हम भी कहीं हिन्दू आबादी में पहुंचेगे।

एक दिन प्राता मिर्जा फकीर महमद आये और कहने लगे कि जब किसी कौम का पतन होता है तो वह जिमेवारीयों को भूल जाती है कल से सरदार बुध सिंह फोटो ग्राफर जो बुधल में काम करते थे । उस समय रजौरी में थे उनकी भतीजी की मृत्यु हो गई है और आपका कोई आदमी उनके सस्कार के लिये नहीं पहुंचा । सरदार बुध सिंह जी जम्मू पहुंच गये थे । उन की दुकान आजकल मुयनसिपुल मार्किट नजद J P. चौक में है उनके कहने के बाद हम सभी स्वयंसेवक इक्ट्ठे हुये और उनकी माता जी का शव जहां पड़ा था उठा कर तवी पार ले गये । उस समय के मुताबिक जैसा हो सकता था सस्कार किया । अब वहां बेतोर एक राजवाड़ा के मिर्जा महमद हुसैन परोठ वाला ने हकूमत चलानी शुरु की और नगर में मिर्जा मतीउला को तहसीलदार लगाया जिनकी कोट मोजूदा सीशन जज आफिस में लगती थी एक दिन मैंने मिर्जा मतीउला के Court में एक दरखास्त दी कि मेरे परिवार को कोटली जरारलांमे जो पीर बढेसर के निकट जाने की आज्ञा दे लेकिन उन्होंने यह कहा कि मैं नीचे इजाजत नहीं दे सकता । ऊपर जा सकते है । मैंने उससे कहा कि कोटली जरारलं में मिर्जा हबीबउला मेरे अच्छे परिचित हैं उनके घर में पहले भी हमारा परिवार रह चुका है लेकिन वह न माने ।

इसी दौरान महमद दीन धोबी जो हमारे घर के कपड़े धोया करता था । एक बहुत बड़ा धुले हुये कपड़ो का गुठा ले आया । कहने लगा यह कपड़े आप के है इनको सम्भालो उस समय कपड़े की धुलाई और प्रेस सो कपड़े के लिये तीन रुपये थी वह सब कपडे मैंने जिन-2 को जरूरत थी बांट णिये । उन्हीं दिनों में महाराजा हरि सिंह की फौज के भागे हुये सुधन सलाई और पठान रजौरी शहर के उजडे हुये मकानों में दबा हुआ सोना और चांदी व चादी के रुपये ढूढने के विए आ गये और हमें उनके द्वारा कई तरह की तकलीफें मिलने लगी अब दिन के समय महिलाओं और लड़कियों को ऐसी जगहों में छुपाना पड़ता था जहां वह न पहुंच सके । फिर रात को उन्हें निकाल कर लाना राशन पानी इकट्ठा करना रोटी पकानी और खानी दूसरो दिन के लिए रोटी साथ लेकर अपने-2 ठिकानों पर छुप जाते थे । दिन भर वह लोगों के मकानों में घुस जाते और खुदाई कर के उनको सोना, चादी, चांदी के रुपये जो भी कुछ मिल जाता लूट लेते और अगर हम में से कोई मिल जाता तो हम से भी सोना चांदी की मांग करते थे और

जिस से जो मिल गया ले लेते थे एक दिन हम सब सब ज जी के नीचे जहां केले के दरख्तों का घना भाग था जाकर छुप गये और हमारा ख्याल था कि इधर कबाली लोग नहीं आयेंगे। पर वह उधर दिन को आ गये। हम सब जो पुरुष ही थे एक लाईन मे खडा कर दिया और कहने लगे कि शेख जो आपके पास है हमको दे दो यह हमारा हक है और तलाशी शुरु कर दी तो मेरे भाई साहब सीता राम जी के पास कुछ सोना और कुछ नोट बचे हुये थे। अपनी कमर के साथ गांधे हुये थे उनको भी मैंने कहा और बाकी जिनके पास भी कुछ था उनको भी कहा वह चीजें निकालकर अपने हाथों में रखो और लुटेरों की नजर बचा कर हाथ पीछे करके पीछे वाली घनी झाड़ियों मे फैंक दी तो सब ने ऐसा ही किया और सारा बच गया। बाकी जो कुछ तलाशी में निकला उस से वह ले गये।

मेरे पास सात पैसे आमे के थे। मैने वह हाथ में रखे और कहा खां साहब मेरे पास यही है वह भी उठाकर ले गये उसी दिन हमारे नगर से दो हिन्दू लडकियां साथ ले गये और हम सब ने मिर्जा फकीर अहमद से मिल कर वह लड़किया वापस लाई इसी तरह एक दिन उन्हीं मुसलमान सुधन की एक टुकड़ी और आई तो उस दिन हमने सब लड़कियों को महाराजा हाटू वाले मन्दिर में जो तवी के ऊची पहाड़ी पर बना हुआ हैं छुपाई हुई थी उसी मन्दिर की ओर बढ़ती हुई टुकढ़ी देखी पता नहीं उनको कैसे पता चला और हमें कोई भी उन जालिमों से बचाने वाला वसीला नहीं सुतझा था आखिर ख्याल आया कि नगर में चौधरी नीआयीत उला मुल्क आया हुआ है। जो मेरा अच्छा परिचित था। और अच्छी विचार धारा का था हम सब उसके पास पहुंचे और उनसे कहा कि ग्राम में से लाला सावन मल दरार वाले की लड़की जो श्री कृष्ण लाल जी मोदी के साथ व्याही हुई थी। वह हाता तहसील में जहर खाकर मारी जा चुकी थी उसी का नाम लेकर चौधरी साहब से यह कहा कि उस लड़की के साथ नगर की ओर भी बहुत सी लड़कियां उस मन्दिर मे छुपी हुई है यह सुधन फौजों की टुकड़ी भी उस मन्दिर की ओर जा रही है उन लड़कियों की इज्जत बचाने के लिये मजबूर हैं आप इस भारी मदद करो। उन लड़कियों में आपके ग्राम मे हमारी भी एक लड़की है इस लिये हम सब की इज्जत बनाना आपका फर्ज बनता है।

हमारी यह बात सुनते ही अपनी राईफल हाथ में लेकर और कुछ लोगों को साथ ले कर मन्दिर की ओर दौड़ा उसने उन सब सुधन फौजी को यह कहकर मन्दिर में नहीं घुसने दिया कि लूटमार के लिये सारा नगर खाली पड़ा है यहां मन्दिर में आपके लिये क्या रखा है। और वह वहां से चले गए इस तरह उन सब बेवस लडकियों की प्रभु कृपा से मन्दिर में छुपे होने के कारण भगवान कृष्ण ने इज्जत बचाई । इन हालात में हमारे लिये नगर में भहना मुश्किल हो गया। दूसरे दिन जब हमने महिलाओं को किसी एक मुसलमान के कमरे में बन्द करने का सोचा तो जब वह उस कमरे मे दाखिल होने लगे तो मेरी पत्नी के पास जो 38 सौ 11 रुपये के नोट और लगभग 30 तोले सोना था नीचे गिर गया जो मुसलमान व्यक्ति साथ जा रहा था उसने कहा आप मेरे दोस्त की बहन है इसलिये मेरी भी बहन है और आपकी कोई भी चीज मेरे लिये सुअर का बाल है तब उन्होंने वह रूपये और सोना उस व्यक्ति के हवाले कर दिया । इसी तरह कुलदीप राय अन्दरुठ वाले ने सोने के दो कड़े को दिया शान्ति प्रकाश नडियाल ने इनके पास जितने सोने के जेवरात थे वह सभी और श्री अमृतलाल रोहतडा ने भी सभी जेवरात उसी व्यक्ति को दे दिये बाकी सभी हिन्दू परिवारों में से जिनके पास सोने के जेवरात या रुपये थे। जिनमें श्री आनन्द सरुप खन्ता का परिवार भी शामिल था मुन्शी जमालउद्दीन को दिया और हम सभी ने मुन्शी जमालद्दीन के पास इक्कठे बैठ कर यह फैसला किया कि हम छोटे ग्रुप बना कर गांवों में मुसलमानों के परिवारों में चल कर रहते है । ताकि हम सुधन फौजी और काबिलों की रोज-२ की लूटमार से बच सकें ।

इसी में मुन्शी जमाउद्दीन की भी यही राय थी। उसी रोज दिन के समय अपने भाई सीता राम जी और उनके लड़के रविन्द्र नाथ को शेरदिल धनीदार के घर भेज दिया और उनको यह कहां कि रात्रि को में अपने परिवार और सामान सहित शेरदिल के घर आउंगा। आप उनको कह देना कि हमारे साथ एक आदमी जाने के लिये तैयार रखे जो हमे उसी समय सरदार खां पठान के घर धनोर जरालां छोड़ आये इसी तरह बाकी परिवार भी बाहर गांवों मे चले गये। जो इस प्रकार है । श्री नरसिंह दास (वकील) उनकी दो लड़ाकयों और एक लड़का, मुकन्द लाल मोदी उनकी पत्नी व एक लड़की, धनीराम (अरजीनवीस) ज्योति प्रकाश जी कंगाल और उनके दो भतीजे सराफदीन मलिक टोपवाले के

घर और शन्ति प्रकाश जी नडायाल वाले उनकी माता और उनके भांजे वीरेन्द्र, यशपाल और उनका बड़ा भाई, अशोक कुमार, प्रमोद चदर और मुकन्द लाल अब्दरूठ वाले के दोनों लड़के कुलदीप राज और सत्य पाल जो मेरे मांजे है और शन्ति प्रकाश की बहन तेज दुलारी और सविन्री देवी आदि कीरपा राम शेख जो पहले का मुसलमान हो गया था। जिसका नाम अब्दुल अजीज शेख था।

मास्टर इब्राहिम सेठ के घर में रेकीबांन के घर चले गये और श्री मुकन्द लाल चुगा उनकी दोनों लड़कियां चन्द्रकांता और सुन्दरकाँता, मिर्जा अब्दुल हफ़ीज नम्बरदार ठण्डकोड के घर चले गये और बाकी महलाए उनके बच्चे जिनके साथ कोई पुरुष नही था। श्री मंगाराम मोदी के साथ गोरधन कैम्प में जिसका इर्चाज मेजर असलम पठान था और साथ ही मेजर असलम ने एक छोटा हस्तपाल भी चालू किया। जिस की देख-रेख श्री सोहीन लाल जी केहला और जगदीश राय जी अरजीनवीस करते थे। जो हिन्दू का कैम्प वहाँ बनाया गया था। जिस में जरूरत के वक्त थोड़ी बहुत दवा आदि मिलती थी और उस कैम्प के साथ मेजर असलम का वर्ताव बहुत अच्छा था। मुजाहिद मुसलमान की जो फौज बनी हुई थी वह फौजी वीरों की गोलियों से जख्मी हो कर उसी हस्पताल में आते थे। उनका इलाज व पट्टी आदि भी सोहन लाल और जगदीश राय जी करते थे। इसी तरह मेरा परिवार रात्रि को अपना समान आदि उठाये हुए शेर-दिल के घर पहुंचे। वहां से भाई सीता राम और उनके लड़के रविन्द्र नाथ को साथ लिया और शेरदिल ने अपने लडके को रास्ता दिखाने के लिये साथ भेजा आधी रात के बाद वहां हम सरदार खां पठान के घर पहुचे रात और दूसरा दिन हम वहां ही रुके। तीसरे दिन मिर्जा रहमतउला ने हमें खुने के लिये अपने घर बुलाया। वह और मैं रजौरी स्कूल इक्ट्ठे पढ़ते थे। वह फुटबाल का बड़ा खिलाड़ी था और फौजी सुवेदार का लड़का था अब हम इस सोच में पड़ गये कि रोटी खाने इसके जाये ना जाये। उसका कारण यह था कि ऐसा मांस जिसको हम नहीं खाते वह परोस दे उस समय हम क्या करेगे। अब जाना वह भी मुशकिल नहिं जाना वह भी मुशकिल आखिर दिल करा करके महिलाओं को नहीं भेजा जो पुरुष थे हम चले गये उनके घर महुंचने पर रहमतउला आया उसने चारपाई पर बिठाया और बातचीत करने लगा कहा कि आज मुसीबत आप पर है कल हम पर भी आ सकती

है पता नहीं आपके मन में क्या-2 विचार आये होंगे। मैंने आप के लिये सिर्फ मीठे चावल और सब्जी बनाई हैं। वह सबने मिलकर रोटी खाई और वापस आने से पहले उस परिवार का धन्यवाद किया जिससे हमें डर था उससे बच गये । सरदार खां के घर जाने से पूर्व हमारे कुछ परिवार इकट्ठे मिलकर जिनमें 40 व्यक्ति थे और उनमें बोधराज जी और पृतपाल जी सोकड वाले भी हमारे साथ थे।

वहां हम सब फिरोज दीन S/o सुल्तान अहमद गुजर अंति (फतेपोर) के घर चले गये । उसने हमें एक अपना मकान खाली कर दिया और पानी का चश्पा मकान के साथ ही था और राशन हमें फरी नगर से मिल जाता था। इसी तरह हमने 10, 12 रोज अच्छी तरह काटे और हमारे साथ ही नीचे खेतों में मास्टर दौलत राम और मास्टर रघुनाथ दासे जी रहा करते थे। एक दिन शाम को जब सुरज छुपने वाला था तो फिरोजदीन मुझे अपने घर से थोडी दूर एक पहाड़ की उचीं चोटी पर ले गया और उसने यह कहा कि आप सब लोग मेरे घर बेशक काफी समय तक टिके रहते मुझे कोई तकलीफ नहीं थी परन्तु मिर्जा काला जराल जो मेरे घर के निकट ही रहता है। मुझे आकर कहा है कि यह लोग जो आप ने अपने घर में बसाये है इनके पास काफी धन दौलत हैं या तो वह धन दौलत हमें दे दे या यहां से निकल जाये नहीं तो मकान समेत मैं इनको जला दूगां।

इससे हमें बहुत परेशानी हुई और फिरोजदीन ने भी कहा मैं आपकी कोई मदद नहीं करूगा । इसी बीच में सफदर अली बकरवाल ने एक बहुत बड़ा गर्म पट् जिस में 10 15 लोग सो सकते थे भेज दिया वह कृष्ण लाल जी मोदी को अच्छी तरह जानता था और वह भी हमारे साथ ही रह रहे थे सफदर अली के तीन पुत्र थे जिनका नाम बहादुर अली शेर खां और समुदुखा थे। यह बहुत अच्छा परिवार था और इन सबके साथ 1942 से 1967 तक अच्छा लेन देन चलता रहा। इसी तरह काला खां ने जो धमकी दी थी उसके डर से हमने इस जगह को छोड़ना ही ठीक समझा । दूसरे दिन सवेरे दो भाई सीता राम और शान्ति प्रकाश जी नड़ियालयाई को मिर्जा फकीर महमद के पास इसी विषय के बारे में सलाह करने के लिये राजौरी भेज दिया और साथ ही हमारे पास जो सोना या रुपये थे। वह भी रजौरी में भेज दिये।

वह दोनों चीजें श्रीमति लाला मनी राम जी दरहाल वाले और बाबू दुर्गा दास जी शर्मा के परिवार जो उस समय रजौरी नगर मे तहसीलदार साहब के कवाटंर में रहते थे के पास छोड़ आये और मिर्जा फकीर महमद ने यही राय दी कि आप उस स्थान को छोड़ कर रजौरी आ जाये तो हमने उसी दिन रात को तैयारी कर ली और सुबह चांदनी रात थी तो सारा सामान आदि बांध कर रजौरी रघुनाथ मन्दिर में रोशनी होने से पहले पहुंच गये और मिर्जा फकीर महमद ने हमें इलाहीयया मकान रहने के लिये दिये उन्ही दिनो म भारतीय फौज के हवाई जहाज बमबारी के लिये आते थे उस समय नगर में दो तीन सौ हिन्दु ही गिनती के रहते थे और खाना पकाने के लिये आग जलाई जाता थी तो उस धुआं को देखकर हवाई जहाज बमबारी करते थे जिस से कुछ बच्चे और महीलांए दब कर मारे गये और उनमे से श्रीमती बाबू सतपाल मेनीजर बुटाराम बैंक रजौरी अपने दो बच्चो सहित बमबारी के कारण मकान गिरने से दब गये थे।

जब यह पता चला तो हम सब स्वयसेवक वहा पहुंचे दोनों बच्चे बिल्कुल दबे हुये थे परन्तु उनकी माता का मुह सामने था। वह पुकार रही थी कि मेरे बच्चो को बचाओ जल्दी-२ वह मलबा हटाया और श्रीमती और उनका एक बच्चा ठीक हालत में बच गया पर दुसरा बच्चा जो नीचे बहुत दुरी पर था। जब निकाला तो वह जिन्दा नही था। हम सबसे हमेशा के लिए बिछुड़ गया बाबू सतपाल पहले दिन ही जब हमला हुआ मारे गये थे। जब भारती सेना दोबारा रजौरी पहुंची तो उनकी पत्नी और बच्चे दिल्ली अपने रिशतेदारों के पास चले गये उसके बाद हम उनसे नही मिल पाये जैसा कि पहले लिख चुके है कि मिर्जा रहमत उल्ला घनोर वाले से घर खानाखा कर सरदार खां के घर वापस आये तो सरदार खां मुझे बुला कर अपने घर मे बाहिर ले गया और उसने कहा कि जब तक मैं जिन्दा रहता आप मेरे घर बैठ रहते और आप की मुसीबत खत्म होने पर यहां से जाते तो मुझे खुशी होती।

लेकिन मेरी मां और पत्नी बहुत सख्त ख्याल की है और वह कहती हैं कि आपने जो शोख घर में बसाये है इनके साथ जो नौजवान लड़कियां है। इनकी शादी मुसलमान लड़कों से कराये और यह सब लोग गौ मास खाये तब यहां रह सकते है। नही तो इनको निकालो और मैं इस वजह से मजबूर हु। दुसरे दिन प्रात: मैंने भाई सीताराम को अनायतउल्ला के घर जो पास ही रताल

गांव में रहता था भेजा और उसको साथ लेकर दीन महमद निजामदीन S/o दीदार बख्श के घर गये। यह इनायत उल्ला वही है जिसने मियां अबदुल के साथ अपने परिवार मे रताल से रजौरी कार्तिक २००४ हमले के बाद पहुंचाया था। दीन महमद और निजामदीन उस समय घर मिले और उन्होंने अपने घर में ही हमारे परिवार को रखने मान लिया और यह दोनों भाई अपने घर में ही छोटी सा दुकान चलाते थे। उसके लिये सामान मेरी दुकान से लाया करते थे। जब वह वापस आये तो उसी रात को हमने वहां जाने की तैयारी कर ली। खाना खाने के बाद जो थोड़ा बहुत सामान था। उसको बांधा और वह सामान सरदार खां ने उठाया। रात के समय में ही हम सब बडानों ग्राम की ओर चल पड़े। उस समय मेरे साथ भाई मंगाराम जी की पत्नी श्रीमती शांति देवी और उनके दोनों लड़के श्री सतपाल और जोगिन्द्रपाल जी साथ थी और साथ ही मेरा भांजा श्रीअमर नाथ जी सुपुत्र जगदीश जी नौशहरा वाले साथ थे लेकिन भाईमंगाराम की छोटी लड़की राममुर्ती हमले के समय ही कही बिछुड़ गई थी। उसको परजाई जी हमेशा याद करते रहते थे और उनको शक था कि वह किसी बकरवाल परिवार में है। इस लिये जब भी कोई बकरवाल मिलता तो वह जरूर उस बच्ची के लिये पुछा करती थी। लेकिन कहीं भी उसका पता न चला 1962-63 में जब मैं दुबारा रजौरी में भाई मगाराम और लक्षमणदास के साथ रजौरी में दुकान चलाते थे तो मै कही माल खरीदने के लिये अमृतसर गया हुआ था तो बाद में श्री निर्मल कुमार कगाल ने आकर भाई मंगराम लक्षमणदास को कहीं एक नौजवान हिन्दु लड़की जिसकी शादी एक ब्राह्मण नौजवान से हो चुकी थी। जिस का नाम श्री चुनी लाल शर्मा है। वह यह कहती है कि मैं 1947 में जब मै 6 साल की थी तो अपने परिवार से बिछुड़ गयी थी।

इस परिवार वालों ने मुझे पाला पोसा और अब बड़ी होने पर शादी हो गयी और साथ ही यह भी कहती है कि हमारे मकान के बाहिर दरेक का वृक्ष था। साथ में कुमार जो मिटटी के बर्तन बनाते थे। उनका घर में थन्ना मण्डी में रहती थी। लेकिन हमारे ग्राम का सही नाम जंजोट कन्दो था। यहां उस बात की समझ नही पड़ती थी लेकिन फिर भी भाई मंगाराम और लक्ष मणदास, निर्मल कुमार जी को साथ लेकर उस लड़की को मिलने उसके घर गये। उनके साथ भी उसने यही बताया तो थना मण्डी का सुनने पर वह भी धबराते थे। परन्तु फिर भी उन्होंने लड़की की शक्ल और उम्र की वजह से यह तय किया कि यह हमारी ही लड़की है।

जब में वापिस आया तो मुझे भी सुनाया और यह सब ठीक था। इस तरह से 15 साल से बिछड़ी बच्ची फिर अपने परिवार से मिली और उसने यह भी जाहिर किया कि मैं अपने भाई राजेन्द्र की दुकान से जो रजौरी में थी। चूड़ियां खरीदने जाती थी। मेरी लड़की सरोज को कहा करती थी कि आप मुझे ऐसी लगती थी जैसे मेरी बहन है लेकिन फिर भी जो परदा था नही उठा और जिस परिवार में राममुर्ती की शादी हो गई थी उसी परिवार की एक लड़की सरोज की सहेली थी और सहेली की मां चुनीलाल जी की बहन थी। यह दोनों वह इक्कठी खेलती थी।

आज कल वह अपने परिवार के साथअच्छे माहौल मे जीवन बिता रही है। परन्तु हमारी परजायी जी राम मुर्ती को ना मिल सकी। उसको याद करते वह भी हम से बिछड़ गई। उनके साथ बाद में क्या बीता यह आगे लिखुगां। एक माह के करीब वहां हमने बुढानो से आगे नड़ियां में फिरोजदीन खोजा की दुकान थी। उसमे हमें तीन सेर रुपये का साबुन और चार सेर रुपये का नमक दो आने की माचिस की डिबिया और बालन दो गडी रुपये के मिलते थे और बाकी मुसलमान उनके कहते आप इनकी मदद करते वह मेरी परिचत था। इसलिए उन लोगों की बातों का उस पर असर नही था। जिस मकान में हम ठहरे थे। उसके साथ ही मेरे एक कलास का लड़का मिर्जा महमद इकबाल के खेत थे। उस में एक मकान बनाया हुआ था। उसमें वह रहते थे। एक दिन उनकी पत्नी अपने साथ कुछ राशन लेकर जहां हम रहते वहां आये और कहने लगी कि मिर्जा साहब ने यह राशन आप के लिये भेजा है। साथ ही कहा था कि मुसीबत के समय बीत जाते है लेकिन किसी के साथ अच्छा किया व्यावहार याद रहता है। इसलिए यह मेरा मकान साथ ही है तो आप अपने परिवार के साथ लेकर यहां आया करे और जिस चीज की जरूरत पड़े ले लिया करो और 1952 के बाद जब वह MLC बने तब भी उनका व्यवहार मेरे से पहले जैसा था। एक दिन रात को दीन महमद के घर आग जला कर हम बैठे थे तो वहां दो बकरवाल आ गये और वह हम वाकियों को तो न पहचान सके परन्तु मेरी परजाई श्रीमती शांति देवी पत्नी श्री मंगाराम जो के कपड़ों को देखकर कहने लगी कि काल सिरी शेखों की लगती है। इसी तरह वहां एक बुजा नामी बकरवाल था। वह हमें मिलता था और साथ ही यह भी कहा करता था कि शाह गयराना नही। यह मुसीबत बीत जायेगी और परजाई शांति देवी जी जिनको अपनी छोटी लड़की के विषय में ध्यान था किसी बकरवाल कुम्बे में

है। उस बुवा बकरवाल से कहती थी कि मेरी लडकी ढुढ़ो। लेकिन वह उस मे सफल नही हुआ था।

मौलवी सुना उल्ला नामो एक हकीम था जो मुझ से देसी दवाईया लाया करता था। उसका व्यवहार भी हमारे साथ अच्छा था। सुबह हवेरे उसके घर में कुरानस्रीफ पड़ने जाया करते थे। उसने हमें कलिमा नमाज आदि सिखाया था। कभी-२ रोटी भी खिला कर भेजते थे। अगर वह किसी की पत्र लिखते तो उसमें रजौरी का पुरा नाम राम पुर रजौरी है। लेकिन वह उसको सलामपुर रजौरी लिखना शुरू वार दिया था। जब हमें पुरानी याद आती थो तो दिल बहलाने के लिये साथ ही साहब दीन नामी गुजर रहा करता था। उसका घराट था। उससे मक्की का आटा ताजा लाया करते थे।

उसका व्यवहार भी हमारे साथ बड़ा अच्छा था। वह भी हमारी मन की शांति के लिये कहा करता था कि यह मुसीबत का समय जल्द खत्म हो जायेगा। इसी तरह कभी-2 साथ के गांव रेकीवान चले जाते थे। वहां शांति प्रकाश नडियालावी का परिवार था। उसी परिवार में मेरे दो भांजे कुलदीप राय सतपाल अपनी चाची तेज दुलारी जो श्री शांति प्रकाश की छोटी बहन थी मैं मिलने जाया करते थे। एक दिन जब हम वहां से वापस आ रहे थे। उस रास्ते में शली के खेत पड़ते थे। सीता नामी एक हिन्दू लड़की जिसको हमले के वक्त एक मुसलमान कश्मीरी अपने साथ ले गया था। पता चला कि वह वहां है और वह अपने परिवार के साथ हमारे मकान में किराया पर रहती थी उसको मिलने चले गये। उससे सारी मुसीबत की कहानी सुनी और अन्त में वह कहने लगी। आप रोटी खा के जाओ हमने बहुत कहा कि हम वही खाना खा लेकिन उसने बहुत मजबूर किया। रोटी पका के लाने में बड़ी देर कर दी। उससे हम शक पैदा हुआ कि कही यह गौ मास ही नही बना केले आये तो फिर हम क्या करेगे परन्तु जब उसने बडी देरी से बाद रोटी ले लाई तो उसमें सब्जी के जगह अण्डे थे। वहां से खाना खाने के बाद हम सब घर पहुंचे उस समय जो गांव में हिन्दू रह रहे थे। किसी जगह इक्कड़े जिस से बैठते थे। जो जानकारी हासिल होती थी। वह में नीचे लिख रहा हुं। श्री अन्तराम जी कहैला अपने सपुत्र जियालाल जी, बन्सी लाल जी, और ब्रजमोहन जी के साथ चौधरी नांड़ में रह रहे थे। इनके छोट लडके

डाक्टर वरीन्द्र जी अपने छोटे भाई के साथ अपनी परजाई जसवनती की देख रेख मै जम्मू पहुंचे ।

इस समय हम दीन महमद बठी बडानू वाले के घर रह रहे थे । एक दिन रात्री को मेरा Brother-in-Law रवीन्द्र जिसकी उस समय उम्र तो पौने साल थी । दीन महमद की रसाई में आग तप रहा था तो दीन महमद की मां ने एक पलेट मे गो मास और रोटी डाल कर खाने के लिये दे दिया । मैं भी उस समय अन्दर चला गया । यह सब कुछ देखा लेकिन में कुछ कर नही सकता था । परन्तु मन में यह विचार किया । अब इस स्थान को छोड़ कर किसी दुसरी जगह रहेगे । मियां अबदुल जो रताल में रहता था । उससे बातचीत की तो उसन हमें रहने के लिये कमरा देने के लिये मान लिया । थोड़े ही दिनों में हम उसके घर चले गये ।

उसका घर एक गांवों की सड़क के किनारे था । इसलिये दिन भर लोग आते रहते थे । मियां अब्दुला ने हमें पास बिठा कर यह कहा कि दिन के समय ना आप यहां होते ना मै घर पर होता हू । अगर किसी गलत आदमी की नजर में पड़ गये तो कोई हानि हो जायेगी । हम सब को दुख होगा । इस विषय पर उनके साथ बैठ कर यह विचार किया कि यह जगह छोड़कर हम श्री सन्तराम हरकारा के घर जो जहां से निकट सड़क की दुरी पर था । उस घर मैं उनकी एक पत्नी और मां और एक नौकर रहते थे ।

सन्तराम जी जम्मू चले गये थे । रात को वहां श्री अनन्त राम जी कड़ैला अपने लड़कों के साथ आ जाया करते थे । रात को वहां इक्कठे रहते थे । सुबह को आगे पीछे जाते थे । कुछ दिन हम सबों ने वहा आराम से गुजारे लेकिन फिर वह भी छोड़नी पड़ी । हम दुबारा फिर जाकर दीन महमद से मिले । उसने इस बार एक अलाहिदा मकान रहने के लिये दे दिया ।

रात के समय रताल से निकल कर बड़ानू के लिये चल पड़े । रास्ते में मेरी लडकी सरोज को उसकी मां ने उठाया हुआ था । मैंने अपने Brother-in-law रविन्द्र को उठाया था । वह कण्धे पर ही सो गया और सोये हुये मेरे ऊपर पिशाव कर दिया । उन गीले कपड़ों के साथ ही आगे बढे । आगे दरिया चडता था । उनको पार करने में कुछ कठनाई आई । आगे शली के खेत पडते थे । अन्धेरा बहुत था । इसलिये उन खेतों में ही एक मकान था । जिसका दरवाजा कच्चे

32K

पत्थरों से वन्द किया हुआ था। उसको खोला और अन्दर बैठ गये। रोशनी होने पर वहां से निकले और दीन महमद के घर हस सवी जा पहुंचे। कुछ समय वहां आंराम से बीता। कभी-२ जो आने लोग टोपा मैं लाल नरसिंग दास जी (वकील) के साथ सराफदीन मलिक के घर में रहते थे। वह रेकी वां में शांति प्रकाश के पास आ जाते और हमारे परिवार से भी कुछ लोग और इसी तरह श्री मुकन्द लाल चोगा रेकी वाँ पहुंच जाते वहां बैठकर सलाह मशवरा होता रहता। रात्री को फिर अपने-२ घरों में जाते थे। कभी कभी हम लोग गुरदन में मेजर असलम के अधीन कैम्प था।

जिम में ज्यादातर हिन्दू महनाए और बच्चे थे मिलने जाया करते थे। उन्ही दिनों में जनवरी मास बीतने वाला था। हम एक ऊंची चोटी पर शाम के समय बैठे थे। धूप चमक रही थी। तो नीचे से कुछ घोड़े वाले जो कुछ खाने पीने का सामान लेकर जेहलम से आ रहें थे। उनकी जबानी यह मालूम हुआ कि महात्मा गांधी को किसी हिन्दू ने गोली मार खत्म कर दिया। तो वह घोड़े वाले जो मुसलमान थे कहने लगे कि आप के लोगों ने महात्मा गांधी को भी बखश नही। तो उसके उतर में हमने यही कहा वहां के लोग जानें हम क्या कह सकते है।

श्री मगां राम चुनो लाल के परिवार से मंगा राम जी की पत्नी जी पीर कांजू से किसी तरह टुडी तार तक चली गई तो वहां किसी ने उनसे जो सोना था। छीन लिया वह दुखी होकर उस व्यक्ति को उन्होंने गालियां दी। जिस से उसने गुस्से में आकर उनको जान से मार डाला। उनके दोनों लड़के इस समय के डाक्टर सतपाल एक काला नामो गुजर के पास रहें और छोटा जोगेन्द्र एक जमुना देवी नामी मोहला ने समाल रखा जिनकी बाद में १९४९ में बरामद कर लिया गया। इसी तरह लाला सन्त राम जंजोड़ वालों के परिवार से उनकी तीन लड़कियां भी वरामद की गई। लाला बेली राम के परिवार से उनकी पत्नी दो लडकियां और एक लड़का आत्म विजय बचे। लाला किशनदास के परिबार से उनकी पत्नी और दो बच्चे और दो लड़कियां बच गई। इसी तरह श्री जिया लाल जी के परिवार से उनकी पत्नी और एक बच्चा बच पाया,

श्री चुनी लाल सन्चोयोट वालों के परिवार श्री जगदीश राय यशपाल और उनका पोता आत्म विजय बचे। श्री मलिक राम तुली जो एक मिलट्री गाडी में

में बैठ कर नौशहरा पहुंच गये और बच गये। कृपाराम जी चौधीरयाल उनका बेटा हरबन्स लाल सतपाल, दिलबाग और एक लड़की जो रजौरी में ही रहे और बची श्री भगतराम जी धन्मां वाले के परिवार से दो लड़कियां और उनके लड़के रमेश चन्द्र और वरिन्द्र बचे। लाला राम चन्द चटीयाड वालों के परिवार से श्री सुरेन्द्र जी और उनके लड़के श्री दुर्गादास के परिवार से श्री सतीश जी और रजनीश जी बचे।

उनके दुसरे सपुत्र बिहारी लाल जी का एक लडका बचा। श्री मंगाराम जी कगल के सपुत्र श्री सुरेन्द्र जी बचे और श्री जियालाल जी सराफ की मृत्यु के बारे में कुछ पता नही चला। वह कहां मारे गये और श्री परस राम त्रलोक नाथ नौशहरा वाले ठीक-ठाक जम्मू पहुंचे। श्री मगतराम जी सराफ के परिवार से उनके सुपुत्र सुशील जी उनकी एक छोटी लड़की बच पाई। श्री जगमोहन जी सर्वणकार के माता पिता और एक बहन बची। पंडित रघुनाथ दास जी वकील के सुपुत्र श्री जगमोहन जी और उनकी एक लडकी बच पाई। श्री सुन्दर दास जी कमपोडर के परिवार से उनके सुपुत्र द्वारिका नाथ जी बचे। इसी तरह पंडित गौरी शंकर के परिवार से उनका बड़ा लड़का डाक्टर द्वारिका नाथ और बैज नाथ बचे। इसी तरह शारिका प्रसाद की पत्नी बच पाई।

मास्टर दौलतराम उनके सुपुत्र श्री बन्सी लाल और उनके छोटे भाई बचे। लाला बिहारी लाल जी सराफ के परिवार मे उनके सपुत्र श्री अमर नाथ सराफ और उनके छोटे भाई राजेन्द्र सराफ जो जम्मू में ही पढ़ रहे थे बच पाये। उनका छोटा लड़का रजनीश सराफ जो किसी मुसलमान परिवार मे परवरिश पा रहा था। पता चलने पर उनके बड़े भाई श्री अमरनाथ सराफ और उनके मामू श्री निर्मल कुमार की कोशिशे से बरामद कराये गये। हकीम रुप चन्द के परिवार से पत्नी दो दो लड़कियां उनके सपुत्र श्री पृथ्वीराज जी बच पाये।

श्री लक्ष्मी चन्द रहोतड़ा के परिवार से उनके सपुत्र अमृतलाल जी और एक छोटी लड़की और महता किंकर सिंह और उनके सपुत्र बचे। महता पंजाब सिंह के दोनों सुपुत्र बच पाये और शहद्रा के सरदार रमील सिंह अपने परिवार सहित बच पाये। लक्ष्मण दास कंगल के परिवार मे निर्मल कुमार और श्री कृपा राम चोगा के परिवार से उनके सुपुत्र निर्मल कुमार चोगा बचे। भगतराम जी देरिया

वाले के परिवार से श्री जियालाल जी और ओम प्रकाश जी बचे। नेहाल चन्द गुप्ता इन्दर कोट वाले के परिवार से श्री ज्योति प्रकाश जी बाला राम चुगस वाला के परिवार से उनकी दो लड़कियां और एक लड़का सुशील जी बचे।

जियालाल हवेली वाले के परिवार से उनके सुपुत्र डाक्टर रजनद्र जी और उनके छोटे भाई और श्री ओम प्रकाश जी हवेली वाले अपने परिवार सहित बचे। लाला अन्तराम कहैला के परिवार से उनके सपुत्र श्री बन्सी लाल मारे गये और बाकी परिवार बचा। लाला नरसिंह दास कहैला वकील के परिवार से उनकी दो लड़कियां और एक लड़का बचे जो श्री अमर नाथ सराफ के परिवार में परवरिश पाई। श्री अमर नाथ जी मोदी के परिवार से उनकी लड़की उरमील और लड़का काला बचे और अपने मामू अमरनाथ के पास ही परवरिश पाई।

थना मण्डी से श्री तारा चन्द जी गडहौत्रा अपने परिवार सहित और श्री प्रेम चन्द जी मलहोत्रा, प्रकाश नाथ जी शर्मा और मगतराम जी श्री राम शाह जी और लक्ष्मी चन्द जी भल्ला और कुलभुषण जी सपुत्र श्री अन्तराम जी श्री कृष्ण लाल जी सपुत्र श्री चुनी लाल जी इकबाल शाह जी बजाज श्रीमती इकबाल देवी जी में अपनी छोटी लड़की और श्री मोहन लाल जी सपुत्र जलाशह जी बच पाई। श्रीमती शांति देवी जी वह अपनी सुपुत्री विपन देवी जी दरहाल वाले भी अपने घर में ही रह कर जान बचाई। पंडित जय दयाल जी के परिवार से उनके सुपुत्र श्री सतपाल जी और उनके छोटे भाई और एक सुपुत्री बची। बाबू दुर्गा दास जी पोस्टल कलर्क और उनके सुपुत्र सुरज जी बचे।

दुर्गा दास जी रोहतडा के परिवार से श्री नेत्र प्रकाश जी और शाँति प्रकाश नडयालीवी उनकी माता जी तीन बहनें और भतीजा भारत भुषण बचे। धनी राम जी मोदी के परिवार से उनकी पत्नी और एक लड़का और लाला भगतराम मोंदी का परिवार उनकी पत्नी दो बच्चे और एक लड़की बची। पंडित सीता राम जी शास्त्री और उनके सुपुत्र भी बच पाये। श्री प्रेम नाथ जी सुरी अपने परिवार सहित भी रजौरी में रह कर परेशानी के दिन गुजारे और श्री हरिराम चौपड़ा और उनके सुपुत्र सीता राम और ओम प्रकाश बचा।

श्री कृपा राम चोपड़ा के परिवार से उनकी पत्नी और सुपुत्र खैराती लाल जी बचे। मास्टर मोती राम जी भी अपने परिवार सहित बचे। लाला जगतराम

जी मोदी के परिवार से श्री रघुधीर जी मोदी बचे। मुकन्द लाल जी के परिवार से उनकी पत्नी श्रीमती बिमला देबी जी उनकी छोटी लड़की बच पाई। श्री दीना नाथ मोदी के परिबार से श्री नेकराम जी जो पाकिस्तान अपने वडे भाई के साथ चले गये थे। दोनों १० साल के बाद वापस रजौरी आये। नेकराम जी तो यहाँ टिके रहे और बड़े भाई वापस कोटली गुलाम कश्मीर चले गये।

महाशय साई दास जी अकेले भी वच गये। सरदार बुधसिंह फोठो ग्राफर भी अपनी जिन्दगी अकेली बचा पाये। श्री सन्तराम जी सराफ के परिवार से उनकी शादीशुदा सपुत्री श्रीमती शांति देवी में अपने दो सुपुत्रीयां एक सुपुत्र विजय कुमार वच पाये बाकि सब मारे गये। लाला भगतराम काहैला जी के परिवार से उनके सुपुत्र श्री दीना नाथ कहैला की छोटी सुपुत्री बची बाकी सब मारे गये। लाला बालाराम जी चोगा, श्री वरिन्द जी, यशपाल जी बचे। मुकन्द लाल जी चुगा के परिवार से उनकी सुपुत्रीयां चन्द्रकान्ता जी और सुन्दर कांता बची। श्री तिलक राज जोती प्रकाश जी इन्द्र जी जी गरनाल और उनके मामाजाद भाई श्री कुलदीप जी भी जम्मू पहुंचे।

श्री मोती राम जी शाह के सपुत्र श्री नरेन्द्र जी का भी वही वलिदान हुआ। आखिर माह चेत्र २००४ का महीना आया और बहादुर फौजी जिनको जनरल आसमान ने दोखा से नौशहरा में रुकवा रखा था। उस दोखेबाज को उसको दोखे की सजा देकर उसको दोंजख में पहुंचा कर रजौरी तरफ बढ़ना शुरु किया। जिसकी खबर हमें थोड़ी बहुत मिलती रहती थी। हम सब लोग जो उस समय इलाका द्राल ५लिका मे रह रहे थे। जिन की संख्या १५० के करीब थी। उनमें जो सुझबुझ वाले लोग थे, वह सब एक जगह इकठे बैठे और यह तय पाया कि अब हमें इन ग्रामों से निकल कर रजौरी नगर में जाना चाहिए।

अपनी आने वाली फौज से मिल पाये। इसके लिए एक दिन निशचत किया और उसी दिन हम सब्री शाम तक रजौरी नगर पहुंच गये। जब मेरा परिवार वढानू से रजौरी नगर का तरफ चलने लगा तो वहां की मुसलिम परिवार की महिलाए हमारी विदाई के लिऐं आये। कहने लगी कि आप जो पुरुष है वंशक रजौरी जाये परन्तु महलाओं और बच्चो को साथ ना लिया जाये। यह हमारी राय है क्योंकि आप हमारे बीच में रहे है। आपस में बातचीत द्वारा यह जानकारी मिल

चुकी थी कि आप सबने पहले बहुत ही कठिनाई देखी है। अब अगर फिर ऐसी कठिनाई बनी तो इनके लिये वापस आना मुशकिल होगा।

फिर हम सब रजौरी पहुंच गये। मेरे साथ जो २५-३० लोग थे। हम सब स्वर्गीय सन्त राम जी सराफ के मकान में ठहरे और स्वर्गीय मुकन्द लाल जी मोदी ज्योति प्रकाश जी कगाल स्वर्गीय लाल नरसिंह दास जी के मकान में ठहरे। महाशय ईशर दास जी मुकन्द लाल जी चोगा बोध राज जी चटिहाड वाले व आदि सभी महल्ला अन्दरकोट में हिन्दु के मकान में ठहरे और रात का खाना बनाने के लिये सब ने कामकाज शुरू किया। अभी रोटी पूरी तैयार नही थी कि इतने में मिर्जा महमद हुसैन जो उस समय अपने आपको उस जगह का राजवाड़ा मानता था। उस समय उसने अपना दरबार नैन सुख (फतेपोर) में लगाया हुआ था। उसकी उसकी ओर से चन्द मुसलिम सिपाही जो उसने भरथी किये हुये थे।

जबानी आज्ञा आयी कि सभी नव मुसलिम को जो रजौरी नगर में बसे हुये है। सदयाल ठण्डी कसी मे ले जाकर कैम्प बनाया जाये। इस समय रजौरी नगर पर हिन्दोस्तानी जहाज बम्बारी करते हैं। यह लोग उस में मारे जायेंगे और वहां कैम्म में इनलीं हर तरह से रक्षा की जायेगी। हमें यह खबरें मिल रही थी कि पठानों की एक टुकड़ी जो नौशहरा की ओर से रजौरी की ओर बढ़ रही है। जितने भी हिन्दु बचे खुचे हुये ग्रामों में बसे है उन में से नौजवान युवकों और पुरुषों को घरों से निकाल कर उनका कत्ल कर रहे है। उस समय हमारे ख्याल में यह बात बनी कि हमें भी इस नगर से निकाल कर बाहिर गावों में यही घटना होगी।

श्री सन्त राम जी सराफ और नरसिंह दास कहैला के मकान से मुह बाहर निकाल कर ज्योति प्रकाश जी कंगाल जो उस समय कहैला जी के मकान में ठहरे हुये थे जोर से आवाज लगाई और वह सामने आये। उनसे कहा कि यह जो मिर्जा साहब की आज्ञा आई है इस के बारे में क्या विचार है। उन्होंने कहा कि लाला नरसिंह दास जी और दुर्गादास जी चडियाड वाले मेजर असलम के कैम्म में गरदन इसी विषय में जानकारी लेने गये है। उनके वापस आने पर क्या करना हैं। इस पर विचार होगा। पर वह काफी देरी हो जाने के उपरान्त भी वापिस ने आये। तो उस समय जिन सिपाहियों ने सदयाल ले जाने की आज्ञा लाई हुई थी। तग करने लगे कि जल्दी बाहिर आओ बहुत देर हो रही है। उधर श्री दुर्गा दास जी और नरसिंह दास जी मेजर असलम के पास सलाह के लिये गये थे।

कैम्प के निकट पहुंचे तो वहां जो मेजर के रक्षा मुसलिम बन्दुकदारी खड़े थे गोली मार कर खत्म कर दिया। मगर वह दोनों मेजर असलम के पास पहुंच जाते वह भी बच जाते। हमारे बाकी सभी लोग जो उस समय तक ३०० के करीब हो चुके थे। परन्तु ईश्वर को मंजूर न था। उससे पुर्व वहां श्री सोहन लाल जी कहैला और जगदीश राय जी अर्जीनवीस जो फौजी हस्पताल में क पोडर का काम करते थे गोली मार कर दोनों को खत्म किया।

अब हमने मजबूर होकर लाला ईश्वर दास जी बरोट वाले और श्री बोध राज जी चटियाड वाले की मिर्जा अहमद हुसैन के पास बरायी तसल्ली हुकम नैन सुख कैम्प में भेजा जो मिर्जा साहब से मिलकर वापस आये और उनको हुकम सुनाया कि यह सब आप लोगों की भलाई के लिये किया जा रहा है। इसलिये आप निशचत होकर आप कैम्प जाये। वहां आप की हर प्रकार से सुरक्षा व्यवस्था होगी। परन्तु उस दोखेबाज इनसान ने हम सब के साथ विशवासघात किया। वहां जाकर मरवाया उस दोखेबाज का भी जब हमारी फौज रज़ौरी पहुंची। वह ज़ालिम दके खाते हुआ रवलपिंड़ी पहुचा वहां उसकी मृत्यु हुई या किसी ने मार दिया और उसको दफवाने के लिये जगह न मिली। इधर सदयाल चलने के लिये महाशय ईश्वरदास ज़ी ने अपनी पत्नी और बचीयों को साथ लिया जो जरुरी सामान था उठा कर चल निकले। उनकी देखा देखी बाकी भी सभी लोग गली में चलने के लिये निकल पड़े।

उस समय मैने अपने बड़े भाई श्री सीता राम से कहा कि आप रविन्द्र नाथ को अपने साथ लेकर जो इस समय BMO है। रताल ग्राम के मियां गुलाम कादिर के घर चले। उनके चलते-२ थोड़ी सी मक्की की रोटी उनके कोट के जेब डाली और कहां कि रास्ते में कही यह छोटा राये तो उसको खिलाना। वह चले गये और ठीक उनके घर पहुच गये। उस वक्त मैंने सोचा कि कुछ जवानों को इस परिवार से अलाहिदा किया जाये। चोंद सदयाल ना भेजा जाये ताकि यहां छुपकर बच जाये। इस मे चौदह व्यक्ति थे। बाकी सभी परिवार जिन में महलाए बच्चे और पुरूष थे सभी उन सिपाहियों की निगरानी में हरी राम लबाना के घर में पीरकांजू जा पहुंचे।

सब लोगों को इक्कठा करके उस मकान के अन्दर बिठा दिया। वह सिपाही मकान के आगे पीछे खड़े थे। हम सब जो उनसे बिछड़े थे जिन में बोधराज जी

चटियाड वाले और मैं बोधराजसुकड़ वाले जगदीश राय जी और कुलदीप राज जी अन्दरुठ वाले मुकन्द लाल जी और पिशोरी लाल जी चुगस वाले आदि हम सब वहां से अन्ततराम जी कहैला के मकान के नीचे वाले कमरे में जो बिल्कुल अन्धेरे में था। किसी को हमें देखना मुशकिलथा छुप गये जों हम वह छुपे हुये थे। उनके परिवार हरीराम नवाना के मकान में चले गये थे। इसलिए हम में से भी कुछ का मन इधर रुकने के लिये तैयार नही हुआ। इसलिये बारी-२ सब बाहर निकल आये।

हरीराम के मकान की तरफ चल पड़े तो श्री नेत्र प्रकाश जी कृपा राम जी के मकान की पाड़ियां में खड़े थे चलने के लिए हमारे साथ मिल गये। मैंने उनसे कहा आप तो अकेले ही बचे है। उधर आपका कोई नही इसलिये यहां ही छुप जाओ। उन्होंने उस समय पठानों जैसी दाडी रखी थी। अगर आप कही पकड़े भी गये तो दाड़ी आप को बचाएगी। पर वह ना माने लेकिन वह भी हमारे सब हरी राम के मकान में जा पहुंचे। वहां जाने पर पता चला कि हमारे सामने वाले मकान में थोड़ी दूरी पर वही पठानों की टुकड़ी जो पीछे से कत्ल करती आई है पहुंच चुकी है। इसने हमारे साथ भी वही व्यवहार करना है। जो उसने पीछे किया है। स्वर्गीय बन्सी लाल जी कहैला उनको देखकर घबराये। मकान से बाहिर भागे और बाहिर जो मुसलिम सिपाही खडे थे। पकड़ वापस लिये और उन सिपाहियो ने यह कहां कि अब कोई और भागा तो गोली मार दी जायेगी। यह जो पठानों की टुकड़ी हमारे काफिले के पास रुकी हुई थी। यह टाई को द्वार जो नौशहरा के निकट है।

हमारी वीर फोजों से मार खा कर भाग आई थी। इनके बाकी साथी पठान जिन की रहनुमाई नवाब अधौर का शहजादा कर रहा था। सब मारे गये थे। उनका बदला लेने के लिये इन्होंने नौजवान हिन्दू को मारना शुरू कर दिया था। आखिर शाम को सुरज को डूब जाने के मौके पर मिर्जा अहमद का हुकुम आया कि सभी हिन्दू को इसी समय सदयाल ले जाओ और जो सिपाही हुकुम ले आये थे। उन्होंने हम सब को कहा कि इस मकान से निकलो और सदयाल चलो। वहां आपको कैम्प में रखा जायेगा। हम में से सिर्फ श्री जिया लाल जी की माता जी और श्रीमती रामू देवी जी पत्नी स्वर्गीय लाला दुर्गा दास जी चोगा और श्रीमती शांति देवी पत्नी श्री मंगाराम जंजोट वाले जिनके साथ उस समय डाक्टर सतपाल और जोगेन्द्र पाल वहां रह पाये। श्रीमती विमला देवी जो मोदी पत्नी स्वर्गीय लाला मुकन्द लाल जी मोदी जिन के साथ एक छोटी बच्ची भी थी। वहां

ही रही हम चलने ही वाले थे कि इतने में लाला हाकम चन्द जी मोदी अपने तीन नौजवान बच्चों के साथ आ पहुंचे ।

मैंने उनसे कहा कि हम सब तो शहर में थे । इसलिये हमें यहां से जल्द ही कैम्प में जाने का हुकम दिया । लेकिन आप तो तनौर गावों में बैठे थे ना आते तो बच जाते । उन्होंने कहा कि मुझे नम्बरदार साथ ले आया है । मैंने यही आना चाहता था । इतने में श्री राजेन्द्र जी मोदी जिनकी आयु उस समय १२-१३ साल से ज्यादा ना थी । माता श्री जिया लाल जी शाह ने उठ कर पकड़ लिया और अपनी जोली मे छिपा लिया और कहने लगी की यह मेरा छोटा बच्चा है । इस को मैं नही जाने दुगी । इस तरह वह बच पाये ।

हाकम चन्द जी मोदी और इनके सपुत्र श्री कृष्ण चन्द्र जी और चन्द्र प्रकाश जी जो मेरे मकान के साथ ही रहते थे । उनको प्रात: शाखा के लिये जगाया करता था । इसलिये उनसे मेरा बहुत प्यार था । यह हमारा काफिला रात के अन्धेरे में चलता हुआ दरिया तवी को पार करते हुये सदयाल जा पहुंचा । वहां के हिन्दू के मकान खाली पड़े थे । दो मकानों में जो साथ-साथ ही थे रोक दिया गया इनमें खिड़की आदि न थी । वह बन्द कर दिये गये और दरवाजा बन्द करके बाहिर चार सिपाही खड़े कर दिये गये । जिन में दो के पास राईफले थी और दो के पास कुलहाड़ियां थी ।

काफी रात गये बाद साथ वाले मुसलमान के घरों से मक्की की रोटियां मांग कर हमें थोड़े-२ टुकड़े बांट दिये गये और कहा सो जाओ । हम से कुछ लोग सो गये और कुछ जागते रहे । हम सब लोगों की वहां संख्या तीन सौ के करीब थी । जब हमने देखा तो यही खयाल आया कि या तो रात को आग लगा कर जला देगे या जो पठान हमारे पास रूके थे । उन से परवा देगे । जो बाहिर सिपाही खड़े थे । उनमें एक युसफ शाह जो पुलुलिया का रहने वाला था और मेरा वाकिफ नही था । उससे मैंने किसी तरह बचाने के लिये बातचीत की । उसने कहा कि अगर रास्ते में या जहां ठहरे हुये थे वहां छोड़ने के लिये कहते तो मैं छोड़ सकता था । यहां से छोड़ना मुशकिल है । फिर मैंने उसको कुछ रुपयो का लालच दिया और पांच सौ रुपये दिये और उसने कहा यह पुरे पांच सौ हैं । मैंने कहा हां पुरे है । वह छोड़ने के लिये राजी हो गया । तब मैंने उससे कहां कि मेरे साथ एक और

किसी व्यक्ति को छोड दो ताकि हम दोनों किसी तरह निकल सके उसने यह मान लिया और मैंने उसको मनोहर लाल जी सराफ का नाम दिया जो दुसरे मकान में थे वह सिपाही गया और वहाँ से निकाल लाया हम वहां से दोनों निकल रहे थे कि इतने में एक और सिहाही आ गया जो फत्तेपुर का रहने वाला था और उसको यह पता चला कि यह मनोहर लाल सराफ है छोड़ने के लिये इन्कार हो गया कहने लगा कि इनकी तो हज़ारों केनाल जमीन है अगर यह बच गया तो वह ज़मीन हमें नहीं मिल पायेगी अगर मारे गये तो यह सब ज़मीन हमारी हो जायेगी फिर वह उनको वापस उसी मकान में ले जाकर बन्द किया तो फिर मैंने कहा किसी और व्यक्ति को छोड़ दो तो उसने मास्टर सन्त राम जी का नाम लिया वह कहने लगा वह मेरे स्कूल टीचर है।

उनको साथ ले जाओ तो मैंने कहा कि मैंने भी उनसे ही History और Geography पड़ा है मेरे भी टीचर है। और सम्बन्धी है इसलिये कृपा करके उनको मेरे साथ भेज दो मास्टर जी भी हरदेश चन्द्र जी सतपाल जी के पिता थे जब हमें छोड़ने का समय आया तो वह फिर मास्टर जी छोड़ने के लिये इन्कार हो गये कहने लगा बेशक यह सब लोग आप के ही है। लेकिन जब मैं दो को छोडुगा तो शोर मच जायेगा क्यों उनको छोड़ा हमें भी छोड़ा इसलिये आप अगर अकेला जाना चाहते है तों जाओ और किसी को नहीं छोड़ सकते और बाहिर निकाला। तो मैंने हन्स राज चिटयाड वालो की देखा और कहने लगा किसी तरह मुझें भी साथ ले चलो मैंने उन से कहा कि इस व्यक्ति से बात करो पर वह उनको भी छोड़ने के लिये तैयार नही हुये और कहने लगा कि इस मकान की छत से छलांग नीचे लगाओ और भाग जाओ मैंने ऐसा ही किया।

इस तरह मेरी जान बची जब मेरे लिये पता चला तो उस से पहले उस सिपाही ने अपनी राइफले से एक फैयर कर दिया था। वह बाकी लोगों से कहने लगा कि उसने पेशाब करने की इजाज़त ले कर बाहिर गया था और छत से नीचे छलांग लगा दी मैंने फाइर किया वह मर गया होगा। इस तरह उसने अपनी जान बचा ली मैंने वहां से भागने पुर्व उस सिपाही से यह भी कहा कि मेरे कुछ लोग और भी अन्दर है। उनके पास भी रुपये है उनके नाम भी बताये वह भी आप को रुपये देगे। उनको भी समय मिलने पर निकाल देना। और मैं अपने व्यक्तियों से भी ऐसा कह आया था लेकिन ऐसा कुछ भी न हो पाया जब मैं वहां से भाग कर तवी किनारे पहुंचा तों रोशनी होने वाली थी तो मैंने देखा कि एक व्यक्ति घोड़े पे सवार राईफल रखे हुये मेरी और आ रहा था। और मैने उससे पहचान लिया वह महमद गोस नामी जराल था वल जरालां

का रहने वाला था। मेरे Class Fellow था फिर में उससे छिप गया और वह निकल गया।

मैं वहां से उठा तवी को पार किया वहां आजकल MES का दफतर है। लोगों ने आर्जी दुकान लगाई हुई थी। उन मे कर्म अलायी नामी जो मेरा परिचय था। वहां अपनी दुकान सजा रहा था। उस से बगैर किये बात आगे चल पड़ा। तवी को फिर पार किया उधर ही हमारा शाखा स्थान था। जो शाखा के लिये श्री दीना नाथ जी कहैला जो हमारे संगचालक थे अपनी निजी ज़मीन थी वहां प्रणाम किया और उसके साथ ही मेरा मकान था। उसके अन्दर चला गया वहां देखा कि मकान के अन्दर के सारे फंश किसी ने खोद रखे थे। वह कबाली जी आये हुये वहां वह दवा हुआ कीमती माल ढुडँते वहा भी रूका नहीं वहां से निकला और लाला दाला राम जी चुंगस वाले के मकान चला गया वहां भी कोई ना मिला लेकिन उसके साथ ही मिर्जा ममंद खां का मकान था। उसके अन्दर से आहिस्ता-२ बातें करने की आवाज़ आ रही थी। मेरा यह ख्याल था। कि उस समय वहां कोई मिर्जा साहब के रिशतेदार ना हो इस लिये वहां भी ध्यान नहीं दिया।

परन्तु वहां श्री रुप चन्द और लाल चन्द बारबर दोनों के परिवार थे। जो परिवार से दोनों बच गये। अगर उस समय मैं वहां से चला जाता तो मेरी मुसीबत कहानी वहां ही समाप्त हो जाती पर ऐसा प्रभु को मंजूर नहीं था। इसलिये मैं आगे मुन्शी जमालदीन के मकान की तरफ चला गया। वहां भी कोई नहीं था। उधर से आगे चल कर सबजमी के नज़दीक जो पत्थरों का दरवाज़ा था। उससे नीचे निकला उस से आगे महता जगत सिंह जी की चावलों की मशीन थी। फिर उसके आगे दराली तवी है। उसी में एक भैरव जी का स्थान था। उसी के निकट में किसी साधू ने एक कुटिया बनाई हुई थी। उस में जाकर छुप गया। मेरे सामने तवी पार शली के खेतों से मुसलमान लोग नीचे से ऊपर की ओर भाग रहे थे हमारे फौजी टैंक उसी शाम को रजौंरी पहुंच रहे थे इसलिये वह भागने वाले लोग थन्ना मण्ढी से उपर अलीआबाद की तरफ या थना मण्डी की रोड़ को पार करके बीजी की ओर पहुंचना चाहते थे।

जब मैंने उनकी भाग दौड़ को देखा तो मेरे मन में भी यह ख्याल आया कि यहां बैठना मेरे लिये ठीक नहीं है। मैं वहां से निकला और रताल की ओर जाने का सोचा अभी मैं खयौरा पहुंचा था कि टैंकों का एक गोला साइं गजी जी की खांगाह के

निकट ही आ पड़ा। जिस से मैंने समझ लिया कि हमारे टैंक रजौरी पहुंच गये है फिर भी मैं मियां गुलाम कादिर के घर रताल पहुंचा उनकी मकान की पीछे वाली तरफ एक खिड़की थी। जिस से मै अन्दर दाखिल हुआ जहां वह सारे बराण्डे में बैठे थे। वहां चला गया यह मैंने इसलिये किया कि बराण्डे मे कोई गलत आदमी ना बैठा हुआ हो। मुझे देखते ही उन्होंने कहा कि शाह जी इस समय आपके टैंक रजौरी पहुच चुके है और हम बीजी की ओर चलने वाले है। इसलिये आप वापस रजौरी जाये और अपनी फ़ौज में मिल जाओ पर मैंने अभी और मुसीबत देखनी थी। इसजिये उनका कहा न माना और उनके साथ चलने की तैयारी की मियां गुलाम कादिर से मैंने पुछा कि मेरे भाई सीताराम और उनका लड़का रविन्द्र नाथ आपके घर भेजे थे। उन्होने कहा वह यहां आए थे। रात को इधर ही थे और थोड़ी देर हुई वह अपने लड़के के साथ मियां दीदार बख्श के घर बडानू चले गये और वहां से वह बीजी उनके साथ चले गये।

वहां हम सब फिर इक्ठ्ठे हो जायेगे। रजौरी जो टैंक पहुचे है वह आज रात को या कल प्रात: थना मण्डी चले जायेगे। इसलिये हम सब को थना मण्डी की सड़क पार कर लेनी चाहिये मियां गुलाम कादिर का परिवार बीजी के लिये चल पड़ा उसी परिवार मे अबदुलगनी नामी लड़के ने सर पर कुछ मक्की उठाई हुई थी। उसको मैंने कहा आधी मुझे दो। मै उठा लेता हुं उसने ऐसा ही किया। आगे दराली तवी पड़ती थी वहां जाकर उन सब ने पकी हुई रोटी निकाली खुद खाई और मुझे भी खिलाई। अब मैंने अब्दुलगनी से कहा कि हम दोनो ने बडानु चलना उसलिये हम दोनों आगे निकलते है और भाई सीताराम जी को साथ ले के फिर इनसे मिल जायेगे। उसने यह मान लिया और हम आगे चल पड़े जब बडानु के निकट पहुंचे तो मैंने उससे कहा कि हम अब बडानु चलते है। तो उसने कहा अन्धेरा पड गया। अगर हम दोनों किसी गलत आदमी के हाथ पड़ गये तो हम दोनों को मार देगा। इसलिये हम बडानु नहीं चलते बडानु वाले और सब हम बीजी में इक्ठ्ठे हो जायेगे। इसलिये हम उधर नहीं गये और बीजी की ओर चल पड़े रास्ते में आनायता उल्ला बठी का लड़का मुझे मिला और उसने मुझे एक कुरान शरीफ की जिल्द दी।

जिसको मैने बड़ी देर तक सम्भाल रखा और कभी-२ पढ़ता भी रहा और अन्त में 1970-72 में जब जम्मू गया था। यहां मुझे मिलने के लिये फिरोज दीन गुजर अती वाले का लड़का जी टीचर ट्रेनिग के लिये आया हुआ था। आया और मैंने उसको वह कुरान शरीफ की किताब दे दी। जिस का कुछ सिस्सा मैं समय-२

पढ़ता रहा। दराली तवी से आगे थोड़ी दूर गये थे। रात अन्धेरी हो गई तो एक मुसलमाज के घर अन्दर चले गये उसने मुझे पहचान लिया मैं भी उसको अच्छी तरह जानता था। वह मेरी दुकान से देसी चाय पीने के लिये लाया करता था। इतनी ही मुझे उससे जानकारी थी। उसने हम दोनों को चारपाई पर बिठाया और बात चीत हुई थोड़ी बहुत रोटी खाई और सो गये। थोड़ी रात ही बीती थी एक मुसलमान सिपाही जो टाई की द्वार से हिन्दोस्तानी फौजी से मार खा कर भाग आया और उसने आते ही जिस आदमी के घर हम ठहरे हुये थे। उससे बातचीत शुरू की और कसा कि हमने जो काफिरो को अपने साथ रखा हुआ था। उनकी जासुसी के कारण हमें मार पड़ी बड़ी।

मुश्किल से जान बचा कर यहां पहुचा हु। और भारती फौज बड़ी तेजी से बड़ रही हैं कल तक यहां पहुच जायेगी। इसलिये हमें जल्द ही भागना चाहिये मैं अपने घर जा रहा हुं। अपने घर में कुछ जेवरात दबाये हुये हैं। उनको निकाल कर मैं वापस आता हुं फिर दोनों चलते है। इतने में उसकी नजर हमारी चारपाई पर पड़ी और पूछने लगा कि इस पर कौन सोया है। कुछ समय मैं भागने वाला था। और उसके मुह से यह शब्द सुने तो में कांप गया। कि अब शामित आ गई उस व्यक्ति ने उस को उतर दिया एक पिशोरी शाह हे। और एक लड़का उसके साथ और है दोनों सोये है। अभी मेरी कुछ जिन्दगी बाकी थी। इसलिये उस व्यक्ति का इधर ध्यान नहीं आया कि यह हिन्दू है। और वह निकल गया मैने अबदुल गनी को जल्दी जगाया और उससे कहा।

जल्दी उठो थन्ना मण्डी वाली सड़क पार कर ले हम दोनों भागे-२ सांज के रास्ते से लीरा वाली बावली के निकट थन्ना मण्डी वाले दरिया पहुचे उस समय मेरे मन में यह ख्याल आया अब रोशनी हो गइ हैं। और मुझे कोई पहचान न ले तो मैने अबदुल गनी से कहा कि यह मक्की मेरे वाली भी आप ले लो नाला पार करो मैं पेशाब करके पार आता किलता हुं। जब यह नाला पार करने लगा तो मैं थन्ना मण्डी वाली सड़क से रजौरी की ओर भागा रास्ते में बहुत से मुसलमान अपने परिवार सहित उपर की ओर भाग रहे थे। सिरो पर समान उठाया हुआ था। जो थक जाता था अपने समान को फैंक कर आगे बड़ी तेजी से बढ रहे थे। जब वह लोग मुझें मिलते तो मैं उनको पहले ही असलाम वाले कुम कह देता वह मुझें पूछते कि नीचे से हिन्दोस्तानी

फोज आ रही है। और आप इधर भाग रहे हो मैंने उनसे कहता कि इधर रास्ते में रात को हो मेरा बच्चा भूल गया है। अभी मै उसको ढूढ़ कर वापस आ जाता हुं उस समय मेरी हालत और शक्ल कुछ ऐसी ही थी जिस के कारण उनमें से मुझे कोई पहचान ना पाये मै चलते २ रजौरी के निकट एक बहुत बड़ा मैंदान जो रजौरी के लिये सैरगाह थी। और जिस में खेलने का मैंदान भी था। उस में एक मुसलमानों की मस्जिद और देवी माता का मन्दिर भी था।

जिसको लडी बोलते थे वहा स्वर्गीय सन्त राम जी सराफ ने माता के मन्दिर के सामने कुछ दुकान बनाई थी। जहां वह व्यापार करते थे जहां अब मिलटरी का डीव हैड क्वार्टर है। जब मैं वहां से गुजर रहा था तो वहां एक मुसलमान जो सन्त राम जी सराफ की दुकान पर काम करता था। कुछ समान उठाये हुए ऊपर की ओर जा रहा था। उसे देखकर मुझे खयाल आया कि यह मुझे जानता है। और मे उसे जानता हुं। कही पर हमला ही न कर दे मैंने अपने दिल की मजबूत कर दिया और यह सोचा कि जो मेरे हाथ में छोटी सी लाठी थी। उससे उसका मुकाबला करूगा। परन्तु यहां तक नौबत न आई और मै सीधे जो लडी का Playग्राऊड था। उसकी ओर चला जहां आज कल मिलट्री का हैड क्वाटर है। उससे आगे बढ़ते हुए जहां आजकल बस स्टेंड है। होते हुए फकीर मंजिल पहुचा। जो मिरजा फकीर मोहमद का मकान था। वह वहां नहीं था। और उसी मकान के नीचे वाले हिस्से मे सरदार ठाकुर सिंह अपने परिवार के साथ रहते थे।

लेकिन वह भी वहां से चले गऐ थे फिर में वहां मे सीधा स्वंगवासी सन्त राम सराफ के मकान में गया था जो खाली पड़ा था। उसकी डेवढी बन्द की और उपर चला गया। जब हम सब को सढयाल ले गये थे तो उपसे पूर्व मेरे परिवार के उस समय जो लोग मेरे साथ थे खाने का समान; वर्तन बिछौना आदि वही छोड़ गये थे। मैं एक बिस्तर में जो वहां ही पड़ा हुआ था सो गया। रात को काफी सफर किया था और सुबह से भी सफर कर रहा था। इसलिए थक भी गया था और भूखा भी था। फिर भी सो गया। दिन के बारह-एक बजे मेरी नींद खुली तो आकाश में हवाई जहाजों के गड़-गड़ाने की आवाज आई में छत पर चला गया सारा सुनसान था कही कोई आदमी नजर नहीं आ रहा था। उस समय मैने सोचा कि मैं कहां जाऊ सिफ हवाई जाहजों की गड़गड़ाहत सुनाई दे रही थी। परन्तु इससे पूर्व जियालाल जी रोथडा और

श्री कृष्ण कुमार जी तवी पुल पार करके जहां शाली के खेतों में यहां हिन्दोस्तानी फौज के टेन्क खड़े हुए थे उनसे मिल चुके थे। पर मुझें उसका पता नहीं था और श्री रुप लाल और लाल चन्द (बारबर) एक सफेद झण्डा लिए हाथ मे उनको मैं मिल चुके थे। मैं मकान की छत से नीचे पहुंचा ही था। और जहां मैं खड़ा वहां से नीचे वाली सारी गली नजर आती थी।

उस गली में लाला लक्ष्मी दास का मकान और श्री कृपा राम चुग्गा और लाला सांई दास सोनी वालों के मकान थे। उस गली से मुझे काली माता की जय गोष सुनाई दिया। उधर मैंने देखा तो वह भारतीय सेना थी। उनके पास राईफल गेनती और वेलचे थे। और किसी-२ के पास वाईरलेस सेट भी थे। जहां में रात ठहरा वहा किस भगोड़ें मुपलमान ने यह सुनाया था। कि आज प्रात: पाकिस्तान की फौज भी शुवाना से चल कर रजौरी पहुचने वाली है। और दुसरी ओर से हिन्दोस्तानी फौज नौशहरा से चल कर रजौरी पहुचेगी जो फौज पहले पहुंचेगी उसका रजौरी पर कवजा हो जाएगा। उस समय मन में खयाल आया कि यह पाकिस्तानी फौज न हो क्योंकि उसे देखने से यह पहचान नहीं होता था कि यह हिन्दू है या मुसलमान पर उन्होंने इतने में भारत माता की जय का जयगोष बोला जिससे मैं यह जान पाया कि यह हिन्दू फौज है और मैं सामने खड़ा हो गया उन्होंने नीचे से मुझे आवाज लगाई कि तुक कौन हों और जल्दी नीचे आओ और जो साथ है उसको भी ले आओ मैंने उनको उत्तर दिया दिया कि मैं हिन्दू हुं और मेरे साथ कोई नहीं हैं।

जब मैं नीचे गया तो वह कहने लगे आप तो पठान है हिन्दू कैसे कहने लगे। उस समय मेरा लिवास ऐसा ही था जिससे मैं उनको पठान नजर आया। मैने उनको यहां तक कहा कि मैं स्वयं सेवक संघ का हुं और इस समय भी मेरे पास संघ की निकर और वेल्ट मौजूद है। पर वह कुछ भी न माने जो जवांन मुझ से बात कर रहा था मैंने उस नाम पछा उतर में वह कहने लगा मैं मुसलमान हु नाम क्यों पूछते हो शक्ल से वह मद्रासी नजर आ रहा था। और सभी उसी रंग के थे मुझें शक हुआ मद्रास की फौज में मुसलमान भी है कही मुसलमान न हो उस गली के अन्त में तहसील का आफीस है तो मैंने उनसे कहा कि जा कुछ वहां था खजाना आदि कबायली लुट कर ले गए है। उसके उत्तर में उन्होंने पूछा आप को तो खजाने के बारे में कैसे मालुम है मैंने कहा कि पहले मैं इसी नगर में रहता था। इसलिए मुझें इसके बारे में मालुम है। तो फिर वह तहसील से रघुनाथ मन्दिर बाजार की ओर बढ़े।

मन्दिर के साथ ही उस समय दीना नाथ हलवाई की दुकान थी। एक जवान ने दुसरे से कहा की इसकी तलाशी लो इसके पास ग्रनेड न हो। मैंने उनको कहा कि आप तलाशी ले।

लेकिन मेरे पास ग्रनेड नहीं है। फिर वल आगे बनने गए और पुल तवी की तरफ बढ़े वही लाला साई णास की दुकान थी। जो बद्रीनाथ देरिया वाले के पास थी उस दुकान में मुझें एक जवान अन्दर ले गया और राईफल में गोली चढ़ाकर फाईर करने लगा तो मेंने उससे कहा कि भाई साहिब आप हिन्दोस्तान फौज के जवान है और में हिन्दु हुं और कोई दोप भी नहीं किया है। विला वजह मुझे मारने लगे। आपको कुछ मिलेगा नहीं तो उसने हिन्दू होने की तसल्ली होने के लिए पेन्ट खोलने को कहा मैंने ऐसा ही किया पेन्ट पहनी और उन्होंने कहा कि हमारे आगे-२ चको और मै उनके साथ ही पुल पार चला गया पुल के साथ ही एक टेकरी थी जिसमें बाद में पोस्ट माटम के लिए कमरा बना था। वहां सभी गोल मन्डल में बैठ गये और मुझें बीच में बिठा दिया। उनकी अभी भी तस्सली नहीं थी कि यह हिन्दू है इतने में पुल से आते हुए मुझे दो आफिसर मिलट्री के नजर आए जिनमें एक राजपुत और दूसरा सिख था। उन्होंने कमर में पिस्टन पहने हुए थे। और हाथों में बांस की लाठियाथी। उन्हें देखकर मेरा हौसला बढा कि यह दोनों हिन्दू है और मुझे अपनी मारे जाने की फिक्र कम हूई। उन्होंने आते ही सैनिकों से पूछा कि यह व्यक्ति कौन है और इस को क्यों घेर रखा है। तो उन्होंने कहा साहब यह एक सिविलिईन है यह अपने आप को हिन्दू वताता है।

मगर हम इसको मुसलमान समझते है उन दोनों आफिसरों में जो सरदार था उसने कहा यह मुसलमान नहीं है। इसके कानों में छेद नजर आ रहे है। यह हिन्दू ही डालते है इसलिए यह हिन्दू। फिर मुझे भी थोड़ी दिलेरी हुई मैने कहा कि साहब मुसलमानों के कब्जे में आया था तो मैंने अपने गले से जिनेऊ उतार कर जेब में डाल लिया था। जो अब भी जेब में तो उन्होंने नेहा आपको गायत्री मन्त्र आता है। मैंने मन्त्र सुनाया तो उन्होंने मुझें कहा जिनेऊ गले में डालो आप हिन्दू है और मैने ऐसा ही किया और उन्होंने मुझें Guide बनने के लिये कहा मैने मान लिया। उन्होंने कहा सामने वाली पहाड़ी पर हमने जाना है। यह पहाड़ी गरदन ग्राम के उपर छब्बा की पहाड़ी कहलाती है।

उसका रास्ता मैं जानता था। फौज को तैयारी का हुकुम हुआ और उन्होंने आपना रास्ता साफ किया। आगे मै और पीछे फौज चल पड़ी पुल को पार किया और आजकल जिधर Bus Stand है। उस बाजार में श्री बोधराज जी चीफ कन्सरवेटर की एक बहुत बड़ी दो मन्जिल दुकान थी। जिसमे आजाद फौर्स का Store था जिसकी श्री कृष्ण लाल जी गुप्ता जियालाल जी रोहतड़ा और मैं तीनों काम करते थे। उस समय उसको ताला लगा था मैने Officer Incharge से कहा यह Store है इस मे हर किस्म की खाने-पीने की चीजे है। आप को जो चीज जरुरत है। दरवाजा तोड़ कर ले जा सकते हो तो उन्होंने कहां कि दुश्शन जाती बार इस में जहर मीलाया गया होगा।

इस लिये हम यह नहीं लेगे मैंने उनको तसल्ली दी कि हम तीनों हिन्दू यहाँ काम करते थे इसलिये जहर का कोई सवाल नहीं तो इन्होंने अपनी जरुरत के मुताबिक समान उठा लिया। हम आगे बढ़े जहा मन्दु कुमार का पठ्ठा था वहा पहुंचे वहा से उन्होने मारटर पहाडी की ओर फैंके हम आंगे चल पड़े नाला क्रास किया और पहाड़ी की और चढ़ना शुरु किया। आगे जंगल था उसमें बकरीयां भी जितनी उनको जरुरत थी। पकड़ ली और रात गई छब्बा पहाड़ी पर पहुंचे और झड के Officer ने कहा रात को इधर ही हीं ठहरना है। आप भी यहा ही रूको मैंने उनसे पूछा कि आप जो छोटे-२ ग्रामों के नाम बता रहे है। यह आप को कैसे पता चला उन्होंने कहां यह हमे देहरादुन से नक्शे मिले जिनके सहारे हम यहां पहुचे मैने उन से कहा कि हमारा एक कैम्प गेरदन पांइ में हैं। दुसरा सदयाल में हे और हम यहां बीच में है तो उन्होंने कहा कि दोनो का सवेरे पता लेगे बकरीयां की मारा और थालीयों मे डालकर उसे पकाया और हम सबो ने खा लिया फिर रात को एक बड़े पत्थर के साथ सो गये रात को पिशाब के लिये उठा तो सन्तरी ने ललकारा कि बाहर नहीं जा सकते जो कुछ करना हैं इधर ही कर लो मैं वहां फारग हो कर सो गया।

सुबह उठां तो Officer के Tent मैं चला गया नमस्ते की और अपने कैम्पो के बारे मे जिकर किया। तो मुझें उन्होंने कहा हमारे जवानों को पानी पीने की जरुरत है इसलिये देखो पहले पानी कहा है मैने टेकरी से नीचे की ओर देखा जहां सबजा ज्यादा था। पानी मिलने का निशान था फौजी उधर गये और पानी भर के वापस आ गये मैंने फिर Officer से कहा जिधर से यह पानी लाये उधर ही हमारा कैम्प है जिस में दो ढाई सौ महिलाऐ और बच्चे है।

तो उन्होंने दुरबीन से देखा कि वहां महिलाऐ और बच्चे सामान सिह पर उठाये हुये शहर की ओर जा रहे यह सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई और मैंने उनसे यह कहां कि अब मुझे उनसे मिलने की आज्ञा दो तो उन्होंने मुझे आने जाने के लिये। एक पास बना दिया और साथ यह भी कहा कि आती बार रोटी खाने के बर्तन और दही हमारे लिये लाना दही बहुत दिनो से खाया तहीं मैंने कहा बर्तन जरुर लाऊगा दही शायद ना मिले। अब मैंने पहाडी से उतरना शुरू किया रास्ते मे फौजी जवान टेलो-फोन की तारे लगा रहे थे। वह मुझे रोक लेते और पास देखकर छोड देते नीचे मै उसी मकान में पहुचा जो हरीराम लबाना का था। जहां से हम सदयाल ले गये थे पहुचा वहां मुझे रामू मासी जी श्री ओंमकार जी चुगा की माता मिली और उन मुझे कुछ जम्मू से आए हुये लोगो और गरदन कैम्प वालो का पता चला और वहां श्रीमती विमला देवी जी मौदी और श्री राजेन्द्र जी मौदी भी मिले अब वहा से मैं नगर में पहुचा तो वहा श्री कृष्ण कुमार जी और जियालाल जी रोहतडा मिले और जम्मू से मेरे भाई चुन्नीलाल जी और अमरनाथ जी रोहतडा भी मिले एक दुसरे से मुसीबत की कहानीया सुनते सुनाते थे और रोते थे।

इतने मे गेरदन वाला कैम्प भी आ पहुचा था। उसमें मेरे बहुत से दिशतेदार औरते बच्चे थे और भाई चुनीलाल जी का परिवार भी था। मेरे परिवार से कोई नहीं था। इसीलिये मै भी उनके परिवार में ही रहा इतने में जम्मू से चाचा मोहनलाल जी दरास वाले और हरबन्स लाल जी नौशहरा वाले और भीमसेन मेन्डर वाले आ पहुंचे और हम सब श्री ईश्वरदास पन्गेड वाले के मकान में जा पहुचे और वहां ही श्रमती शांति देवी माता श्री विजय कुमार जी नीरपाल जी बच्चों सहित आ पहुचे और बाकी लोग भी आहिस्ता-2 बाहिर से आने लगे और रजौरी नगर में ही जो मकान रहने के योग्य था रहने लगे। एक दुसरे से मिले और गेरदन कैम्प मेंसे आने वालो में श्रीमती लाला मनोराम दरियाला और उनकी एक बेटी सीता देवी भी आई उनसे मिलने गया तो कैम्प की कई बातें सुनने को मिली जिसमें महता कैलाश चन्द्र शर्मा निरोज़ाल वाले की कहानी सुनी

यह छोटी उमर में ही थे उस समय अपने माता-पिता से बिछड कर गेरदन कैम्प में ही रह रहे थे और जब मेजर असलम पठान जो उस कैम्प का कामण्डर था अपनी फौज पहुंचने पर अमीनेशन स्टोर को आग लगा कर भागा तो अपने साथ कैलाश चन्द्र शर्मा का रेडियो उठवा कर रावलपिन्डी ले गया और वहा जा कर उनकी

बजाजी को दुकान ड ल दी। और बजाजी की सेल करते रहे और कुछ समय के बाद निरोजाल के मुसलमान वापस चले तो कैलास चन्द्र को भी मेजर असलम से इजाजत दिलवाकर साथ ले आये और मेजर असलम जो नेक आदमी था।

उलको वापस आने की इजाजत दे दी। उसी काफीले में अबदुल खालिक नामी बठठी था। जो मेरा परिचित था उसने कैलाश चन्द्र से मेरी वाकफियत कराई काफी समय तक उस का और मेरा आपस में लेन-देन रहा वह काफी मालदार था। उसने दो शादोयां भी की उन में से बच्चे भी थे और काफी सुखी परिवार था · लेकिन शराब पीने की आदत पड़ गई जिसके कारण बिमार हुआ और हस्पताल में दाखिल हुआ मैं उसका पता लेने के लिये गया तो डाक्टरों ने उससे कहा कि आप इस बार बच तो जायेगे लेकिन फिर शराब पी तो मौत हो जाएगो। मैंने भी उसे ससझाया यह काम छोड़ दो उसने मान लिया। और शराब पीना छोड़ दिया थोड़ा समय ठीक रहा लेकिन फिर शराबपीने लगा एक दिन मैंने इसके नौकर की दो बोतले शराब ले जाते देखा और उसको बुलाया तो उसने कहा वह काम बन्द रहा अब मैं रोज लेजाता हुं।पहले मै छुप कर जाता था इसीलिये आपको पता नहीं चला मैंने उस को सन्देश भेजा यह काम मत करो पर उन पर कोई असर नहीं हुआ। और मौत हो गई उसका परिवार जिसमें बहुंत व्यक्ति थे। बड़े दुखी हुये।

वह आजकल भी नीरोजाल में ही है वापस जब में भाई चुनी लाल के परिवार में पहुचा तो उनको वहां खाने का सामान और बिस्तरो की जरुरत थी मुझें याद आ गया जिस वक्त हमें सदयाल ले जाया गया था तो खाने पीने का सामान वर्तन और बिस्तर श्री शराफ के मकान में छोड़ गये थे। भाई चुनीलाल और हरबन्स लाल जो वहां गये और जो बर्तन और बिस्तर की जरुरत थी वह उठा लाये खाना पकाया और खाया और बिस्तर बिजा कर बैठ गये तो परजाई विमला देवी ने कहा कि मेरे बिस्तर में कोई चीज है जो मुझें चुभती है। मैंने जाकर देखा और बाहर निकाला जिस नोटो का बण्डल था जो भाईमीताराम ने अपने लगोट में लपेट कर रताल जाती वार उस बिस्तरमें रख गये थे। रात सभी इक्ठ्ठे बैठे एक दुसरे में बातचीत करने से कुछ और जानकारी मिली श्री अन्नत राम जी गुप्त जो कोटली के वासी थे उस समय वह रजौरी म ही अपने परिवार सहित थे। और मक्की चावल का लेन देन करते थे। पहले वह हमारे ही साथ वाले मकान में रहते थे इसी कारण उस परिवार की पुरी जानकारी थी।

उनके दो पुत्र श्री हरबन्स लाव जी और श्री सुशील जी व उनकी श्रीमती जी उनकी बड़ी पुत्री लज्जया जी और छोटी पुत्री श्री सुशील जी कोटली में थे जो बच पाए सशील जी के माता-पिता मारे गरे श्री हरबन्स जी बहुत कठिनाई से झूझते हुए जम्मू पहुचे उनकी बहिने श्रीमती लज्जया जी औरबहनोई जी कुशल से जम्मू पहुचे श्री धर्मवीर जो चटयाड़ वाले श्री बोधराज जी थन्ना वाले डाक्टर नानक चंद जी के दो छोटे बच्चे जिन को कुछ समय बाद ऊनके पशावर से हवाई जहाज द्वारा लाया गया इसी प्रकार लाला मोहन लाल, लाला दुर्गा दास जी बड़ोट वालू के दो बच्चे भो पाकिस्तान से लाये गए मास्टर बिहारी लाल शाह जी की पत्नी और श्री अमर चन्द शाह जी के सुपूत्र सुरेश जी भी बचे वह जब छोटे थे नो रजौरी में ही एक पानी वाले खू में गरि थे तो किसी ने दुर से देखा तो छलांग लगाकर उसने उने जिन्दा निकाला वह जम्मू में) LIC का काम करते रहे उनके जीवन में अरती शराफत और दुसरों की सेवा का ध्यान रहता था पर प्रभु ने उनको हम सब से छीन लिया श्री जगदीश राज जी थन्ना वाले के सुपुत्र अशोक जी बच पाये दुर्गा दास जो नौशहरा वाले क पुत्र अशोक जी जो अब हम सब से प्रभु ने छीन लिये हैं।

दीवन चन्द जी लंगर के सम्बन्धी दुर्गादास जी रमोत्रा श्री हुकम चन्द जी के परिवार से श्री प्रेम जी सुरी अपने परिवार सहित और श्री कृष्ण दास जी शहा के पुत्र श्री तिलकराज जी और श्री लाल चद जी मन्जा कोट वालू के पुत्र तिलक राज जी श्री गुरदास मल जी थन्ने वाले की पुत्री भी बच पाए रजौरी में फोज बहुत पहले पहुंच जाती पर उस के दो कारण रहे एक तो श्री कृष्ण लाल जी सपुत्र श्री सन्त राम जी बडोत वाले जी उस समय हमारे साथ रजौरी में थे। किसी तरह रजौरी से मीरपुर फिर जेहलम और लाहौर से होते हुए अमृतसर पहुंचे वहां वह जब अपनी कोज में गये तो उन्होंने बातचीत में सावन रथन्क का नाम लिया तो फौजी कमान्डर हैरान हुंए तो इतने बड़े टैन्क वहां कैसे पहुचे जिस को खोज में उनको काफी समय लगा दुसरे बरगेढीयर अस्मान जो उस ससय नौशहरा में फीज की कमान कर रहा था।

रजौरी की ओर फौज को मार्च का हुंकम देता जब फौज थोड़ी आगे बढ़ती तो उसे वापस बुलाता बहुत समय तक ऐमा ही चलता रहा। अन्त में जब उस्मान की मृत्यु हुई तो फौज रजौरी पहुची उडी समय नौशहरां के पास टाईय की पहाड़ी पर नवाब हदीर की टोली पठान फौज थी जिन की गोलो से नौशहरा के दो नौजवान

श्री जगन नाथ जी और श्री टहेल चन्द जी गुप्त मारे गाये थे उस पठान फौज का भी हमारी बहादुर फौज ने सफाया किया दुसरे रोज जब सवेरे जागे तो श्री भीमसेन जी मैंडर वाले जो जम्मू से भाई चुनीलाल जी के साथ आये थे को छोडने नावन तक गगे और उनको छोड़ कर वापसी पर मै और भाई चुनीलाल जी छोवा की टेकरी कर गये यहां फौजी कैम्प था । उनको खाने के वर्तन दिये जो उन्होंने मागे थे । और साथी ही सुध्याल कैम्प की याद कराई तो उन्होंने 7 फौजी जवान जिन में एक ब्रेनगन वाला और 6 राईफल वाले थे ।

उस कैम्प से नीचे पुन्छ रोड़ की ओर चले तो एक छोटी टेकरी पर ब्रेनगन फीट कर दो जवान वहा रुके और बाकी हमारे साथ पुन्छ रोड़ और तवी पार करके सुध्याल ग्राम में पहुचे उधर मुरगे खेत मैं फिर रहें थे फौजी जी कहने लगे यह हमें दो जब हम दोनों भाई उनको पकड़ने लगे तो उपर से गोली की बोछाड़ आने लगी साथ फौजी कहने कगे के पोजीशन ले लो जो ली गई गोला भारी बन्द हुई तो वह कहने लगे के अब वापस चलो इधर दुश्मन हैं । इसलिये आगे नहीं जायेगे वहां से वापस कैम्प में गये तो आफिसर ने पुछा उनको जो कुछ हुआ था । सुनाया तो उन्होंने दुसरे रोज फिर आने को कहा दुसरे रोज मेरे साथ श्री हरबन्स लाल और श्री शान्ति प्रकाश जी नड़यालवी गये अफीसर मलन्फा को मिले तो उसने हुकम दिया की सदयाल की ओर गोला बारी की जावे और दूरबीन से देखा जाये के उधर दुश्मन तो नहीं । ऐसा ही किया गया और पहले की ओर ही फौजी हमारे साथ भेजे पहले की टेकरी पर बरेनगन फिट की और बाकी हमारे साथ गये ।

पून्छ रोड की ओर B.G. से आने वाले नाले को पार करके जिन मकान में उस रात को रोका था चले उस समय वहां हमें एक मुसलमान मिला जिसने अपने हाथ में बखशी गुलाम्मद की ओर से फेन्का इशतार था। जिस में फौज का साथ देने का लिखा था उस के पास एक काली लोई और कुल्हाड़ी थी । जो उसने एक तरफ रख दी थी उस को गोली से मारा गया कुल्हाड़ी फौजी ले गये और लोई हमारे पास रही अब हम सब उस मकान में जा पहुंचे जिस के मेहेन मैं श्रीमती ईशरदास जी वडोटीया और श्री चन्द्र प्रकाश जो मोची सपुत्र लाला हाकम चन्द जी मोदी की लाशे पडी थी श्रीमती अपने पती को बचाने के लिये उनसे लिपटे और चन्द्र प्रकाश जी अपने को बचाने के लिये भांगे तो उन दोनों को पठानों ने गोली मारकर खतम कर दिया । अब उन की लाशों को आग लगाई वहां और कई जिन्दा आदमी न मिला बाकि जो २6 लोग मारे गये थे

वह थोड़ी दूर एक गहरे नाले में ले जाकर दो-2 व्यिफतीयु इक्ठ्ठे बाध कर गोली से मारा था उधर फौजी भाई जाने के लिए न माने और फिर हम तीनो फौजी भाईयो के साथ कैम्प में वापस आ गये।

जो लोग वहां मारे गये उनमें श्री मकन्द लाल मोदी, कुष्ण लाल मोदी, धनीराम अरोइज नवीस, मुकुन्द लाल चुगा, और वाला राम चुगा के सबसे बड़े पुत्र मकद लाल, पशोरी लाल, चन्गिस वाले जगदीश जी न शेरा वाले R.S.S. प्रचारक मनोहर लाल सराफ हन्स राज चटीयांड़ वाले बोधराज चटीयाड़ वाले, द्वोधराज सोकेड-वाले, ज्योति प्रकाश करनल मिलटरी अफिसर, मास्टर सन्तराम फुफड़ा खेल सन्गिज नड़ीयाल वाले, बन्सी लाल केला महाश ईशरदास बडोट वाले कृष्ण चन्द्र जी और ला, हाकिम चन्द मोदी और वहां से बचकर आने वालो में शान्ति प्रकाश नड़ीयालाया श्री नेत्रे प्रकाश जी रोत्ड़ा और पशोरी लाल जन्जोटीया और बावु सीता राम जी पसिटील कलंक वोकों महिलाऐ लड़कीयां और 12 वर्ष से कम आयु वाले लड़के शामिल थे को वह पठाने लोग कहेन्दर के रास्ते कोटली ले गये वहां उन सबली आर्य समाज मन्दिर में रखा गया और उन में से कुछ बच्चों और लड़कीयों को बेच दिया गया वहा उनको खाने का आराम था। पर कपड़े की तकलीफ थी।

फिर उसी शाम को हम तीनों व्यिकती घर वापिस आये रात को सब खाने के बाद इक्ठ्ठे बैठे बातचीत अपने-२ दुख की चली श्री हरबन्स लाल जी नौशहरा वाले जिनका पूरा परिवार रजोरी में मारा गया था और श्रीमती शान्ति देवी नी बड़लवी के पति खी मोहन लाल जी मारे गये थे उनकी लड़कीयां थी। एक छोटा लड़का भा तो उस रोज ही उन दो दुखी परिवारों को इक्ठठा किया श्रीमती शान्ति देवी जी की बड़ी लड़की की सगाई श्री हरबन्स लाल जी के साथ हुई जब अपने लोग शहर में घूमने लगे तो जिव लोंगू ने उनके साथ दूर विवार किया था उनके मकान को आग लगा देते वह लोग भाग गये हुंए थे। मकान खाली थे फौजी आग को देखते तो श्री नरेन्द्र नाथ जी चोपड़ा जो वहा उस समय स्पैशल आफिसर के तोर पर काम कर रहें थे से पूछने के यह आग कौन लगाता है तो चोपड़ा जी ने उन फौजी आफिसरों को कहा कि अब जितने भी हिन्दू इस समय गहर में है सभी दुखी हैं और यही आग लगाते है।

इन्ने मैं जम्मू से श्री बोधराज जी चीफ कनसटवैटर अपनी प्रझाई श्रीमती मास्टर बयारी लाल की लेने, आये और दूसरे दिन आरढर आगीया के कल प्राता 8 बजे सभी राजौरी वासी हिन्दू गुपाल स्हाई वाली भावली के पास शाली वाले खेंतू मैं जम्मू जाने के लिये, अपना सामान ले कर पहुच जावे वहां आपको मिलटरी कानवाये मिलेगी सब लोग जाने के लिये त्यार हो गये मेरे साथ भाई अमर नाथ रीतढ़ा जिन के पास ला अन्द सरुप को लाऐ- बरेरी था और उनका कुछ घरेलू सामान सब उठाकर हम भी और बाकी सब वहां कानवाये में सवार हो गये ।

ला. बोधराज ने अपनी प्रझाई के लिये जिन की सेहत उस समय ठीक न थी । फौजी इमोलस मगांई राजौरी से चलकर रात को हम सब चीन्गस रहे और दूसरे रोज नौशहरा पहुचे । वह फौजी कानवाई नौशहरा तक हो थी । दिन वहां ही रुकना पड़ा जैसे कैसे हुआ रोटी की विवस्था सब नू की और फिर श्री बोधराज शाह की कीशिश से जम्मू जाने के लिये कानवाये मिली नौशहरा से चलकर रात चोकी चोहरा रहे वहां भी जो कुछ किसी को खाने के लिये मिला खाया और सवेरे जम्मू के लिये चल पडे उस कानवाये ने हम सब को अजाऐब घर गरोउन्ढ में उतारा वहां भी कोई विवस्था नहीं थी । जहां-2 किसी को कोई स्थान मिला सभी चले गये जिस के लिये हमारी इच्छा काफी समय से थी के कभी हम भी जम्मू जावे गये और किसी हिन्दू का दर्शन होगा वह आज पुरा होगी भाई मन्गा राम जन्जोट से झन्गड और वहां से नौशहरा होते हुए जम्मू पहुच चुके थे ।

उनके साथ पुज्य ताई जी भी थे और वह पुरानी पोलीस लाईन में रहायश रखे थे । थोड़े समय के प्रान्त मै और हरबन्स लाल नौंशहरे वाले तथा श्रीमती शान्ती देवी नड़यालवी और भाई चुनी लाल जी के परिवार भी वहां चले गये । भाई मन्गा राम के पास 400 रुपये बचे हुए थे वह उन्होंने मुझे दिये जिस से मैंने शादी का जरुरी सामान खरीदा और हरबन्स लाल और सन्तोष की शादी हुई । मैं फिर वहां से पुरानी मन्डी मोत्याल भवन में चला गीयाँ मोंत्याल जी ने अपना एक बड़ा हाल रहाइश के लिये राजौरी वालू को दिया भाई चुनी लाल और हरबन्स लाल नौशहरा

चले गये और अपना काम वहां ही शुरु कर लिया फिर कुछ समय वह राजौरी चले गये वहां काम किया बड़ा अच्छा मकान बनवाया बच्चे हुए उन की अच्छे घरों में शादीयां की पर प्रभू ने उन को सुख भोगने का मौका न दिया । सन्तोष जी की मृत्यु हो गई उन के बीना वह अब दुखी जीवन बतीत कर रहे है मोत्याल भवन मे मेरे साथ च, राम लाल मीरपुरी सदा-वर्ती का परिवार था मुलकराज जी का परिवार भाई अमर नाथ रोतड़ा का परिवार और शान्ती प्रकाश नड़यालावी चा. मोहन लाल और भी कई राजौरी वासी आते जाते थे पर मोत्याल जी का सब के साथ बहुत अच्छा व्योहार था जिस के कारण हम सब वहां मुसीबत का समय बतीत करने लगे ।

हमारे जो 252 महीलांए और बच्चे कोटली आर्य समाज में थे उनकी सब को फिकर थी । सोच बिचार के बाद मीरजा फकीर महमद को एक पत्र लिखा। जिस में उनसे अपच 252 महिलांए और बच्चों के बारे पूछा के वह कहां और किस स्तति में है और आप हमारी इस में क्या मदद करेंगे । उनका पता न था चौधरी गलाम प्रभास के लहौर वाले पते पर पत्र पोस्ट किया । चौधरी गलाम अभास वहां नहीं थे इसलिये वह पत्र उनके सयालकोट वाले पते पर वहां से डाक वाले ने भेज दिया 2 महिने बाद जून 1948 में पत्र का उतर मिरजा फकीर महमद का मिला उसने 252 बच्चों के लिये पूरा पता लिखा और अपना जेहलम का पता भी लिखा अगर आप मुझ मिलना चाहते तो वहा वारढर था लाहोर आकर मिल सकते हैं । आदरनीय चाचाचे मुलकराज दरहाल वाले और मैं उधर जाने के लिये तैयार हुए और साथ ही यह भी चानस मिल गिया के जो मिरजा साहिब ने कहा था के जो हिन्दोस्तानी हवाई जहाज जो कोटली बम-बारी करने के वास्ते जाते हैं । वह आर्य समाज मन्दिर पर इसलिये बमबारी करते मैं के वहा से धुआं निकलता हैं मोत्याल जी के घर हम सब बैठे थे घ एक Air Force का पाइलट वर्दी में उसी कमरे में दाखिल हुआ और वह चाचा मुलकराज का कनास फैलों निकला उसने कहा के मेरे लिये कोई काम हैं तो बतओ उस समय फिर उसको यह कहा के जब आपका हवाई जहाज कोटली जाऐ तो आर्य समाज मन्दिर पर बमबारी न हो वहां राजौरी के 252 बच्चे हैं इस तरह वह वहां सब बच पाऐ मैं और चाचा जी

प्रमीट बनवाकर अमृतसर के लिये तैयार हुंए जम्मू से पठानकोट के वास्ते सवेरे एक पुरानी सी बस मिली रास्ता गहुत खराब था । और जगह-२ पानी भरा था ।

मुशकिल से शाम को पठानकोट पहुचे रात को रहने के वास्ते एक धर्मशाला में गये गरमी और मच्छर बहुंत था । इस लिये वहा खुली जगह में जितनी जगह थी उस पर लेट गये । दिन की थकावट के कारण नींद आ गई और रात को जब एक नरफ से दूसरी ओर मुह किया तो स्थान कम होने के कारण नीचे गिर गया चाचा जी जागे और तूछने लगे क्या हुआ हैं मैंने कहा नीचे गिर गया था पर ठीक हुं । फिर सो गये प्राता टरेन पर बैठे और अमृतसर (दुंगीयान) मन्दिर जा ठहरे चौधरी राम लाल सदाबर्ता हम से पहले ही अमृतसर अपने सुसराल वालों के ही चले गये थे और हमें कह गये थे के जब आप वहां आवैं मूझे मिलना सामान वहां ही छोड़ा और चौधरी साहब का घर तलाश करने लगे ।

पहिले दिन तो न मिला पर दुसरे दिन मिल गया इतने में ला. अन्द सरुप और श्री धर्म सरुप खन्ना भी आ गये उनका परिवार भी उधर ही था हम सभी इकठ्ठे हो कर मरदुलासारा भई के दफतर श्री काला प्रसाद को मिले वहां वह पाकिस्तान से लागू को नकलवाने का काम करते थे । उनको मिलें तो उन्होंने कहा के आप कल आना आप को लाहोर भेज दिया जावेगा दूसरे दिन हम सब चले गये वहां बहुत रश था । किसी भी बात न सुनता था वह दोनों खन्ना भाई तो बस पर चढ़ गये चाचा जी को ना उम्मीद से हो गये और कहा के वह चले गये हैं और हम रह गये हैं मैंने कह आप घबराऐ नहीं कल हम भी सवेरे आ जावेगे और चले जावे गये और ऐसा ही हुंआ ।

लाहोर जा कर हम लाईजन Officer of India के दफतर माल रोड़ ठहरे और खन्ना भाई यू को मिलने नेशनल बैंक आफ लाहोर चले गये वहां वह मिले और हमने मिः जा जी को जेहलम पत्र लिखा दूसरे रोज वह हमें लाईजन आफिसर के दफतर आ लिले बातचीत हुंई । उन्होंने कहा के बच्चे पठान लोग कोटली में बेच गये थे । वह लोगू के घरों में हैं उसमें ज्यादा हमारे ही थे बाकि सभी कैम्प कोटली से दीत्याल

जेहलम के निकट चला गया था । मिरजा जी से कहा के आप कोटली से बिके बक्चों को भी निकलवा कर दत्याल पहुचा दे जो उन्होंने मान लिया और साथ ही वह कैम्प भर्हात में भजवाए उनको खर्चा के वास्ते भी कुछ दिया और वह वापस चले गये दूसरे रोज 15 अगस्त था । खन्ना साहिब के दोस्त बैंक में थे वह उनके पास ठहरे हुए थे और उनका परीवार दरहाल मलकां राजोरी के निकट ही मुन्शी जमाल दीन के परिवार के साथ था । हम सबने 5+5 रुपये दिये और उस जशन में शामिल हुए और साथ ही वहां से वापसी का परमीट भी लिया और ओमनी बस पर सभी अमृतसर वापिस दुर्गायाना आ गये लाहोर में जब हम लाईजन आफिसर के दफतर से बैंक में गये वहां यह फैसला हुआ के हम सब बैंक में इकठठे हो जाए तो हमें यहां से मैनेजर की कार बस सटैंड पर छोड आवेगी हमारा सामान तो माल रोड वाले दफतर में था मैं अकेला ही सामान लाने एक फुल टान्गा करके चला रास्ते में टागेवाले से बात चीत हुई उसको मैंने कहा के मेरा दोस्त इन्डिया से आया हुआ था उसको मैंने बीस्तर दिया था वह लेने जा रहा हुं और जब रास्ते मे नंगे सिर वाली कुछ मुसलिम नौजवान लडकीयां मिली तो मैंने टांगा वान से कहा के हमारे ईसलाम में यह नगे सिर की अजाजीत नहीं है और यह देखो क्या हो रहा है वह बोला बाबू आपका तो ख्याल बहुत अच्छा हैं-आज कल यही कुछ हो रहा हे

वह मेरी बात से बहुत ख़श हुआ और मुझे मुसलिम समझा इतने मे दफतर आ गया और मैंने उसको एक रुपय दिया जो उस से टान्गा का बीया था । वह कहने लगा आपने वापस चलना है उधर ही देना मैं सामान उठा कर आ गिया और टान्गे पर बैठकर बैंक आ गये । सामान उतारा और २ रुपे दिये उसने एक रुपया वापस कर दिया । कहने लगा के बाबू आपका ख्याल मुझे पसन्द हैं इसलिये मै एक तरफ का ही किराया लुगां बैंक से सभी कार या बस सटैंड पर और बस पर जब बान्धर पहुचे तो सब की उतार कर लाईन में खड़ा किया और तलाशी लेने लगे मेरे हाथ में सामान के थैला थी उसके उपर धोती थी । वह देखते ही कहने लगे के यह धोती वाले है और फिर तलाशी नहीं ली । और हम सब अमृतसर पहुचे दुरगियाना मन्दिर में रहते हुंए मुझे एक दिन बुखार हो गया दवाई न खाने पर चाचा जी नाराज हो गये और कहने लगे जम्मू वापस चले जाये

खैर दुसरे दिन मैं ठीक था । पर मन्दिर वालों ने हमें वहा से जाने को कहा फिर मैं और चाचा जी बाबू राम लाल जी गुप्त जो उस समय मन्जीठा रोड़ अमृतसरी गंगाराम हस्पाल मै मलाजम थे ने हम को एक कमरा वहां रहने के लिये दे दिया ।

मिर्जा जी जी को फिर मिलने की ईच्छा हुई उनको लाहौर मिलने का पत्र लिखा और जलन्धर जाकर लाहौर के लिये प्रमीट लिया और कुछ कपड़े और रुपे दतयाल कैम्प में देने के वास्ते और एक रजाई मिरजा जी के वास्ते तैयार की वह सामान ले कर चाचा जी लाहौर गये और सब सामान मिर्जा जी को दिया उन्होंने कहा आपके जो बच्चे कैम्प से बाहर थे मै बड़ी मुश्किल से अपने भाई ममद आलय की मदद से कोटली में लोगू के घरों से नकलवा कर कैम्प मैं पहुंचा दिये है । दतयाल कैम्प का कमान्डर चौधरी अब्दुल अजीज ठेकेदार था । जो बहुत ही शरीफ़ और हमदर्द आदमी था मिर्जा साहब ने कहा के कुछ बच्चे अगर आप जल्द नकलवाना चाहते है तो उनके नाम मुझे दो मैं खान इबराइम अज़ाद कश्मीर वाले अपने दोस्त से परमीट लेकर भझवा-दुगा चाचा जी वापिस आ गये मिरजा जी ने कपड़े और रुपे जैसे उनको कहा था बांट दिये जिसकी चिठी हमें ठेकेदार की दवारा अमृतसर आई फिर हम बाबू राम लाल जी के घर से निकल कर एक धर्मशाला में चले गये वहां हमें पत्र पाकिस्तान से आते रहते थे ।

जिन की खोज में CID वाले हमारे पास आते रहते थे । जिसके कारण वहा से भी हमें निकलना पड़ा और हम अपने आड़ती M/s. जमीता मल परस राम लावेहा मण्डी अमृतसर मझीठ मण्डी चले गये उसी मार्कीट के पोस्ट आफिस में बाबू दुर्गा दास शर्मा पोसटील कर्लक थे । उनके दवारा हमें सब डाक ठीक मिल जाती C I D वाले वहा भी आते तो बाबू जी ने उनहे सारी बात बताई तो फिर उन्होंने हमारा पीछा छोड़ा जब हम राजौरी से जम्मू और जम्मू से अमृतसर आ गये तो भाई सीताराम जी का कोई पता न था । तो मैं अमृतसर से चीठी लाहौर दफतर ऐहमदीया

के दफतर में लिखा कर्ता के मैं आपके परिवार मे आया हू और जम्मू में फंसा हुआ हू आप मेरे इस परिवार को पता देवे के वह पाकिस्तान में फिम जगहां हैं और उनका पता वापसी चिठठी का मोत्याल भवन पुरानी मण्डी जम्मू का देना उनकी चिठठी जम्मू मोत्याल जी को मिली उन्होंने मुझें अमृतसर भेजी उस में उन्होंने लिखा था के दीन मंम्द नज़ामदीन चक जमाल कैम्प जेहलम के नजदीक है और उनका पुरा पता भी लिखा और साथ ही यह भी लिखा के और कोई काम हो तो वह भी लिखे मैंने फिर उस पते पर पत्र उनको चक जमाल लिखा और साथ ही ममद शाह पोस्ट मैन ने पत्र लिखा के आपके भाई सीता राम जी की B. G. में ही हैज़ा से मौत हो गई थी और आप का भतीजा राविन्द्र हमारे पास है और वह हमें मरने से पुर्व कह गये थे के अगर मेरा भाई जिन्दा हो और आप से रविन्द्र की मांग करे तो उसे दे देना नहीं तो अपने साथ रखना।

इसलिये आप जब चाहे आकर ले जावे उधर हम काली प्रसाद से मिले और उनको अपना दतियाल वाला कैम्प नकलवाने की प्रार्थना की तो उन्होंने कहा के जम्मू में कुछ मुस्लिम लड़कीयां बरामीद हुई हैं जिनको पाकिस्तान भेझने की योजना है उनको रुकवा लो तो आपका कैम्प जल्द आ सकेगा। जम्मू में मोतयाल जी को इस विशे में पत्र लिखा उन्होंने वाकी साथियों को ले कर इस काम की कोशिश की जिस में उनको सफलता मिली और उसका हमारे कैम्प के टरान्शफर होने में लाभ मिला जेहलम से मिरजा जी का पत्र आया के मैंने आपके बताए व्यकतीयू को भारत भेजने का प्रमट ले लिया हैं आप आए और उनको साथ ले जावे चाचा जी लाहौर चले गये उधर लाहौर में क्रिकेट मैच की छुटटी हो गई इसलिए प्रमीशन न बन सकी और चाचा जी के प्रमट की मियाद खत्म हो गई और वह वापस चले आए मुझे उस रोज यह ख्याल था की अभी चाचा जी आते हैं और उनके साथ बच्चे भी आवे गये। सरवत सर्दी थी और मै सड़क में बैठा रहा देख रहा था रात के दस बज गये पर कोई भी न आया उसके थोड़ी देर बाद टान्गे के घोड़े के पाओ की आवाज आई जब वह आये तो अकेले थे। मन को बहुत दुख हुआ पर कोई चारा न था इसी तरह दो महीने भीत गये पर उन के आने का कोई सादन न बना

एक दिन प्राता चाचा जी उठे तो कहने लगे मै आज जालन्दर जा कर प्रमीट की मियाद बढ़ा लाऊ मैंने भी कहा ठीक है। आप जाए वह कह गये के मैं वहां पहुच कर आप को टेलीफोन करुगा इतने में

लाहौर से मिरजा जी का टेलीफोन आया के बच्चे सब आए है आप आकर ले जावे और उन्होंने अपना T. P. No. दिया चाचा जी का टेलीफोन आया उनको मैंने सब कुछ सुनाया तो उन्होंने कहा के आप उन को कहें के वह बच्चों को ओमनी बस पर अमृतसर भेज दे मैं उनको कल लाहौर मिलूगा वह वहां ही रहों फिर मैंने उनको लाहौर टेलीफोन किया और वैसे ही उनको कहा जो उन्होंने मान लिया और मुझे कहा के आप उनको लेने वहां आ जाना मैं चौधरी रामलाल जी को साथ ले कर वागा बारड चला गया वहा एक ईन्टों की पटडी बनी थी जिस पर पाकिस्तान की और एक सटेनगन वाला मलेशिये की वर्दी वाला जवान खडा था अपनी और अपना जवान अपने देश को वर्दी में सटेनगन लिये खड़ा था। उसके उधर लोहे की पाईप से रास्ता बन्द किया हुआ था और वहां गेटकीपर बैठा हुआ था उस के पास हम दोनों बैठ गये एक दुसरे की जानकारी हुई वह बन्नू कोहाट का रफयूजी था उसने हमारी मुसीबत की कहानी को हल्द समझ लिया अमृतसर में रहते एक और परेशानी जो देखी उस समय भारत सरकार नगाब हैदरा बाद से जन्ग का पेश खेमा बना हुंआ था और अमृतसर से 3/4 अबादी भाग चुकी थी मैं और चाचा जी शाम को एक पार्क में जाया करते थे यहा एक ऐसा व्यक्ति आता था जो पुरे दिन और पहली रात की खबरें सुनाता था। वह सुनकर रेलवे स्टेशन चले जाते थे रेलों में बहुंत रश था फिर भी यही सोच थी के जब हालात बहुत खराब हुऐ तो वहां से ही हम भी भाग कर जालन्दर चले जावे गये।

पर भला हो सरदार पटेल का जिन्होंने एक दिन में ही काम पुरा कर दिया अधर 31-1-49 आ गया और प. नेहरु ने जन्ग बन्दी पाकिस्तान से कर के मुल्क को बरबाद कर दिया। बन्नू वासी ने हमारी बात सुनी तो वह कहने लगा के बस इस समय तक तो आ जाती है पर आज देर हो गई है कभी-2 ऐसा हो जाता है। आप फिकर न करें बस जरुर आयेगी और जब तक आप अपने आने वालों व्यक्तियों की जानकारी न ले पाए गये मैं गेट नहीं खोलुगा और उसके बाद जब चलेगी तो आप को उसमें बिठा दूगा हम रे लिये उस समय यह भी बहुंत बड़ी बात थी रात के दस बजे के बाद बस आ गई और गेट के परे रुक गई मैं और चौधरी जी उठें और उन्होंने आवाज लगाई के इस बस में कोई परबोध चन्द्र है अन्दर से आवाज आई है तो चौधरी जी ने पूछा और कौन-२ है अन्दर से प्रमोद जी ने कहा रविन्द्र और पुष्पा बहिन जी उनकी लड़की और ऊ प्रकाश दहेरीयां वाला उस समय हमारे लिये कितनी खुशी वाला मौका था जो लिखने में नहीं आ सकता उस व्यक्ति ने फिर हम दोनों को उसी बस पर चढ़ा दियो एक उसी बस का यात्री मुझे कहने लगा पीछे खड़े हो जाए मैंने उ से कुछ भी न कहा और खड़ा

रहा अमृतसर रेलवेस्टेशन पहुच कर बस ने उतार दिया और एक टान्गा कराये पर लिया और उस पर सभी बैठ गये और सीधे लोहा मन्डी जा कर उतर गये और अपने कमरे में चले गये ।

ऊं प्रकाश जी को कैम्प में तपेदिक होने के कारण भेजो गया था राजौरी आ कर ठीक हो गये और काफी समय बाद अपनी मौत मरे अब जालन्दर से चाचा जी वापस को औरमिरजा जी आ गये मिलने लाहोर चले गये उनसे मिले जो बातचीत थी की औरवापिस आ गये मैं सवेरे ही परमोद जी रविन्द्र जी और ओम प्रकाश जी साथ लेकर दुर्गायीना मन्दिर गया वहां जा कर उन सब के बाल कटवाये कपड़े और बूट लिये अशनान करवाया और मन्दिर मैं प्रभु दर्शन कराये घर वापिस आये और टान्गा करके बाबू रामलाल जी को मिलने गये शाम को वापिस आ गये । उस समय हमारे पास तो वापसी का परमीट था पर जो बच्चे पाकिस्तान से आये थे । उन के पास न था पठानकोठ बरगेढ में चाचा जी गये वहां मिलने पर पता चला के फौज अपने टरकू पर जम्मू भेज देगी । दुसरे रोज पठानकोट सब आ गये रात को एक होटाल में रहे फौज में जाकर समय और स्थान का पता किया सवेरे कानवाई चली उसमें फौज का सामान लोढ था । और हम सब को उस सामान के उपर छत पर बिठा दिया २ बजे हम सतबारी पहुंचे वहां उतारा गया वहां से टान्गा किया और सब मोत्याल भवन मे पहुचे वहा रिहाश रखी प्रभू के कृपा की और दत्य,ल कैम्प के सभी 250 बच्चे महिलाऐ और बाबू सीता राम जी पोसटील कर्लक पाकिस्तान के टरकें पर सयालकोट के रास्ते सोचेतगढ पहुचे वहां मुसल्म लड़कियों के साथ टरान्सफर हुंई और सब कच्ची छावनी रेड-क्रास कैम्प में लाए गये सब बच्चे अपने-२ वारसों के साथ चले गये मै कैम्प पहुंचने से दुसरे रोज पहुचा जैसे मुझे पता चला मैं वहा चला गया वहा सिफ मेरी तीन छोटी बहिने और दो भान्जे कुलदीप राज सत्य पाल अन्नरुठ वाले थे उन सब को मै अपनी जानकारी दे कर मोत्याल भवन ले आया ।

चौधरी रामलाल जो भी अमृतसर से आ गये थे। वहां सब के लिये जगह कम थी इसीलिये हम ने दो सैट किराये पर प्रोफेमर गोवरधन सिंह जी से लिये और दोनों परिवार उन्हे जा बसे दो सैट का किराया कुल 30 रुपये लेते थे । उनसे हमारे बड़े अच्छे सम्बन्ध बन गये और फिर हमने अपनी मरजी से ही उनको किराया 40 रुपये कर दिया। तो प्रोफेमर जी मुझे कहने लगे आप भी अजीब आदमी है । बाकी मेरे सब किराएदारों ने किराया बंद किया हुआ है । और कोंट में दावा किया है के किराया कम

किया जाए और एक आप ही की किराया दे भी रहे ही और साथ ही 10 रुपये बढ़ा दिये है। मैंने उनसे कहा यह अपना-२ ख्याल है तीनों बहिनों को मामूली पढ़ाकर समय समय पर शादी करवा दी और दोनों भान्जे जो कहने लगे हम नहीं पढ़ें गये उन्हे मजबूर के दाखिल स्कुल करवाया बड़े ने महकमां माल में सरकारी नौकरी कर ली और छोटे ने B. S. C. कर के ऐगरी कलचर की टरेनिंग कर बड़ी अच्छी नौकरी मिल गई उसके बाद उनकी मरजी मुताबिक शादीयां कर दी अब वह दोनों अपने-2 परिवार में रह रहे है तोनों बहिने भी अपने-२ परिवार में रह रहां हैं।

सबसे छोटी बहन सुन्द्रशान्ता की मृत्यु हो गई हैं। जम्मू में ही जब दत्याल कैम्प आ गया तो फिर मेरा ध्यान अजीज रविन्द्र जो मेरे बड़े भाई सीताराम जी सुपुत्र हैं को नकलवाने में लगा उनके साथ पत्र लिखकर पुरा पता पहले ही कर लिया था। अब मिरजा जी को पत्र लिखा के आप मेरी एक और मदद करें मेंरा भतीजा रविन्दर जो इस समय सराये आलमगीर जेहलम में दीन ममद नज़ाम दीन सुपुत्र दीदार बक्श के परिबार में है। वहां से आप लाहौर लाये वह उन्होंने मान लिया इधर से चाचा मुलकराज जी के मित्र कुन्दल लाल जी अपने किसी काम से लाहौर जा रहे थे उनको रविन्दर लाने के लिये कहा गया। और साथ ही मिरजा जी और दीन ममद आदी को पत्र लिखे वह रबिन्दर को साथ लेकर लाहौर बताये पते पर पहुचे। और वहां से श्री कुन्दल लाल जी उसको जम्मू साथ लाये। उस समय उसकी हालन बहुत खराब थी जैसे भी हो सका इलाज आदी करवाया और दसवीं तक राजौरी स्कुल में पढ़ाया उधर रविन्दर के नोःयाल की जयदाद मकान दुकाने जमीने जिन की देखभाल प्रोफेसर शान्ति प्रकाश जी कर रहे थे एक दिन मुझे बुलाकर कहने लगे। के भगत लखपत राये जी चोगा के सभी परिवार के मारे जाने पर बदकिस्मती से मैं वारिस था। पर अब रविन्दर के आने से वह वारिस है।

इसलिये वह सब प्राप्रटी उसकी है। जिसे आप देखभाल करो रविन्दर को दसवी पास करवाकर मझफर नगर प्रोफेसर जी के पास भेजा वहां उसने 12 क्लास पास की और बखशी गुलाममद से B.D.S, की सीट BOMBAY मिली उसे मैं आदरनीय कनसरवेरट जी ने मदद की और रविन्दर को उस कालेज म श्री ऊं प्रकाश गुप्ता गीरपरी जो वही जम्मू-कश्मीर सरकार के टरेढ कमीशनर थे। की मदद से दाखिल करवाया एक साल वहां पढ़ा पर मन न लगा M.B.B.S. की सीट के वास्ते श्री अब्दुल अजीज जी शाह M.L.A. अब हमारे बीच नहीं हैं द्वारा कोशिश की

सीट मिल गई श्रीनगर में M.B.B.S. पास की जो अब B.M.O की पोस्ट पर हैं और उनकी शादी भी जम्मू के ही एक अच्छे परिवार में उनकी मरजी से ही करवा दी गई। अब वह अपने परिवार में अपनी कोठी मे जो उन्हे खरीद कर दी थी रह रहे हैं। 1952 तक मै जम्मू मे ही रहा और 5/6 लोग हम इक्ठठे ही काम करते थे जिन मैं मेरे साथ ला मोहन लाल जी चांचा मुलकराज जी भाई अमरनाथ जी रौत्ड़ा शान्ति प्रकाश जी नडयालवी और श्री चौधरी राम लाल जी मीरपुरी थे। काम इतना अच्छा न चला और थोड़ी बहुत रकम थी वह भी खत्म होने लगी खर्चा काफी था। इसलिये मैं इस कम्पनी से फारिग होकर राजौरी वापस जाने का सोचने लगा।

M/s सीताराम मालिक राम जी मीरपुरी जिनसे हमारा 1947 से पूरव मीरपुर में लेनदेन था। जब 1947 में हालात खराब हुये और आना जाना बन्द हुआ तो उन दिनों मे मैंने उनसे दो मन हलदी साबत मगवाई जिस की कीमत उस समय 50 रुपये थी वाकी मेरे जिम्मे रह गई थी। जिसकी मुझे याद थी एकबार उनको मैं हरिदवार भी मिला था। और उन्होंने मुझे अपने पास बिठाकर बड़ी हमदर्दी से बात की थी अब वह भी जम्मू मे आ गये थे। तो मैं उनको उनकी दुकान पर वह 50 रुपये देने गया तो वह मुझे कहने लगे के आपको ऐसा करना कैसे याद आया हमने तो हजारों रुपये लोगों से लेने थे जो जिन्दा बच गए थे किसी भी ने नही दिये तो मैंने उनको 50 रुपये देकर कहा के यह सब आपका ही आर्शीवाद है। उसके वाद फिर मैने कुछ रकम M/s लालचंद विधानाथ जी को और ला. कालू मल दीवान चंद जी को भी दी जो पिता और भाई सीताराम जी की दुकान M/s सन्तराम सीताराम के बकाया थे दिये तो श्री सीताराम जी मीरपुरी जो हमारे बीच नहीं है ने मुझे कहा के मैं आप पर बहुत खुश हु। आप रजौरी जा रहे हैं तो आंप मेरे साथ पार्टनरशीप रख ले मुझे जो मरजी देना मैंने उनको हाथ बांधकर कहा के आप ने मेरी बहुत हौसला अफजाई की है पर मेरे राजौरी मे फूफीयाद और ताया जाद दो भाई लक्षमन दास और मन्गा राम है उनके पास भी कोई काम नहीं है। अगर उनसे वात हुई तो ठीक नहीं तो आप के कहे की आदर करुहां राजौरी जाने पर अपने भाईयों से बात काम के लिये तह हो गई और हम तीनों ने 1952 से 1962 जी जान से काम किया 1952 के बाद भी कई बार हालात वदलते रहें।

जिन से सभी को परेशानी होती एकबार 26 जनवरी के पहले 10/15 दिन यह सोशा गुन्जने लगा के पाकिस्तान 26 जनवरी को हमला करेगा। और राजौरी

नगर के निकट वाले ग्राम और नगर में मुसलमानो के मुहल्ले खाली होने लगे जो परिचीत मुसलमान थे उनसे मैं पूछता के आप लोग क्यों भाग रहे हे तो । वह कहते के कोई सही पता नहीं के किया होगा। ज्यादातर लोग बोरायां खाली और आटा खरीदते थे और शहर से काफी हिन्दू परिवार भी जम्मू आ गये थे। सब को देखते हुए मैंने भी जरुरी सासान बांधा और दुसरे रोज पठानकोट जाने के लिये सीटे भी बुक करवा दी वहां मेरे एक मित्र मदन लाल जी गुप्ता जो मीरपुरी कालोनी में रहते थे उसी रात को मेरे दोनों भाई श्री लक्षमन दास और श्री मन्गा राम मेरे घर आए और कहा के आप सामान बांध कर तैयार बैठे है । पर हम दोनों के परिवारों को किस के सहारे पर छोड़ चले हो उन के इन कहे शब्दों पर मुझें महसुस हुआ और कोई उतर न दे पाया उन्होंने कहा के आप कल का दिन देख ले अगर हालात मे कुछ सुधार हो गया तो ठीक नहीं तो हमारे दोनों परिवार अपने साथ ले जावे हम दोनों भाई यहां रहेगे आप अकेले यहां रहना पसन्द करे तो हम दोनों तीनों परिवार लेकर चले जावे गये जैसा आप कहें गये वैसा ही करे गये दुसरे रोज 12 बजे बाजार में जनरल विक्रम सिह की ओर से मनायी हुई के कल पोलिस स्टेशन राजौरी में एक पब्लिक जलसां होगा जिस में सभी हिन्दू मुस्लम आवे 26 जनकरी जिस से लोग डरे भाग रहें हैं। यह किया है जानकरी दी जावेगी दुसरे दिन सवेरे ही हर ग्राम से और शहर से लोग इक्ठठे हुंए जनरल साहिब की तकरीर हुई उन्होंने कहा यह सब पाकिस्तान की शरारत हैं। वह हिन्दू मुस्लीमान को लड़ाना चाहता हैं और हालात को बगाड़ना चाहता हैं इसके स्वा कुछ नहीं मैं अपने ग्राम का नमरदार हु मेरे कहने पर मेरे ग्राम वासी भी इत्वार करते हैं आप भी यकिन मानो कुछ भी नही होगा। और जब भी कोई हमला होगा तो वह हमारी फौज पर होगा ।

जो उनका अच्छी तरह स्वागत करेगी आप कोई फिकर न करें । उनका कहना था के लोगों ने बड़े जोरदार नारे लगाये जिन में हिन्दू सेना जिन्दावाह हिन्दोस्तान ने जिन्दावाद और सब लोग यह नारे लगाते अपने-२ घरों को गये और अपने-२ काम में लग गये और कुछ भी न हुंआ 26 जनवरी बड़े जोश-खरोश से मनाई गई और हजारों लोग आये स्थान हवाई जहाज ग्रांऊड था। और उस में तिल रखने की जगह न थी हालात सब ठीक हो गये। हम तीनों भाईयों ने भी काम और बढ़ाया उस में श्री जगदीश राय जी मीरपुरी श्री नेतर प्रकाश जी रघुनन्दन लाल जी मोदी भी शामिल हुंए हमारे पास बजाज़ी करयाना मन्यारी पन्सारी लोहवा कन्टरोल की चं जें बासमती चावल आटा मक्की, कनक; सुजी, मैदा, खण्ड, देसी खण्ड, काला नमक, कोईला, मिटटी का तेल,

सीपरीट, सरीया, सिमेंट, काली सफेद पलेन चादरें नाली दार चादर, ट्रक, फटकरी यह सब काम बड़ी अच्छी तरह चलाया। एक छोटी सी बात पर आपसी इतवार खत्म हो गया और मैंने कहा के अब हमारी पार्टनारशीप नहीं चल सकती और अहिस्ता अहिस्ता सब काम खत्म कर दिये फैक्टरी रधुन्दन लाल जी मोदी को दी सिर्फ हम तीनों भाई इक्ठ्ठे रहे दुकानों का माल ग्राहई कम किये एक दुकान भाई मन्गा राम जी की और दुसरी मैंने रखी भाई लक्ष्मण दास जी की अपनी दुकान थी जो मैंने अजीज राजेन्द्र को किराये पर लेकर दे रखी थी।

अजीज राजेन्द्र को एक दुकान कीमती लेकर दी और नई बनाव कर दी वह उस नई दुकान मैं चला गया। और भाई सहाब लक्ष्मण दास को अपनी दुकान मिली आदि बजाजी मैंने भाई लक्ष्मण दास जी ने और जैसे कैसे हुआ किरयाना भाई मन्गा राम जी ने लिये ग्राही दुकान मैं बसूल कर के बांट दी और तीनों अपना अपना काम करने लगे 1962 में चीन की जंग लगी और हालात बिगढ़ने लगे नगर में खोफ जरुर था थोड़ें दिनों में जग खत्म हो गई और नगरवासियों को कोई परेशानी न - देखनी पडी 1962 से 1964 तक अरास से समय गीता और 1965 आया अपनी स्टेट के कुछ लोग यात्रा के लिये बाहर गये और वहां गोरीले वाला शड यन्त्र रवा गया और लोगूं से कभी कभी सुना जाने लगे के फलां ग्राम में फलां जगंल में कुछ सादे कपड़ों मे शस्त्र लिये लोग देखे गये हैं।

आरवीर 5 अस्गत 1965 को सवेरे जब हम सब रघुनाथ शाखा में थे वहां पता चला के गोरीलु की टुकड़यां गौरधन वाला ढून्गी ब्रहमनां और ढांगरी की पहाडियों पर मौजूद है और कई लोग ने नगर में आ कर सुनाया सारे नगर में खोफ हरास फेल गया उसी समय श्री ओम प्रकाश जी मभरवाल कारीवाहा R.S.S. और श्री प्रसराम जी गुप्ता प्रधान भारतीय जन संघ की रहनमाई में सीटी जन कमेटी बनाई गई और कमेटी जनरल साहिब को मिलने ढीव हैड क्वाटर गई सारे हालात बतालाऐ और उन से यह तह किया के नगर में रात दिन अपने R.S.S. वरकर चौकसी करें गये और बाहर देखभाल फौज करेगी और जंसे भी हालात हुंग गये आप को मिल कर सुचीत करते रहें गये और साथ ही हमारे नगर के 70 R.S.S. वरकर यहां भी आप की जरुरत पड़ेगी साथ दे गये उसी रात की स्नातन धर्म सभा में बैठक रखी सब हालात की जानकारी दी और खून देने वाले की लीस्ट बनाई खून सब का टास्ट करवा कर लिस्ट में लिख लिया और नगर में जो गालियां बहर से अन्दर आती थी।

रात और दिन को नगरानी के वास्ते पीकट लगा दी रात को सारे गली महल्ले में चक्कर लगाये जाने लगे दुसरे दिन खबरें मिल के गोरीले दरहाल मलकां थन्ना मण्डी बुध्धल दलहोड़ी आदि मकामात में भी फेल गये हैं इस की सुचना जनरल साहिब की दी और सारी फौज ऊची चोटियों पर चली गई 1947 में बहरी मोरचे पीनशनर फौजियों को दिये और वह समय पर हमें धोखा दे गये जिस करण हमें मौत का मुहुं देखना पड़ा और 20 हजार हिन्दू मारे गये इस लिये इस वार ऐसी विवस्था नहीं पानी स्पलाई के वास्ते70टीन के महं कटवा कर लकड़ी पकड़नेके लिये लगवा ली और बयूपार मन्डल का प्रधान में ही था सब लोग को बुला कर कहा गया के किसी चीजे के रेट नहिं बड़ने चाहिए और फौज से रेट से भी कम दाम लिये जावें गरामें से बहुत से हिन्दु भी नगर में आ गये महेन्द्रर दरहाल आधी से ज्यादा लोग और नगर से हिन्दु जम्मू आदि स्थान पर चले गये मैंने भी अपना पारिवार जम्मू भेज दिया और जम्मू से वह कान्गड़ा चले गये ।

अपने कुछ साथियों ने इस पर इतराज किया परन्तु मैंने उन को कहा के बच्चे भेज देने पर मेरा हौसला दुगना हो गया हैं और मैं अन्त तक आप के साथ रहुगा ऐसा ही किया गरामों और नगर का नाता टूट गया कोई मुस्लिम नगर में नहीं आता था बस सर्वस खत्म हो गई थी पराईवेट सर्वस फौज का समाना आदि लाती थी और वापिस पर जम्मू की सवारी ले जाती थी मैंने भी अवनी दुकान से काफी बजाजी भेज दी थी फौज कम होने के कारण P.A.P. पंजाब से आई उसने 2 पैंकट पलमां में लगाई और फौज ने ग्राम में फलेग मार्च किया और कुछ मस्लमान जो मशकूक थे उन को पकड़ा और 2 मार भी दिये गये नगर में और नगर के साथ वाले ग्राम से सभी मुस्लम दूर के गांम में भाग गये नगर म श्री अबदल अजीज भाल M.L.A. और मुन्शी जमाल दीन अरजी निवीस और उन के पुत्र खवाजा नसीर अहमद तसीलदार के पारिवार थे और जवाहर नगर में सभी मुस्लिम पारिवार थे जो फौज के फलेग मार्च पर भाग कर नगर में आ गये नगर की विवस्था हमारे जिम्मे थी हम ने उन को स्टेशन जज आफिस का पुरा कम्पलकस दे दिया ।

और राशन आदि वस्तु जो उनकी जरुरत थी दी और सवेरे शाम उन का पता लेने जाया करते थे उन में जो पक्का पाकिस्तानी था वह एक दिन कहने लगा के लोग हमें ढराया करते थे के संघ वाले लोग मुस्लम को कच्चा खा जाते हैं पर हमारे साथ आप का विवहार तो फरीशतो जैसा हैं राजोरी में सरकार नाम की वस्तु न थी सभी अदालतें बन्द थी श्री एम० एम० खजूरिया जी उस समय वहां ही

D. S. थे हमारी एक मीटिंग में आये हुये थे और बातचीत के दौरान कहने लगे के हर प्रकार की जिम्मेदारी तो आप लोग निभा रहे हैं मैं इस समय कुछ भी नहीं कर पा रहा हूँ।

फौजी गाड़ियों से राशन आदि उतारना ऐमीनेशन लोड करना उन्हें गाईड की जरुरत होती तो गाईड देना उन ही दिनों में जम्मू से सरकार ने चौधरी भारत भूषण जी को राजौरी भेजा हुआ था ता के वहां फौज मुस्लम को तंग न करे लेकिन नगर के नागरिक उन के इस काम को अच्छा न समझते थे एक दिन जब हम मृतक फौजी जवानों का संस्कार कर रहे थे तो वह वहां गये हुये थे किसी ने कुछ उनके विषय मे खबर उड़ाई तो वह उसी समय अपनी जीप पर वापिस फौजी कैम्प में चले गये और वापिस जम्मू आ गये पाकिस्तान हर रोज एक हवाई जहाज रात को भेजा करता था जो हमारे नगर के ऊपर से गुज़र कर दराल ऊपर वाले पहाड़ पर यहां पानी की झील हैं जिस को सर कहा जाता है और वहां बड़ा मैदान है उस मे वह शस्त्र असत्र फैंकता था यह बात हम ने डीब मे सभरवाल जी और परस राम जी द्वारा सुनाई तो जनरल जी ने कहा के गराने वाली तोप इस समय हमारे पास नहीं है जो शीघ्र मन्गवाली गयी वह हवाई जहाज़ आना बन्द हो गया। फौजी कार्यवाही जो रात के अन्धेरे में आती थी रात और दिन के समय गोरीले की चलाई गोलियां हमारे बच्चे के सरहाने पर आ पड़ती थी यहां से गोरीले का पता मिलता वह रिपोटर डीब मे दी जाती थी तो वहां उसी समय गोलावारी होती थी शमा मण्डी में दो छोटे छोटे पुल थे जिन की रखवाली फौज कर रही थी पर उन की संख्या कम थी इसलिये वह मारे गये और पुल भी जला दिये गये और पलमां मे मे जो दो P.A.P. की पीकटस थे उन पर पठानों और ग्राम के मुस्लमों ने हमला कर दिये पहिले तो पठानों का हमला उन्होंने पछाड़ दिया और कुछ पठान मारे गये।

जिन की लाशें देखी गई फिर कुछ और लोग उन में आ मिले और दोनों पीकटीस उन के कब्जे में आ गई और एक जखमी फौजी को वह घोड़े पर बैठा कर धराल ले गये जब हमारी फौज धराल गई तो वह जखमी फौजी को देकर अपना प्रान बचा लिया जब हमें पीकटस दुश्मन के कब्जा में चले जाने का पता चला तो हम सब सभरवाल जी और परस राम जी की रहनमाई में डीब मे गये और उन को कहा के 2/4 ट्रक फौजी हमारे साथ भेजे तो के हम सब उन के साथ जा कर उन

पीकटस की खबर लें पर जनरल साहिब कहने लगे के इस समय यहां कोई फौजी नहीं जिसे उधर भेजा जा सके हमारे सजवर करने पर उन्होंने दो ट्रक भेजे जिन में बीमार रोटी पकाने वाले या सफाई आदि वाले फौजी थे फिर भी हम उन के साथ गये और कुछ मृतक फौजी और जख्मी जो खेतों में छुपे थे साथ लाऐ और भारत माता के जयगोश बोलते हुए वापिस आये दुसरे रोज मृतक फौजियों का जलुस निकाला और सारा खर्चा अपने पास से किया जिस से फौजी बहुत प्रभावित हुए।

1962 की लड़ाई में बहुत से लोगों को ट्रेरिंग के लिये बुलाया गया था बाकी लोग तो भाग गये सिर्फ R.S.S. के कार्य करता रहे और जब फाईर करने का समय आया तो हमे कहा गया के फाईर से मुस्लिम नराज हो गये और 1965 में भी ट्रेरिंग हुई और बाकी फिर भाग गये 50 R.S S. वाले और एक मुस्लिम टीचर था हमें फिर फाईर से इन्कार कर दिया और कहा के लकडी की राईफल से सीख लो वह हम ने मान लिया पर वह फिर उस से भी इन्कार हो गये हम डीव में जरनल साहिब के पास गये तो उन्होंने एक सूबेदार की ड्यूटी लगाई के इन 25 आदमियों को दो दिन गरनेट 303 की राईफल की टरेरिंग दे कर फाईर करवाऐ सुबेदार जी हमारे 51 व्यक्यिों के लिये ही मान गये और तीसरे दिन फारेन्ग के वास्ते तवी किनारे बुलाया हम सब वहां पहुचे एक बकसा ऐमीनशन चार 303 की राईफल और दुसरा सामान लाया गया 303 की राईफल से हम मे से पहले फाईर किसी ने नहीं किया हुआ था इस लिये कोई पहल न ही कर रहा था।

मैंने की निर्मल जी चोगा की राज प्रकाश जी और विजय जी थन्ना मण्डी वाले और खुद मे त्यौर हुये सब ने राईफलें लोड की और सब से पहले मैंने निशाने पर फाईर किया फिर सब ने फाईर किया किसी के 10 में से 10 और किसी के 10 में से आठ सही लगे सुबेदार जी बडे खुश हुये के आप सीखे हुये निशाना बाज है और उनके जो फौजी निशाने लगाते वह उस बोरड पर भी न लगाते और हवा में ही निशाना लगते हालात बडी तेज' से बदल रहे थे जनरल साहिब से मिले उन से बातचीत हुई बाहीर से फौजा थोड़ी वापिस आई क्यों के पलम वाली पीकट खत्म होने से वह पुरा ऐरीया दुश्मन के पास चला गया था अब अपनी गोरीला फोरस भी आ गई थी और कुछ गाडियां B.S.F. भी आ गई थी इस लिये पहाड़ियां अपनी फौज ने स्माल ले थी B.S.F. वाले आते थे उन को खण्ड चाऐ के वास्ते खरीदनी होती थी।

मैं एक दिन गेसीलदार के पास गया पुछा के B.S.F. वाले आते हैं और दो किलो खण्ड मागवते हैं वह कहने लगा उन को मेरे पास भेजा करो परमीट ले जाया करे जब मैं उन को यह बात कहता तो वह कहते कौन होता है वह साला हमे सारी रात जागना होता हैं और खण्ड के लिये उस के पास जाए उस समय वयूपार मण्डल का प्रधान मैं ही था मीटिंग बुलाई उस में यह पास किया के B.S.F. वालों को दो किलो खण्ड कीमत ले कर और उनका नाम लिख कर साईन करवा कर दी जावे और स थ ही गोरीला फौज के लिये यह पास किया के उन को जो वह छोटा सामान लें Free दिया जावे अगर किमत ले तो कम ले एक दिन वह जब मुझे मिले तो पूछने लगे के भाई कई लोग तो हम से किमत ही नहीं लेता हैं या भी बहुत कम लेता हैं बाकी स्थानों पर ऐसा नहीं है तो उनको कहा हमारे वयूपार मन्डल ने ऐसा ही फैसला किया हूआ हैं जिससे वह बहुत खुश हुए अब जो फौज जवाहर नगर के उपर वाली पहाडी पर गई उसको वहां पानी की तकलीफ थी । जब हमें उनका सन्देशा मिला तो हम सब R. S. S, कार्यकर्ता जो 70 थे ।

अपना-२चकडी के हैन्डल वाला टीन लेकर उधर चले गये नीचे पहाडी के पानी था 70 लोगों को एक लम्बी लाईन नीचे से उपर तक लगा दी और उपर इतना पानी चढ़ाया जो उनकी जरुरत से ज्यादा था। दुसरे रोज जब पाकिस्तानी बीमान आकाश पर उढ़ा रहे थे मै एक बैन्कर में छुपा था । इतने में सुचना आई के हाजी पीर पर अपनी फौज ने हमला किया है और वही से जख्मी फौजी आये हैं उनके लिये कारो खून O-Positive की जरुरत है 5 लोग बुलाये ऊ जी सभरवाल बन्सी लाल जी सोकड़ वाले तरलोक नाथ जी नौशहरेवाले पशौरी लाल गुप्ता और अशोक जी शर्मा हम सब का खून O-Positive था । फौजी गाड़ी आई और हमें ले गई जाते ही खून दिया उसके बाद वहां हमें एक कप चाए और 2 बिस्कुट खलाये गये बापसी के लिये वहां गाड़ी नहीं थी । हम पैदल ही वापिस आये पहले वहां से खून की किमत भेजी गई जो हमने वापिस कर दी फिर उन्होंने एक सरटांफिकेट भेजा हाजी पीर की पक्की पीकर छीन ली गई और उस रास्ते से अपनी कानवाई व्रास्ता उड़ी श्रीनगर गई ।

फौजी जख्मीयों के लिये गरम दूध और बिस्कुट दिये हमें देखकर बाकी संस-थाओं मे से किसी ने कच्छे, तोलिये किसी ने रुमाल बनियान किसी ने पसेट बुस्थ जिस को जो अच्छा लगा सब ने दिया जिस से फौजी नगर वासियों पर बहुत खुश हुए बहुत से पाकिस्तानी गोरीले भाग गये थे यहां से खबर मिलती उधर अपने गोरीले उतका सफाया करते जब फौज बुददल गई तो उन्होने ४ गाईड मांगे उनम श्री रघूनन्दन लाल जी मोदी

तरलोक नाथ जी गुप्ता कुलभूषन जी थन्ने वाले और जगमोहन जी शर्मा गये आगे यह और पीछे फौज आगे सुरक्षा की खातिर रास्ते में मकान जलाये जाते तो उनमें मदरासी फौजी नाराज होते रात को फौज फलनी समोट पहुची वहां एक मौलवी ईबराईम नामी व्यक्ति दुकानदार था जो मेरा ग्राहक था। और उसके मन में बड़ा सेवा भाव था उसने सारी फौज को एक समय के खाने के वास्ते चावल घी बकरे आदी पुरा राशन दिया। जब वह रोटी बनाने लगे तो गोरीलों ने गोलाबारी शुरू करदी उनसे निपटने के उपरान्त फौजी मौलवी पर नाराज हुए के तुम ने ही गोली चलवाई है उसको और उसके नौजवान पुत्र को गोली से उड़ा दिया पर वह बे-कसूर थे शक में मारे गाये शाम को ४ गाईड में ३ वापस पहुचे तो नगर में हा-हाँ कार मच गया अभी इस पर विचार किया जा रहा था तो रात 10 बजे वह भी वापस आ गये और सबने ईश्वर का मुकर किया दरहाल फौज गई तो गाईड हमारे थे B. G. फौज गई तो गाईड हम में से गये आखिर दिवाली आ गई और राजौरी नगर पर हमला हुआ १८ साल पुरे हो गये थे। इसी दिवाली वाले दीन आर्य समाल मन्दिर मैं राजोरी में फौज और राजौरी बासीयों ने शहीदों की याद में और राजौरी मे फिर पुरुअमन माहौल हो जाने की खुशी में एक मिटिन्ग में यह तह किया के अब दिवाली वाले दिन फौज और राजौरी वासी मिलकर इस दिन को मनाया करेगे और साथ ही जनरल साहिब से प्रार्थना की के दिवाली वाले दिन सभी फोरसज नगर में आकर चाए पियेगी तो उन्होंने कहा के फौज ऐसे तो किसी से चाए आदी नहीं पी सकती। परन्तु आपका उतसाह और सेवा भाव बढ़ाने के लिये आप का कहा मान लिया जावेगा।

सभी नगर वासीयों ने इसमे जानी और माली तौर पर बढ़ चढ़ कर साथ दिया पुरे दिन ८० चुल्ले चाए के वासते गर्म रहें और ८० मेज मिठाई से भरे रहे फौजी टोलियां दिन भर जय घोश लगाती हुई आती और खा पी कर जय घोश लगाती वापिस जाती इधर नगर वासी उनका भारत माता की जय हिन्द सेना जिन्दावाद के जय घोश से उनका स्वागत करते पुरा दिन इसी प्रकार गुजरा सारी फौज ने बड़े उत्साह सारे माहुल में चाहा पान की बहादुर हिन्द सेना और नगर के (आर.एस.एस.) कार्य करताओ ने यह साबित कर दिखाया के राजौरी का इतिहास जो पिछले १०० साल से यह दोहराता आया के हर १५/२० साल के बाद मकामी हिन्दू मार खाता हैं और भागता हैं। और जो वह इस समय में धन दौलत इक्ठठी करते है एक ही दिन में लुट ली जाती है पर इस बार मुस्लमान भागा मार भी खाई और माली नुक्सान भी उठाया यह ठीक है के उन मुस्लमानों में से कुछ वापिस आये जो पाकिस्तान चले गये थे। पर ज्यादा उधर ही रहे।

मै 5 अक्तूबर 1965 को जम्मू आया तो रास्ते में वह फौजी यूनिट मिली जिसने बड़ी बहादुरी और कुरबानी से हाजी पीर की चोटी जीती थी। अब वह रोती थी के सरकार ने हमारी जीत पर पानी ढाल दिया हैं। उस बड़ी महत्व की चोटी को वापिस पाकिस्तान को दे दिया है जम्मू पहुंचा तो सीटी चौक में मुझें याकूब शाह S/o अली शाह छन्नी दार वाले मिले उसने मुझसे ६०० रुपये के कपड़े अपनी शादी के वास्ते उधार लिये थे और उसका तबादला राजौरी से जम्मू हो गया था। उसने अपने परिवार के लिये पुछा मैंने कहा सब कुशल से हैं तो उसने पछा के अगर मैं उनसे मिलने जाऊ तो कोई रुकावट तो नहीं मैने कहा आप जा सकते हैं। वह राजौरी चला गया अभी वह अपने परिवार में नहीं गया था के उसका मामू मिल गया और उसे पकिस्तान ले गया उसकी पत्नी इधर रह गई पर वह और उसका परिवार पाकिस्तान मे इकठठे हो गए उसने उधर जाकर और शादी कर ली और उसके ससुर ने यह मुझें सुनाया मैंने उसे पत्र लिखा जिस के जबाब में उसने लिखा के मेरे ससुर से कहे के वह अपनी लड़की को साथ इधर ले आये उन्होंने ऐसा ही किया। पर लड़की उधर न रुकी वापिस आकर रजौरी मुलाजम हो गई फिर इधर ही रही।

साऊदी अरब मे याकूब शाह का पत्र आया के आपसे १८ वर्ष पहले मैने आप से ६०० रुपये की बजाजी उधार ली थी। जो मुझे याद है सुद तो मै नही दुगां आप अपना आकउन्ट नम्बर लिखे मैं ड्राफ्ट बनवाकर भेज दुगा मैंने उसे पत्र लिखा दिया और उसने ड्राफट मुझे जो मैंने सैन्टीकेट बैंक अमृतसर से कैश करवाया अब हालात को देखते हुए मेने इरादा पक्का कर लिया के अब मैं जम्मू में ही रिहाश रखूगा। और ऐसा ही किया १९६७ में खुद भी जम्मू आ गया यहां मुझें विजय गढ़ शाखा प्रभात मे जमां-वारी मिली पांच साल मै उधर ही रहा और १९७१ आ गया जिस मे उस शाखा से बहुत से सेवक मेरे साथ जय घोश लगाते हुंए हस्पताल पहुचे और सब ने खून दिया हमारी बहादूर सेना ने बड़ी बहादुरी से जग्ग जीती पर सकार ने जीत की हार में बदल दिया अपनी शाखा के १५-२० साथियों के हम गजनसु से आगे यहाँ हमारी फौज ने हकला किया था उसी रास्ते हम सब परिवार तक जीते गए इलाका को देखा उधर कोई तरक्की नहीं की गई थी और न ही कोई पक्का मकान था मन्दिर तोड़कर मकान बने हुए थे उनमें घास आदी रखी गई थी।

फौज से मिले और उसी शाम को वापिस आ गए उसके बाद फिर कई २०० स्वयं सेवक ३ वर्षों में साम्बा से आगे सुखूचक और वेई पार करके अमरुचक देखने गए थे दोनों गावों मे लुटमार हो चुकी थी गजनसु वाली फौज और अमरुचक वाली फौज

दोनों ही वजोरा आबाद ढीम की ओर जा रही थी की जंग बन्दी हो गाई ओर फौज का बडीया पलान अदूरा ही रह गया वहां फोजीयों ने सब कुछ साथ ही कर दिखाया समझाया अमरुचक रेलरे स्टेशन था इन दोनों नगरों को देखने से भी यही पता चला के इधर भी कोई तरक्की न हुई वैसे ही कच्चे ओर पुराने मकान मोजूद थे पोलिस स्टेशन मस्जद स्कूल तो पक्के थे बाकी सब कच्चे मकान थे यह दोनों पहले हिन्दू गांव थे ओर दोनों अमरु ओर सुखू भाईओं के नाम से जाने जाते थे बदकिस्मती से पाकिस्तान में चले गए यह शकर गढ़ तहसील में है कई दुकानो पर अब भी 1947 वाले हिन्दू नाम लिखे थे यहा एक परिवार उजड कर 1947 में लुधियाणा जाकर अबाद हुआ था ।

वह भी अपन अभाई गांव की देखने परिवार सहित आया हुआ था ओर बहादूर फोजीयों के जीत की खुशी में मिठाई के टोकरे साथ लए हुए थे । अपने मकान को देखकर उनका मन कनट्रोल में नहीं रहा ओर आग लगा दी जब फोज के अफसरों ने आग देखी तो हैरान हुए के यह आग किसने लगाई है जवान पर बहुत गुस्सा हुए जवानो ने तब लाठीयां हम सब पर बरसाई कुछ तो भाग कर बच गए ओर कुछ कों मामूली चोटे आई फिर विम्ल भजाई गई सब कायकर्ता ईक्ठठे हुए गिनती की ओर समपद लेकर प्राथंना की ओर वापिस आ गये 1973 से 1975 तक मैंने ओर राजेन्द्र ने सर्वाल चोक में सफेद जगह अगीर कर मकान बनाया ओर यहां ही बस गये 2004 में जिन वीरों ओर महापुरुषों तथा माताओं ओर बहिनों ने जहर ओर गोलियां खाई कुछ कुलहाड़ी से गर्दन कटवाई थी उन की हडियों के ढेर डाक बगला राजोरी के साथ थे उनको जलाकर राख की बोरीयां भरकर कन्खील हरिद्वार में जाकर मैं ओर मेरे साथियों ने प्रवाह की कुछ समय के बाद जिन दो वीरों ने 1965 में हमारी सारी मुमीन्ट को सफल बनवाया था ।

श्री सबरवाल जी ओर श्री परस राम जी हमारा साथ छोड़कर जनता दल में चले गये जिससे अपने नगर की उनके चले जावे से बहुत नुक्सान उठाना पड़ा पर वह भी उधर जाकर सुखी न रहे एक दिन किसी शादी में मैं राजोरी गया तो परस राम जी को मिलने गया तो उन्होंने भी खुद बातों में ऐसा मुझे कहा के मैं जन संघ को छोड़कर ओर अपने (आ.र एस. एस.) के साथियों से दूर होकर जनता दल में जाने पर घाटे में रहा हु ओर अपना प्यार ओर इज्जतमान मेल-मिलाप सब गवां दिया है । राजोरी के शहीद बीरों माताओं ओर बहिनों की याद में राजोंरी तहसील में यहां 1947 में कत्ल गाहा बनी थी ।एक बलिदान भवन बनाने का तह हुआ जिसको श्री बन्सी लाल जी साकेलवाले नीरमल कुमार जी चुगहा सभरवाल जी ने ओर जितना मैं भी समय दे सका देकर

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी ...)
क्रमांक ... 40 K ...

बनवाया गया जिस में 25 साल तक दीवाली वाले दिन शहीदी दिन मनाया जाता रहा और राजौरी वासियों ने 25 साल तक मातमी दीवाली मनाई कोई दीपक रोशन न किया फिर उसके बाद बाकी काम शुरु हो गये ।

पर बलिदान दिवस अब भी फौज के सहयोग से मनाया जा रहा है मै तो अब भी दिवाली और वैसाखी के दिनों त्यौहार खुशी के रुप में नहीं मना रहा हु सिफ लोहड़ी मनाता हु विसाखी वाले रोज अन्त मैं मेरे 28 साथी स्वय सेवक सुध्याल में पठानों के हाथों मारे गये थे फिर मैं इस जीवन में विसाखी कैसे मना सकता हुं यह शब्द लिखते हुंए मेरी आंखों मे आंसु भर रहे हैं बलिदान भवन का कुछ काम जो बाकी रह गया था साबक संग चालक (आर. एस. एस) राजौरी अब श्री कृष्ण कुमार गुप्ता श्रीमति विमला देवी जी मोदी बनवा रहे हैं जिसमें सभी राजौरी वासियों ने जी खोलकर दान दिया हैं वन्दा वीर पैरागी जो राजौरी की पवित्र भूमी में जन्मे थे उनकी यादगार भी श्री मोहन लाल जी मोन्गाल ने बनवाई है मेरे भाई सीता राम जी जो 2004 मे मुझ से बिछड़ कर दीन मुहम्द आदी के परिवार में दहरी लल्योट B. G. में रह रहे थे और बरसात के मौसम में हैजा के कारण उनकी मौत हो गई थी और उनको वहां ही दफना दिया गया था ।

0 साल बाद मैं वहां उनकी अस्थियों को निकालने के लिए चाचा जीयालाल जी और ज्योति प्रकाश जी के साथ गय तो वहां श्री दस्ति ममद और ममद हुसैन जी ने मेरी मदद की उनकी कबर खोली और उनकी जो अस्थियां निकालनी थी निकाली कबर को बन्द करवाया अस्थियों को गम्भीर के जगल में जलाकर और उनकी हरिद्वार में जाकर परवाह दिया राजौरी का दीवारा आवाद होने का कारण शहीदों की कुरवानी से ही हो सका और भी कई नगर बर्वाद हुंए थे पर वह आवाद न हुए इस वास्ते शहीदों की याद हमको रहते संसार तक मनाते रहना चाहिए इन शब्दों से मै इस लेख को समाप्त करता हुं ।

यह सब इतिहास मैंने १६-३-९३ का लिखकर समाप्त किया ।

पिशोरी लाल गुप्ता

सरवाल चौक, जम्मू